18. व्यवसाय अध्ययन (कोड संख्या 054)

मूलाधार

प्रथम दस वर्षों की विद्यालयी शिक्षा के उपरांत +2 उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर पर व्यवसाय अध्ययन विषय का औपचारिक वाणिज्यिक शिक्षा के रूप में समावेश किया गया है। अत: यह आवश्यक हो जाता है कि इस विषय में विद्यार्थियों को शिक्षा इस प्रकार दी जाए कि उनमें व्यवसाय (उद्योग, व्यापार तथा व्यापार के सहायक) तथा समाज के सिद्धान्तों एवं प्रथाओं को समझने का ज्ञान उत्पन्न हो सके।

व्यवसाय एक गतिशील प्रक्रिया है जो इस बदलते हुए वैश्विक पर्यावरण में तकनीक, प्राकृतिक संसाधनों और मानवीय प्रयासों को एक साथ ले आती है। व्यवसाय की प्रक्रियाओं का प्रबन्ध तथा पर्यावरण के साथ उसकी अन्त:क्रिया करने के लिए उस ढाँचे का अध्ययन आवश्यक है, जिसमें फर्में अपने व्यवसाय का संचालन करती हैं। वैश्वीकरण ने उन तरीकों को बदल दिया है, जिनके द्वारा फर्में अपना व्यवसाय चला रही थीं।

सूचना तकनीक अधिक से अधिक संगठनों की व्यावसायिक क्रियाओं का भाग बन रही है। कम्प्यूटरीकृत विधियाँ बहुत तीव्र गति से अन्य विधियों का स्थान ले रही हैं। ई-व्यवसाय तथा इससे सम्बन्धित अवधारणाएँ बहुत तेजी से अपना स्थान बना रही हैं अत: पाठ्यक्रम में इनको महत्वपूर्ण स्थान दिया जाना अति आवश्यक है।

व्यवसाय अध्ययन का यह पाठ्यक्रम व्यवसाय को प्रभावित करने वाले इन परिवर्तनों का प्रत्युत्तर देने, विश्लेषण करने, प्रबन्ध करने एवं मूल्यांकन करने के लिए विद्यार्थियों को तैयार करेगा।

इससे व्यावसायिक पर्यावरण को एक भिन्न दृष्टिकोण से देखने एवं उनकी अन्योन्यक्रिया करने का अवसर मिलेगा। यह इस तथ्य को स्वीकार करता है कि व्यवसाय सामाजिक, राजनैतिक, कानूनी एवं आर्थिक शक्तियों को प्रभावित करता है और उनसे प्रभावित भी होता है। इसके द्वारा विद्यार्थी यह समझ जाते हैं कि व्यवसाय समाज का एक अभिन्न अंग है तथा सामाजिक एवं नैतिक पहलुओं को समझने सम्बन्धी उनकी विचारधारा में विकास भी होता है।

अत: व्यावसायिक जगत का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करने के लिए, व्यवसाय अध्ययन का यह पाठ्यक्रम उपयोगी सिद्ध होगा तथा विद्यार्थियों को अध्ययन-क्षेत्र और कार्य-विकल्पों से अवगत कराकर विद्यालय और कार्य के बीच की दूरी को कम करेगा।

उद्देश्य

- विद्यार्थियों में व्यवसाय की प्रक्रियाओं और उसके पर्यावरण की समझ विकसित करना,
- विद्यार्थियों को व्यवसाय की गतिशील प्रकृति एवं इसके अन्त:निर्भर पहलुओं से परिचित कराना,
- व्यवसाय, व्यापार एवं उद्योग के सिद्धान्तों एवं प्रथाओं में रुचि विकसित करना,
- विद्यार्थियों को एक व्यावसायिक फर्म को संगठित करने, उसका प्रबन्ध करने तथा उसकी क्रियाओं के संचालन सम्बन्धी सैद्धान्तिक आधारों से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों को व्यावसायिक क्रियाओं के आर्थिक एवं सामाजिक महत्व तथा उससे उत्पन्न सामाजिक लागत व लाभों का निरूपण करने में सहायता करना।
- व्यवसाय के संसाधनों एवं संचालन क्रियाओं की प्रबन्ध सम्बन्धी प्रथाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
- विद्यार्थियों को एक अधिक प्रभावपूर्ण एवं उनरदायी उपभोक्ता, नियोक्ता, कर्मचारी एवं नागरिक के रूप में कार्य करने के लिए तैयार करना।

- विद्यार्थियों को विद्यालय से बाहरी दुनिया के कार्यक्षेत्र से जिसमें स्व-रोजगार भी सम्मिलित है परिचित कराना।
- विद्यार्थियों में व्यावसायिक विचारधारा विकसित करना तथा अपने आपको सुस्पष्ट एवं यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने का कौशल विकसित करना।

व्यवसाय अध्ययन

कक्षा-XI

प्रश्न-पत्र : एक **समय : 3 घंटे** **अंक : 100**

इकाईयाँ	परियड	अंक
भाग-क : व्यवसाय के आधार		
1. व्यवसाय की प्रकृति एवं उद्देश्य	20	08
2. व्यावसायिक संगठन के स्वरूप	24	12
3. सार्वजनिक, निजी, एवं भूमंडलीय उपक्रम	20	10
4. व्यावसायिक सेवाएँ	18	08
5. व्यवसाय की उभरती पद्धतियाँ	10	06
6. व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता	12	06
योग	**104**	**50**
भाग-ख : संगठन, वित्त एवं व्यापार		
7. कंपनी की स्थापना	16	07
8. व्यावसायिक वित्त के स्रोत	20	10
9. लघु व्यवसाय	14	07
10. आंतरिक व्यापार	20	8
11. अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय	12	8
12. परियोजना कार्य	22	10
योग	**104**	**50**
कुल योग	**208**	**100**

भाग-क : व्यवसाय के आधार **पीरियड-104**

इकाई-1 : व्यवसाय की प्रकृति एवं उद्देश्य **(पीरियड-20)**

- व्यवसाय की अवधारणा व उसकी विशेषताएँ।
- व्यवसाय, पेशा तथा रोजगार-विशिष्ट लक्षण।
- व्यवसाय के उद्देश्य-आर्थिक एवं सामाजिक, लाभ की व्यवसाय में भूमिका।

- व्यावसायिक क्रियाओं का वर्गीकरण-उद्योग एवं वाणिज्य।
- उद्योग-प्रकार : प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक।
- वाणिज्यः व्यापार और व्यापार के सहायक।
- व्यावसायिक जोखिम-प्रकृति और कारण।

इकाई-2 : व्यावसायिक संगठन के स्वरूप **(पीरियड-24)**

- एकल स्वामित्वः अर्थ, विशेषताएँ, गुण व सीमाएँ।
- साझेदारीः अर्थ, प्रकार, पंजीकरण, गुण, सीमाएँ, साझेदारों के प्रकार
- संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय : विशेषताएं, गुण, सीमायें
- सहकारी समितियाँः प्रकार, गुण व सीमाएँ।
- कम्पनीः निजी कम्पनी, सार्वजनिक कम्पनीः विशेषताएँ, गुण व सीमाएँ।
- व्यावसायिक संगठन के स्वरूप का चुनाव
- व्यवसाय प्रारम्भ करना-आधारभूत कारक

इकाई-3 : सार्वजनिक एवं निजी, भूमंडलीय उपक्रम (उद्यम) **(पीरियड-20)**

- सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र
- सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के संगठनों के स्वरूपः विशेषताएँ, गुण और निम्नलिखित की सीमाएंः
  - विभागीय उपक्रम
  - वैद्यानिक उपक्रम
  - सरकारी कम्पनी
- सार्वजनिक क्षेत्र की बदलती भूमिका
- भूमंडलीय उपक्रमः लक्षण, संयुक्त उपक्रम : विशेषताएँ, अर्थ व लाभ।

इकाई-4 : व्यावसायिक सेवाएँ **(पीरियड-18)**

- व्यावसायिक सेवाओं की प्रकृति एवं प्रकार-बैंकिंग, बीमा, परिवहन, भंडारण, संचारण या सम्प्रेषण
- बैंकिंग बैंकों के प्रकार, वाणिज्य बैंकों के कार्य, ई-बैंकिंग।
- बीमाः सिद्धांत, प्रकार, जीवन, अग्नि व सामुद्रिक
- भंडारणः प्रकार व कार्य
- डाक व टेलिकॉम (दूर संचार) सेवाएँ

इकाई-5 : व्यवसाय की उभरती पद्धतियाँ **(पीरियड-10)**

- ई-व्यवसाय-कार्य क्षेत्र एवं लाभ, सफल ई-व्यवसाय कार्यान्वयन के लिए संसाधनों की आवश्यकता, ऑन-लाईन लेन-देन, भुगतान तंत्र, व्यावसायिक लेन-देनों की सुनिश्चिता और सुरक्षा

- बाह्य स्त्रोतीकरण: अवधारणा, आवश्यकता व कार्यक्षेत्र।

इकाई-6 : व्यवसाय का सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकताएँ (पीरियड-12)

- सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा।
- सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए प्रकरण।
- स्वामियों, विनियोगकर्ताओं, कर्मचारियों, उपभोक्ताओं, सरकार तथा समाज के प्रति उत्तरदायित्व।
- पर्यावरण सम्बन्धी संरक्षण तथा व्यवसाय।
- व्यावसायिक नैतिकता: अवधारणा एवं तत्व

भाग-ख : संगठन एवं व्यापार (पीरियड-104)

इकाई-7: कम्पनी की स्थापना (पीरियड-16)

कम्पनी निर्माण में कदम:

- प्रवर्तन
- समामेलन, तथा
- व्यापार का प्रारम्भ।

इकाई-8 : व्यावसायिक वित्त के स्रोत (पीरियड-20)

- व्यावसायिक वित्त की प्रकृति एवं महत्व
- स्वामित्व कोष एवं ऋण पूँजी कोष
- वित्त वृद्धि के साधन:
    - समता एवं पूर्वाधिकार अंश।
    - ऋण पत्र एवं बौंड
    - वित्तीय संस्थाओं से ऋण
    - संचित प्रतिधारित लाभ
    - भूमण्डलीय जमा पावती (रसीद), अमेरिकन जमा पावती
    - वाणिज्यिक बैंकों से ऋण
    - सार्वजनिक निक्षेप (जमा)
    - व्यापारिक साख

इकाई-9 : लघु व्यवसाय (पीरियड-14)

- लघु स्तरीय उद्योग-छोटी औद्योगिक इकाईयाँ, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग
- ग्रामीण भारत में लघु व्यवसाय की भूमिका
- भारत में लघु व्यवसाय की समस्याएँ

- ग्रामीण, पिछड़े तथा पर्वतीय क्षेत्रों के उद्योगों के लिए सरकार की सहायता तथा विशेष योग्यताएँ।

इकाई-10 : आन्तरिक व्यापार **(पीरियड-20)**

- आंतरिक व्यापार: प्रकार-थोक व्यापार एवं फुटकर व्यापार।
- थोक व फुटकर विक्रेताओं की सेवाएँ।
- फुटकर थोक व्यापार के प्रकार: भ्रमणशील फुटकर विक्रेता व स्थायी दुकानदार
- विभागीय भंडार, सुपर बाजार, मॉल्स/शृंखला भण्डार, डाक आदेश व्यवसाय, उपभोक्ता सहकारी भंडार।
- स्वचालित विक्रय मशीन।
- चैंबर आफॅ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की आंतरिक व्यापार के संवर्मान में भूमिका।

इकाई-11 : अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय **(पीरियड-16)**

- अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय की प्रकृति एवं महत्व।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय में प्रवेश के तरीके।
- आयात-निर्यात, कार्य विधियाँ एवं प्रयुक्त होने वाले प्रलेख, बाह्य व्यापार संवर्धन। संगठनात्मक सहायता एवं अभिप्रेरक, निर्यात-प्रक्रिया क्षेत्र। विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) की प्रकृति एवं महत्व, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार संस्थाएँ एवं समझौते : डब्ल्यूटीओ (WTO) यूएनसीटीएडी (UNCTAD), विश्व बैंक, आई एम एफ (IMF)

इकाई-12 : परियोजना कार्य **(पीरियड 22)**

सुझावात्मक/व्याख्यात्मक परियोजनाएँ : निम्न में से कोई एक

(i) कुछ स्थानीय व्यावसायिक इकाई(यों) से उन विभिन्न उद्देश्यों का पता लगाना, जिनके लिए वे व्यवसाय कर रहे हैं।

(ii) चालू व्यावसायिक इकाइयों की तथा व्यावसायिक इकाइयों की स्थापना सम्बन्धी समस्याएँ।

(iii) प्रश्नावलियों के माध्यम से चालू व्यवसायों में व्यावसायिक नैतिकता सम्बन्धी पूछताछ।

(iv) स्थानीय बैंक शाखा में बैंकिंग सेवाओं का गुणवत्ता सम्बन्धी सर्वेक्षण।

(v) डाकघर व कोरियर सेवाओं का अध्ययन

(vi) एजेन्सी सेवाओं, विज्ञापनों, पैकेजिंग, बचत योजनाओं में विनियोग आदि की उपलब्धता एवं उनका उपयोग।

(vii) विभिन्न बैंकों द्वारा जारी किए गए क्रेडिट कार्ड की लोकप्रियता का सर्वेक्षण।

(viii) व्यवसाय की प्रकृति एवं कार्यशैली पर टिप्पणी करते हुए एक एकल व्यापारी साझेदारी व्यवसाय की रूपरेखा का अध्ययन।

(ix) संयुक्त हिन्दू परिवार व्यवसाय का अध्ययन।

(x) एक सहकारी संगठन की कार्यप्रणाली का अध्ययन:

1. बैकिंग
2. थ्रिफ्ट एण्ड क्रेडिट सीमितियां
3. उपभोक्ता सहकारी भण्डार

4. डेरी कोओपरेटिव

5. हाउसिंग कोओपरेटिव

6. मार्केटिंग कोओपरेटिव

(xi) वित्त के स्रोतों के सम्बन्ध में छोटी व्यावसायिक इकाइयों का अध्ययन।

(xii) माल के प्रकार, पूँजी विनियोग विक्रय आवर्त के संदर्भ में छोटे व्यापारियों (जैसे विशेष स्थान के फेरीवाले) की माल की प्रकृति, पूँजी निवेश तथा विक्रय का अध्ययन।

(xiii) अपने समीप के एक साप्ताहिक बाजार का अध्ययन।

(xiv) फ्रेन्चाइज़ फुटकर स्टोर का अध्ययन।

(xv) किसी भी वस्तु के आयात/निर्यात की विधि का अध्ययन।

(xvi) व्यवसाय में स्त्री-उद्यमियों की समस्याएँ।

(xvii) एक व्यावसायिक उद्यम द्वारा कूड़े-कचरे के निपटान का सर्वेक्षण।

(xviii) पटरी व्यापार (बाजार) का अध्ययन।

(xix) सार्वजनिक क्षेत्र की बदलती भूमिका या पाठ्यक्रम का कोई अन्य विषय लेकर कुछ लेख एकत्रित कीजिए और उनसे एक स्क्रैप बुक तैयार कीजिए।

परियोजना रिपोर्ट के विभिन्न भागों में अंकों का विभाजन उपयुक्त रूप से किया जाना चाहिए:

1. उद्देश्य, 2. विधि, 3. निष्कर्ष, निर्णय एवं सुझाव।

कक्षा-XII

प्रश्न-पत्र एक **समय : 3 घंटे** **अंक : 100**

इकाई अनुसार अंक भार	**पीरियड**	**अंक**
इकाई		
भाग (क) : प्रबन्ध के सिद्धान्त और कार्य		
1. प्रबन्ध की प्रकृति एवं महत्व	14	7
2. प्रबन्ध के सिद्धान्त	14	7
3. प्रबंधन एवं व्यावसायिक पर्यावरण	10	5
4. नियोजन	14	7
5. संगठन	16	10
6. नियुक्तिकरण	16	8
7. निर्देशन	22	10
8. नियन्त्रण	14	06
	120	**60**

भाग (ख) : व्यवसाय वित्त एवं विपणन		
9. वित्तीय प्रबन्धन	22	12
10. वित्तीय बाजार	20	08
11. विपणन प्रबन्धन	30	14
12. उपभोक्ता संरक्षण	16	06
योग	**88**	**40**
कुल योग	**208**	**100**

भाग (क) : प्रबन्ध के सिद्धान्त और कार्य

इकाई-1 : प्रबन्ध की प्रकृति एवं महत्व **पीरियड-14**

- प्रबन्ध-अवधारणा, उद्येश्य, महत्व
- प्रबन्ध-विज्ञान, कला एवं पेशे के रूप में
- प्रबन्ध के स्तर
- प्रबन्ध के कार्य-नियोजन, संगठन, नियुक्तिकरण, निर्देशन एवं नियन्त्रण।
- समन्वय-विशेषताएँ एवं महत्व

इकाई-2 : प्रबन्ध के सिद्धान्त **(पीरियड-14)**

- प्रबन्ध के सिद्धान्त-अवधारणा, प्रकृति एवं महत्व
- फेयोल के प्रबन्ध के सिद्धान्त
- टेलर का वैज्ञानिक प्रबन्ध-सिद्धान्त एवं तकनीकें

इकाई-3 : प्रबंधन एवं व्यावसायिक पर्यावरण **(पीरियड-10)**

- व्यावसायिक पर्यावरण-महत्व
- व्यावसायिक पर्यावरण के आयाम-आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, राजनैतिक एवं वैधानिक
- भारत में आर्थिक पर्यावरण, व्यवसाय एवं उद्योग पर सरकारी नीति में विशेषकर उदारीकरण, निजीकरण एवं
- वैश्वीकरण सम्बन्धी नीतियों को अपनाने के संदर्भ में परिवर्तन का प्रभाव।

इकाई-4 : नियोजन **(पीरियड-14)**

- अवधारणा विशेषताएँ, महत्व एवं सीमाएँ
- नियोजन प्रक्रिया
- योजनाओं के प्रकार-उद्देश्य, व्यूह-रचना, नीति, कार्यविधि पद्धति, नियम, बजट, कार्यक्रम।

इकाई-5 : संगठन **(पीरियड-16)**

- अवधारणा एवं महत्व

- संगठन प्रक्रिया के चरण
- संगठन ढाँचा: कार्यात्मक ढाँचा एवं प्रभागीय ढाँचा
- औपचारिक एवं अनौपचारिक संगठन।
- अधिकार अंतरण-अवधारणा, तत्व एवं महत्व
- विकेन्द्रीयकरण-अवधारणा एवं महत्व

इकाई-6 : नियुक्तिकरण **(पीरियड-16)**

- नियुक्तिकरण की अवधारणा एवं महत्व
- नियुक्तिकरण-मानव संसाधन प्रबन्ध के एक भाग के रूप में
- नियुक्तिकरण प्रक्रिया:
- भर्ती-अर्थ एवं स्रोत
- चयन-प्रक्रिया-अर्थ
- प्रशिक्षण एवं विकास-अवधारणा एवं महत्व; प्रशिक्षण के प्रकार।

इकाई-7 : निदेशन **(पीरियड-22)**

- अवधारणा एवं महत्व
- निदेशन के तत्व
- पर्यवेक्षण-अवधारणा एवं भूमिका
- अभिप्रेरण-अवधारणा एवं महत्व, मास्लो की आवश्यकताओं की सोपानिक श्रृंखला।
- वित्तीय-एवं गैर-वित्तीय अभिप्रेरक
- नेतृत्व-अवधारणा, महत्व, एक अच्छे नेता के गुण।
- सम्प्रेषण अवधारणा एवं महत्व, औपचारिक एवं अनौपचारिक सम्प्रेषण, प्रभावपूर्ण सम्प्रेषण में अवरोधक या व्यवधान

इकाई-8 : नियन्त्रण **(पीरियड-14)**

- अवधारणा एवं महत्व
- नियोजन एवं नियन्त्रण में सम्बन्ध
- नियन्त्रण की प्रक्रिया में चरण
- नियन्त्रण की तकनीकें : बजटीय नियन्त्रण।

भाग (ख) : व्यवसाय, वित्त एवं विपणन **(पीरियड-22)**

इकाई-9 : वित्तीय प्रबन्ध

- वित्तीय प्रबन्ध की अवधारणा, भूमिका एवं उद्देश्य

- वित्तीय निर्णय-प्रभावित करने वाले घटक
- वित्तीय नियोजन-अवधारणा एवं महत्व
- पूँजी संरचना अवधारणा एवं घटक
- स्थायी एवं कार्यशील पूँजी-अवधारणा एवं इनकी आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाले घटक।

इकाई 10 : वित्तीय बाज़ार **(पीरियड-20)**

- वित्तीय बाजार की अवधारणा : मुद्रा बाजार एवं इसके प्रलेख।
- पूँजी बाजार एवं इसके प्रकार-प्राथमिक एवं द्वितीयक बाजार
- **स्टॉक एक्सचेंज** : अवधारणा, कार्य एवं राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज आफॅ इंडिया एवं ओवर द काउन्टर एक्सचेंज ऑफ इंडिया, व्यापारिक क्रियाविधि।
- भारतीय प्रतिभूति तथा विनिमय बोर्ड (सेबी): उद्देश्य एवं कार्य।

इकाई-11 : विपणन प्रबन्ध **(पीरियड-30)**

- विपणन : अर्थ, कार्य, भूमिका, विपणन एवं विक्रय, विपणन प्रबन्ध की मान्यता या धारणा, विपणन मिश्र-तत्व;
- उत्पाद : प्रकृति, वर्गीकरण मार्का (ब्रान्डिंग), लेबलिंग एवं पैकेजिंग।
- मूल्य : मूल्य के लक्षणों को निर्धारित करने वाले घटक।
- भौतिक वितरण: तत्व, वितरण शृंखला-प्रकार, कार्य, वितरण शृंखला का चयन।
- प्रवर्तन: प्रवर्तन मिश्र के तत्व, विज्ञापन: भूमिका, सीमाएँ, उद्देश्य, विज्ञापन के विरोध में तर्क, व्यक्तिगत विक्रय -अवधारणा, महत्व। विक्रय प्रवर्तन-लाभ, सीमाएँ, विधियाँ, प्रचार-अवधारणा एवं भूमिका।

इकाई।-12 : उपभोक्ता संरक्षण **(पीरियड-10)**

- उपभोक्ता संरक्षण का महत्व
- उपभोक्ता अधिकार
- उपभोक्ता के दायित्व
- उपभोक्ता संरक्षण की विधियाँ एवं साधन-उपभोक्ता जागरूकता एवं उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के विशेष संदर्भ में कानूनी परिषदें।
- उपभोक्ता संगठनों तथा गैर सरकारी संगठनों की भूमिका।

संस्तुत पाठ्य पुस्तकें

1. व्यावसायिक अध्ययन-I, कक्षा XI-एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित
2. व्यावसायिक अध्ययन-II, कक्षा XII-एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित

19. लेखाशास्त्र (कोड संख्या 055)

मूलाधार

प्रथम दस वर्षों की विद्यालयी शिक्षा के उपरांत +2 के उच्चतर माध्यमिक शिक्षा स्तर पर औपचारिक वाणिज्य शिक्षा के रूप में लेखाशास्त्र विषय को समाविष्ट किया गया। तीव्र गति से परिवर्तित आर्थिक परिदृश्य तथा व्यावसायिक पर्यावरण के निरंतर परिवर्तित प्रवाह में प्रारम्भिक व्यावसायिक शिक्षा और व्यवसाय की भाषा तथा वित्तीय सूचना के स्रोत के रूप में लेखाशास्त्र ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अपना पृथक् स्थान बना लिया है। इसका पाठ्यक्रम तथा विषय-वस्तु विद्यार्थियों को आधारभूत लेखाकंन सिद्धान्तों तथा कार्य-प्रणाली का ठोस आधार प्रदान करते हैं तथा उन्हें लेखांकन मानकों के विकास व कम्प्यूटर के उपयोग को ध्यान में रखते हुए लेखांकन सूचनाओं के प्रस्तुतीकरण तथा विश्लेषण की जानकारी भी देते हैं। इस पृष्ठभूमि के विपरीत, लेखाशास्त्र का पाठ्यक्रम आधारभूत सूझबूझ के विकास, लेखांकन सूचना की प्रकृति, उद्देश्य एवं व्यवसाय संचालन में इसके उपयोग की समझ विकसित करने पर बल देता है। इससे विद्यार्थियों को तर्कपूर्ण विवेचन, सतर्क विश्लेषण तथा विवेकपूर्ण निष्कर्ष निकालने की योग्यता के विकास में सहायता मिलती है। एक सूचना तंत्र के रूप में लेखांकन वित्तीय सूचनाएँ प्रदान करने में सहायता करती है। कक्षा XI के स्तर पर बुनियादी संकल्पनाओं व लेखांकन प्रक्रिया में एकाकी व्यापार के खातों को तैयार करने पर बल दिया जाता है। आज के युग में (कम्प्यूटर) लेखांकन शिक्षा का दिन-प्रतिदिन चलन बढ़ता जा रहा है, क्योंकि व्यावसायिक जगत्त में इसकी जानकारी अति आवश्यक है। इसी को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों के लिए कम्प्यूटर का आधारभूत ज्ञान प्राप्त करना एवं इसका उपयोग करना कक्षा XI में अनिवार्य बना दिया गया है।

कक्षा XII में अलाभकारी संगठनों, साझेदारी फर्मों तथा कम्पनियों के लेखांकन का अध्ययन अनिवार्य बनाया गया है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों को कम्प्यूटराइज़्ड लेखांकन व वित्तीय विवरणों के विश्लेषण का अध्ययन, ऐच्छिक रूप से पढ़ने का सुअवसर भी प्राप्त होगा।

उद्देश्य

- विद्यार्थियों को एक सूचना तंत्र के रूप में लेखाकंन से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों को लेखांकन तथा लेखांकन मानकों की आधारभूत संकल्पनाओं की जानकारी देना,
- व्यावसायिक लेनदेनों के लेखांकन प्रक्रिया में लेखा समीकरण के उपयोग का कौशल विकसित करना,
- व्यावसायिक लेनदेनों के अभिलेखन तथा वित्तीय विवरणों को तैयार करने की समझ विकसित करना,
- साझेदारी फर्मों के पुनर्गठन सम्बन्धी लेखांकन से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- विद्यार्थियों को वित्तीय विवरणों को समझने तथा उनके विश्लेषण से अवगत कराना तथा
- विद्यार्थियों को कंप्यूटराइज़्ड लेखांकन पद्धति के मूल तत्वों से अवगत कराना।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

कक्षा XI

प्रश्न-पत्र 1 **समय : 3 घंटे** **अंक : 100**

इकाइयाँ	पीरियड	अंक
भाग (क) : वित्तीय लेखांकन-I		
1. लेखांकन एक परिचय	14	7
2. लेखांकन के सैद्धान्तिक आधार	14	7
3. व्यावसायिक लेनदेनों का अभिलेखन	26	16
4. तलपट एवं अशुद्धियों का शोधन	22	08
5. ह्रास, प्रावधान और संचय	22	12
6. विनिमय विपत्र लेनदेनों का लेखांकन	22	10
	120	**60**
भाग ख : वित्तीय लेखांकन-II		
7. वित्तीय विवरण	35	22
8. अपूर्ण अभिलेखों के खाते	15	8
9. लेखांकन में कम्प्यूटर	18	6
10. लेखांकन तथा डाटाबेस तंत्र	18	4
कुल	**86**	**40**

भाग (क) : वित्तीय लेखांकन-I **120 पीरियड**

इकाई-1 : लेखांकन-एक परिचय **(पीरियड 14)**

- लेखांकन-अर्थ, उद्देश्य, लेखांकन-सूचना के स्रोत के रूप में, लेखांकन सूचना के आंतरिक तथा बाह्य उपयोगकर्त्ता तथा उनकी आवश्यकताएँ।
- लेखांकन सूचनाओं की गुणात्मक विशेषताएँ-विश्वसनीयता, प्रासंगिकता, बोधगम्यता तथा तुलनात्मकता
- लेखांकन के आधारभूत परिभाषिक शब्द-सम्पत्ति, दायित्व, पूँजी, व्यय, आय, दीर्घकालीन व्यय, आगम, देनदार, लेनदार, माल, लागत, रहतिया, स्टॉक, क्रय, विक्रय, लाभ, हानि, अभिवृद्धि प्रमाणक, बमा, लेनदेन, आहरण।

इकाई-2 : लेखांकन के सैद्धांतिक आधार **(पीरियड 14)**

- लेखांकन के सिद्धान्त-अर्थ एवं प्रकृति
- लेखांकन संकल्पनाएँ-व्यावसायिक इकाई, मुद्रा मापन, सतत व्यापार, लेखांकन अवधि, लागत, द्वि-पक्षीय, आगम मान्यता, आगम व्यय मिलान, उपचय (Accrual), पूर्ण प्रस्तुतीकरण, समनुरूपता, रूढ़िवादिता, वस्तुनिष्ठता।

- लेखांकन मानक-संकल्पना।
- लेखांकन की प्रक्रिया-व्यावसायिक लेनदेनों के अभिलेखन से तलपट तैयार करने तक लेखांकन के आधार-रोकड़ आधार, उपार्जन आधार

इकाई-3 : व्यावसायिक लेनदेनों का अभिलेखन **(पीरियड 26)**

- प्रमाणक तथा लेनदेन: लेनदेनों का उद्गम, स्रोत प्रलेख तथा प्रमाणक, लेखांकन प्रमाणक तैयार करना, लेखांकन समीकरण, लेखांकन समीकरण में प्रयुक्त लेनदेनों का अर्थ तथा विश्लेषण, नाम तथा जमा (डेबिट व क्रेडिट) के नियम, लेनदेनों का अभिलेखन, प्रारम्भिक प्रविष्टि की पुस्तकें, रोजनामचा विशिष्ट उद्देश्य वाली पुस्तकें :

  (i) रोकड़ बही-एक स्तम्भीय रोकड़बही, द्वि-स्तम्भीय या बैंक खाने वाली रोकड़बही तथा खुदरा रोकड़बही।

  (ii) क्रय बही, विक्रय बही, क्रय वापसी बही, विक्रय वापसी बही।
- खाताबही-अर्थ, उपयोग, प्रारूप, रोजनामचा तथा सहायक पुस्तकों से खाताबही में खतौनी, खातों का संतुलन।
- बैंक समाधान विवरण-अर्थ, आवश्यकता तथा बैंक समाधान विवरण तैयार करना, संशोधित रोकड़बही का संतुलन।

इकाई-4 : तलपट तथा अशुद्धियों का शोधन **(पीरियड 22)**

तलपट का अर्थ, उद्देश्य तथा तलपट तैयार करना।

अशुद्धियाँ: अशुद्धियों के प्रकार, लोप अशुद्धियाँ, लेख अशुद्धियाँ, सैद्धान्तिक अशुद्धियाँ तथा क्षतिपूरक अशुद्धियाँ। तलपट को प्रभावित करने वाली अशुद्धियाँ, तलपट को प्रभावित न करने वाली अशुद्धियाँ।

अशुद्धियों को ज्ञात करना तथा एक-पक्षीय तथा द्वि-पक्षीय अशुद्धियों का संशोधन, उचंती खाते का उपयोग।

इकाई-5 : ह्रास, प्रावधान और संचय **(पीरियड 22)**

- ह्रास: अर्थ तथा ह्रास लगाने की आवश्यकता, ह्रास की राशि को प्रभावित करने वाले घटक, ह्रास की राशि की गणना करने की विधियाँ, सरल रेखा विधि, क्रमागत ह्रास विधि (विधि में परिवर्तन को छोड़कर) ह्रास अभिलेखन की पद्धतियाँ, परिसम्पत्ति खाते पर ह्रास का लगाया जाना, ह्रास/संचित ह्रास के लिए प्रावधान, खाता बनाना, सम्पत्तियों के निपटान का व्यवहार
- प्रावधान तथा संचय: अर्थ, महत्व, प्रावधान तथा संचय में अन्तर, संचय के प्रकार : आगम संचय, पूँजीगत संचय, सामान्य संचय, विशिष्ट संचय तथा गुप्त संचय।

इकाई-6 : विनिमय विपत्र के लेनदेनों का लेखांकन **(पीरियड 22)**

- विनिमय-विपत्र तथा प्रतिज्ञा पत्र-परिभाषा, लक्षण, पक्ष, नमूना तथा अन्तर्भेद।
- महत्वपूर्ण मदें : विनिमय विपत्र की अवधि, सहायतार्थ विनिमय-विपत्र, छूट के दिन, परिपक्वता तिथि।
- दर्शनीय विनिमय विपत्र, परक्रमण, बेचान, विनिमय-विपत्र को बट्टे पर भुनाना, विपत्र को तिरस्कृत, वापसी तथा नवीनीकरण करना।
- व्यापारिक तथा सहायतार्थ विनिमय-विपत्रों का लेखांकन व्यवहार
- सहायतार्थ बिल : अवधारणा तथा उनका लेखांकन व्यवहार

भाग-ख : वित्तीय लेखांकन II **(104 पीरियड)**

इकाई-7 : वित्तीय विवरण **(पीरियड 35)**

- वित्तीय विवरण-अर्थ तथा उपयोगकर्त्ता।
- पूँजीगत व्यय, आगम व्यय तथा आस्थगित आगम व्यय
- व्यापार तथा लाभ एवं हानि खाता : सकल लाभ, प्रचालन लाभ तथा शुद्धलाभ।
- तुलनपत्र-आवश्यकता, परिसम्पत्तियों तथा दायित्वों का समूहीकरण एवं क्रमबद्धीकरण, वित्तीय विवरणों का शीर्ष एवं क्षैतिज प्रस्तुतीकरण।
- एकाकी व्यापार का व्यापार खाता, लाभ तथा हानि खाता एवं तुलनपत्र तैयार करना।
- वित्तीय विवरण तैयार करते समय समायोजन-अन्तिम स्टौक, अदत्त बकाया व्यय, पूर्वदत्त व्यय, उपार्जित आय, अग्रिम प्राप्त आय, ह्रास तथा डूबत ऋण, संदिग्ध ऋणों के लिए प्रावधान, देनदारों पर बट्टे का प्रावधान, प्रंबधक कमीशन।

इकाई-8 : अपूर्ण अभिलेखों के खाते **(पीरियड 15)**

अपूर्ण अभिलेखों का अर्थ, उपयोग तथा सीमायें। अवस्था विवरण विधि से लाभ/हानि की गणना करना उनका परिवर्तन (Conversion)।

इकाई-9 : लेखांकन में कम्प्यूटर **(पीरियड 18)**

- कम्प्यूटर तथा लेखांकन सूचना प्रणाली का परिचय।
- लेखांकन में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग।
- लेखांकन प्रक्रिया का स्वचलन, लेखांकन प्रतिवेदन का प्रारूप, प्रबंधन सूचना प्रणाली, (एमआईएस) रिपोर्टिंग, अन्य सूचना पद्धतियों से डाटा का आदान-प्रदान।
- मानवीय व कम्प्यूटरीकृत लेखांकन प्रक्रिया के मध्य तुलना, स्वचलन के गुण तथा सीमाओं पर प्रकाश।
- लेखांकन पद्धतियों के स्रोत : प्रयोग के लिए तैयार (रेडीमेड), उपभोक्ता अनुरूप तथा उपयुक्त (सॉफ्टवेयर), प्रत्येक विकल्प के गुण एवं दोष।

इकाई-10 : लेखांकन तथा डाटाबेस विधि **(पीरियड 18)**

- लेखांकन तथा डाटाबेस प्रबन्ध पद्धति
- सत्व-सम्बन्ध मॉडल सत्व तथा उनका लेखांकन पद्धति में सम्बन्ध, साधारण विवरणिका का निर्माण, प्रारूप, प्रश्न तथा लेखांकन तंत्र के सम्बन्ध में प्रतिवेदन।

संस्तुत पाठ्यपुस्तकें

1. लेखाशास्त्र भाग-I कक्षा XI एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित
2. लेखाशास्त्र भाग-II कक्षा XII एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

कक्षा XII

प्रश्न-पत्र 1	समय : 3 घंटे		अंक : 80
इकाइयाँ			
भाग (क) अलाभकारी संस्थानों, साझेदारी फर्म तथा कम्पनियों के लिए लेखांकन			
1. अलाभकारी संगठनों के लिए लेखांकन		22	10
2. साझेदारी फर्मों के लिए लेखांकन		14	5
3. साझेदारी का पुनर्गठन		34	20
4. अंश पूँजी तथा ऋणपत्रों के लिए लेखांकन		54	25
		124	**60**
भाग (ख) : वित्तीय विवरण विश्लेषण			
5. वित्तीय विवरणों का विश्लेषण		33	12
6. रोकड़ प्रवाह विवरण		33	8
7. परियोजना कार्य		18	20
(i) परियोजना फाइल	4		
(ii) लिखित परीक्षा	12		
(iii) मौखिक परीक्षा	4		
	कुल	**84**	**40**
अथवा		**पीरियड**	**अंक**
भाग (ग) : कम्प्यूटराइज़्ड लेखांकन			
5. कम्प्यूटराइज़्ड लेखांकन पद्धति का अवलोकन		12	5
6. डाटा बेस प्रबन्धन विधि (डी.बी.एम.एस.) का लेखांकन में उपयोग		26	8
7. इलैक्ट्रॉनिक स्प्रैड शीट का लेखांकन प्रयोग		24	7
8. अभिकलित्र लेखांकन में प्रयोगात्मक कार्य		22	20
(i) परियोजना संचिका	4		
(ii) प्रयोगात्मक परीक्षा	12		
(iii) मौखिक परीक्षा	4		
	कुल	**84**	**40**

भाग (अ) : अलाभकारी संगठनों, साझेदारी फर्म तथा कम्पनियों के लिए लेखांकन (पीरियड-124)

इकाई-1 : अलाभकारी संगठनों के लिए लेखांकन (पीरियड 22)

- अलाभकारी संगठनों का अर्थ तथा लक्षण,
- कोष आधारित लेखांकन का अर्थ तथा लक्षण,
- प्राप्ति एवं भुगतान खाता,
- प्राप्ति एवं भुगतान खाते तथा अतिरिक्त सूचना के आधार पर आय-व्यय खाता तथा तुलन-पत्र तैयार करना।

इकाई-2 : साझेदारी फर्मों के लिए लेखांकन-I (पीरियड 14)

- साझेदारी फर्म की प्रकृति, साझेदारी विलेख-अर्थ, महत्व।
- साझेदारों के पूँजी खाते, स्थाई बनाम अस्थाई पूँजी, साझेदारों में लाभ विभाजन, लाभ तथा हानि विनियोजन खाता, भूतकालीन समायोजनों सहित।

इकाई-3 : साझेदारी फर्मों के लिए लेखांकन-II (पीरियड 34)

- विद्यमान साझेदारों के लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन, त्याग अनुपात तथा अधिलाभ अनुपात।
- सम्पत्तियों और देनदारियों के पुनर्मूल्यांकन के लिए लेखांकन, संचय, अविभाजित लाभों का वितरण।
- ख्याति : प्रकृति, ख्याति को प्रभावित करने वाले घटक, ख्याति के मूल्यांकन की विधियाँ: औसत लाभ विधि , अधिलाभ (सुपर-प्रोफिट) विधि तथा पूँजीकरण विधि।
- साझेदार का प्रवेश : साझेदार के प्रवेश का प्रभाव, लाभ विभाजन अनुपात में परिवर्तन, ख्याति का लेखांकन व्यवहार (लेखांकन मानक संख्या 10 के अनुसार), सम्पत्तियों एवं देनदारियों का पुनर्मूल्यांकन तथा पूँजी का समायोजन।
- साझेदार का अवकाश ग्रहण, मृत्यु/लाभ-विभाजन अनुपात में परिवर्तन, ख्याति के व्यवहार के लिए लेखांकन, सम्पत्रियों एवं देनदारियों का पुनर्मूल्यांकन तथा पूँजी का समायोजन।
- साझेदारी फर्म का समापन। (गार्नर एवं मर्रे तथा पीसमील सिस्टम सम्मिलित नहीं है)।

इकाई-4 : अंश पूँजी तथा ऋणपत्रों के लिए लेखांकन (पीरियड 54)

- अंश पूँजी: अर्थ तथा प्रकार।
- अंश पूँजी के लिए लेखांकन समता तथा अधिमान अंशों का निर्गमन एवं आबंटन, अंशों का सार्वजनिक अंशदान, अधि-अभिदान तथा अल्प अभिदान, अंशों का सममूल्य पर अधिमूल्य पर तथा बट्टे पर निर्गमन, अग्रिम माँग, बकाया माँग, रोकड़ के अतिरिक्त, अन्य प्रतिफल स्वरूप अंशों का निर्गमन। अंशों की निजी तौर पर स्थापन का अर्थ, कर्मचारी स्टॉक विकल्प योजना का अर्थ।
- अंशों का हरण: लेखांकन व्यवहार, हरण किये हुए अंशों का पुनर्निर्गमन।
- कम्पनी के तुलन-पत्र में अंश-पूँजी का प्रदर्शन।
- ऋण-पत्रों का सममूल्य पर, अधिमूल्य पर तथा बट्टे पर निर्गमन, ऋणपत्रों के निर्गमन पर हानि, बट्टा खाता का

- अपलेखन, रोकड़ के अतिरिक्त अन्य किसी प्रतिफल स्वरूप ऋणपत्रों का निर्गमन, प्रतिभूति के रूप में ऋणपत्रों का निर्गमन।
- ऋणपत्रों का शोधन, स्रोत-लाभ में से शोधन, ऋणपत्र शोधन, संचय/पूंजी से शोधन:एक मुश्त भुगतान, लाटरी (ड्रा), खुले बाजार में क्रय (ब्याज के साथ या बिना ब्याज की अवधारणा को छोड़कर) तथा परिवर्तन द्वारा शोधन।

भाग 'ख' : वित्तीय विवरण विश्लेषण **पीरियड 84**

इकाई-5 : वित्तीय विवरणों का विश्लेषण :- **पीरियड 33**

- कम्पनी के वित्तीय विवरण, कम्पनी का केवल मुख्य शीर्षकों के साथ निर्धारित प्रारूप में साधारण तुलन पत्र तैयार करना।
- वित्तीय विवरणों का विश्लेषण-अर्थ, महत्व, सीमाएँ।
- वित्तीय विवरणों के विश्लेषण के साधन : तुलनात्मक विवरण, समरूप वित्तीय विवरण (कॉमन साइज़ स्टेटमेन्ट्स)
- लेखांकन अनुपात-अर्थ, उद्देश्य तथा अनुपातों के प्रकार :

  तरलता द्रवता अनुपातः चालू अनुपात, तरलता द्रवता अनुपात।
- ऋण-शोधन क्षमता अनुपातः ऋण-समता अनुपात, ऋण हेतु कुल सम्पत्ति अनुपात, स्वामित्व अनुपात।
- क्रियाशीलता/आवर्त अनुपात : स्कन्ध (स्टॉक) आवर्त अनुपात, देनदार आवर्त अनुपात, लेनदार आवर्त अनुपात, कार्यशील-पूँजी आवर्त अनुपात, स्थिर सम्पत्तियाँ आवर्त अनुपात।
- लाभप्रदता अनुपातः सकल लाभ अनुपात, प्रचालन अनुपात, शुद्ध/निवल लाभ अनुपात, निवेश पर प्रत्याय (लाभ), प्रति अंश अर्जन, प्रति अंश लाभांश, मूल्य अर्जन अनुपात।

इकाई 6 : रोकड़ प्रवाह विवरण

रोकड़ प्रवाह विवरण-अर्थ तथा उद्देश्य, रोकड़ प्रवाह विवरण तैयार करना, ह्रास, लाभांश तथा कर से सम्बन्धित समायोजन, स्थाई सम्पत्तियों का क्रय विक्रय (भारतीय लागत लेखा संस्थान के अनुसार संशोधित मानक)

इकाई-7 : लेखांकन में परियोजना कार्य :- **(पीरियड 18)**

(कृपया केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित मार्गदर्शन पुस्तिका का अनुसरण करें)

अथवा

भाग (ग) कम्प्यूटराइज़्ड लेखांकन **पीरियड 84**

इकाई-5 : कम्प्यूटराइज़्ड लेखांकन पद्धति -एक दृष्टि **(पीरियड 12)**

- कम्प्यूटराइज़्ड लेखांकन पद्धति की अवधारणा तथा प्रकार
- कम्प्यूटराइज़्ड लेखांकन पद्धति के लक्षण
- कम्प्यूटराइज़्ड लेखांकन पद्धति की संरचना

इकाई-6 : डाटाबेस प्रबन्धन विधि (डी.बी.एम.एस.) का लेखांकन में उपयोग :- **(पीरियड 26)**

- डी.बी.एम.एस की अवधारणा
- डी.बी.एम.एस के तत्व : सारणी, क्वैरीज़, प्रारूप तथा रिपोर्ट्स।
- लेखांकन के लिए डाटा सारिणी तैयार करना।
- लेखांकन सूचनाओं के अभ्युदय के लिए क्वैरीज़, प्रारूप तथा रिपोर्ट का उपयोग :
- अंशधारियों का लेखा-जोखा, बिक्री का लेखा-जोखा, ग्राहकों की रूपरेखा, आपूर्तिकर्ताओं की रूपरेखा, वेतन का हिसाब, कर्मचारी संख्या, लघु रोकड़ रजिस्टर की लेखांकन सूचना के अभ्युदय में डी.बी.एम.एस का उपयोग।

इकाई-7 : इलैक्ट्रॉनिक स्प्रैडशीट का लेखांकन प्रयोग **(पीरियड-24)**

- इलैक्ट्रॉनिक स्प्रैडशीट की अवधारणा
- इलैक्ट्रॉनिक स्प्रैडशीट द्वारा प्रस्तुत लक्षण
- लेखांकन सूचनाओं के अभ्युदय, ह्रास अनुसूची तैयार करने, ऋण वापसी अनुसूची, वेतन तालिका का लेखांकन तथा इसी तरह के उपयोगों में इलैक्ट्रॉनिक स्प्रैडशीट का उपयोग।

इकाई-8 : कम्प्यूटराइज़ड लेखांकन में प्रयोगात्मक कार्य **(पीरियड-22)**

कृपया केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित मार्गदर्शन पुस्तिका का अवलोकन करें।)

संस्तुत पाठ्य पुस्तकें

1. लेखाशास्त्र भाग-I कक्षा XII एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित
2. लेखाशास्त्र भाग-II कक्षा XII एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित

20. उद्यमिता (कोड संख्या 066)

मूलाधार

विद्यालय पाठ्यक्रम का विकास एक गतिशील प्रक्रिया है जो न केवल समाज को प्रत्युत्तर देता है, अपितु अध्ययनकर्ताओं की आवश्यकताओं तथा महत्वाकांक्षाओं को भी प्रतिबिम्बित करता है। तीव्र गति से बदलते हुए समाज में, विशेष रूप से बदलते हुए सामाजिक-आर्थिक पर्यावरण की प्रासंगिकता को स्थापित करने के लिए, अवसरों की समान भागीदारी को आश्वस्त करने के लिए और अंत में उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए पाठ्यक्रम में परिवर्तन वांछनीय है। इस संदर्भ में उद्यमिता का पाठ्यक्रम उत्कृष्टता के लिए मानवीय भावना द्वारा व्यक्तिगत गुणों को विकसित करने तथा उन्हें उपयोग में लाने के लक्ष्य निर्धारित करता है ताकि सामाजिक उत्थान हो और प्रत्येक व्यक्ति एक सुखमय जीवन व्यतीत कर सके।

उद्देश्य

- उद्यमीय भावना जागृत करना तथा जीवन के हर कदम पर उद्यमी बनना।
- जीवन यापन के लिए मानव संसाधनों के विभिन्न उपयोगों द्वारा आय के उत्तम साधनों से सुपरिचित होना।
- उद्यमिता की अवधारणा तथा प्रक्रिया को समझना, व्यक्ति तथा राष्ट्र की वृद्धि तथा विकास में इसका सहयोग व भूमिका।
- उद्यमीय गुण, क्षमता एवं अभिप्रेरणा जागृत करना।
- उद्यमीय उपक्रम के सृजन तथा प्रबन्धन की प्रक्रिया तथा कौशल का अध्ययन करना।

कक्षा XI

सिद्धान्त	**कुल अंक : 70**
इकाई-I : उद्यमिता तथा मानव गतिविधियाँ	**30 अंक**

(क) उद्यमिता

- अवधारणा, कार्य तथा आवश्यकता।
- उद्यमिता, विशेषताएँ तथा दक्षता।
- सामाजिक-आर्थिक लाभ के लिए उद्यमिता की प्रासंगिकता : राष्ट्रीय सम्पदा में वृद्धि, स्वरोजगार के अवसरों का सृजन, बहुत छोटे तथा मध्यम आकार वाले उद्यम, मानवीय तथा प्राकृतिक संसाधनों का अनुकूलतम उपयोग तथा समृद्धि के मार्ग में आने वाली समस्याओं का समाधान, उद्यमी व्यक्तित्व तथा समाज का निर्माण।
- उद्यमिता विकास की प्रक्रिया।

(ख) उद्यमिता लक्ष्य तथा मानवीय क्रियाएँ:

- प्रकृति, उद्देश्य तथा मानवीय क्रियाओं का ढाँचा, नवप्रवर्तन के लिए आर्थिक एवं अनार्थिक आवश्यकताएँ।
- उद्यमिता लक्ष्य तथा मानवीय क्रियाओं का सम्बन्ध तथा मूलाधार।

इकाई-II : उद्यमीय मूल्य प्राप्त करना तथा अभिप्रेरण **30 अंक**

- उद्यमीय मूल्य, अभिवृत्ति तथा अभिप्रेरण अर्थ व अवधारणा।
- उद्यमीय अभिप्रेरण तथा क्षमता विकसित करना, अभिप्रेरणा उपलब्धि की अवधारणा तथा प्रक्रिया, आत्म-क्षमता, सृजनात्मकता, जोखिम उठाना, नेतृत्व, सम्प्रेषण तथा प्रभावित करने की योग्यता एवं नियोजन क्रिया।
- उद्यमिता में अवरोध।
- उद्यमियों को सहायता एवं प्रोत्साहन।

इकाई-III : बाजार गतिविज्ञान से परिचय

- बाजार की समझ
- बाजार का प्रतियोगी विश्लेषण
- एकस्व (पेटेन्ट), व्यापार चिन्ह (ट्रेड मार्क) तथा स्वत्वाधिकार (कॉपीराइट)

प्रयोगात्मक **30 अंक**

(i) विद्यार्थी अपनी इच्छानुसार किसी भी उद्यम का अध्ययन करेंगे। एक अनुसूची/प्रश्नावली की सहायता से उद्यमी की पृष्ठभूमि, उद्यमीय जीवन चुनने का कारण, उद्यम का प्रारम्भ उद्यम का प्रकार, इस उद्यम को स्थापित करने की प्रक्रिया, उत्पाद/सेवाएँ, उत्पादन प्रक्रिया, विनियोजित पूँजी तथा अनुसरण की जाने वाली विपणन प्रथाएँ, लाभ या हानि, उन्नति एवं विकास, जिन समस्याओं का सामना किया, संस्थाएँ/संगठन जिन्होंने प्रोत्साहन दिया तथा उद्यमी का स्तर एवं संतुष्टि आदि सूचनाओं का अवलोकन करेंगे।

- अपने अध्ययन निरीक्षण के दौरान किए गए अवलोकन के आधार पर एक उद्यम की संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करेंगे।

कक्षा XII

सिद्धान्त **कुल अंक : 70**

इकाई-1: उद्यमीय सुअवसर एवं उद्यम का सृजन **20 अंक**

- उद्यमीय सुअवसरों की अनुभूति
- पर्यावरण परीक्षण
- बाजार मूल्यांकन
- उद्यमीय सुअवसरों की पहचान
- एक उद्यम का चयन
- एक उद्यम की स्थापना के चरण

इकाई-II : उद्यम नियोजन एवं संसाधनों का एकत्रीकरण **20 अंक**

- व्यवसाय नियोजन-एक परियोजना रिपोर्ट तैयार करना।
- संसाधनों का मूल्यांकन-वित्तीय एवं गैरवित्तीय

- स्थाई तथा चालू पूँजी की आवश्यकता का निर्धारण, कोष, उनका प्रवाह, लाभ-अनुपात, सम-विच्छेद बिन्दु का विश्लेषण आदि।
- संसाधनों को गतिशील बनाना कोष का अर्थ एवं स्रोत, एक उद्यम को प्रारम्भ करने की सुविधाएँ एवं तकनीकें। माल तथा सेवाओं का संगठन/उत्पादन-गुण, मात्रा तथा आगतों का प्रवाह।

इकाई-III : उद्यम प्रबन्ध **30 अंक**

(i) सामान्य प्रबन्ध : आधारभूत प्रबन्धन कार्य

(ii) माल तथा सेवाओं का संगठन/उत्पादन-गुण, मात्रा तथा आगतों का प्रवाह।

बाजार प्रबन्धन :

अर्थ, विपणन के कार्य, विपणन मिश्र:

- उत्पाद
- मूल्य
- स्थान
- प्रवर्तन/संवर्धन (विज्ञापन तथा विक्रय संवर्धन)

(iii) वित्त प्रबन्धन वित्त के दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन स्रोत,

लागत निर्धारण, आय निर्धारण, लाभ/हानि की गणना।

(iv) संवृद्धि तथा उसे बनाए रखने सम्बन्धी प्रबन्धन : परिवर्तन उन्मुखता, आधुनिकीकरण, विस्तार, विविधीकरण तथा प्रतिस्थापन।

(v) उद्यमीय अनुशासन-भूमि सम्बन्धी नियम, पारिस्थितिकी, उपभोक्ता अवधारणा, समझौतों तथा विश्वास में निष्ठा।

प्रयोगात्मक **30 अंक**

प्रस्तावना : उद्यमिता विषय का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों में पहल, आत्मनिर्भरता तथा उत्साह में वृद्धि करना है; ताकि वे सही अर्थों में भावनात्मक तथा निष्पादन दोनों क्षेत्रों में सामर्थ्यवान उद्यमी प्रमाणित हो सकें। साथ ही बहुत सी कुशलताएँ जैसे अवलोकन, मूल्यांकन, सम्प्रेषण, संसाधनों को गतिशील बनाना तथा उनका प्रबन्ध करना, जोखिम का मूल्यांकन, सहयोग-भावना आदि भी छात्रों/छात्राओं में विकसित हो सकें। नेतृत्व-गुण व्यावसायिक नैतिकता के प्रति संवेदनशीलता तथा सकारात्मक मूल्य-पद्धति से लगाव, वे मूल तथ्य हैं, जो उद्यमिता से सम्बन्धित विभिन्न अवधारणाओं को प्रस्तुत कराते हुए, इस पाठ्यक्रम पर प्रकाश डालते हैं।

उद्यमिता जैसे पाठ्यक्रम के लिए दृढ़ प्रयोगात्मक घटक प्रयोगात्मक कार्य के रूप में अति आवश्यक हैं। प्रयोगात्मक कार्य के उद्देश्य इस प्रकार हैं :

(i) विद्यार्थियों को व्यावसायिक जगत से परिचित कराना; ताकि उनमें एक उद्यमी के लिए आवश्यक क्रोड़ कुशलताएँ एवं क्षमताएँ विकसित हो सकें।

(ii) विद्यार्थियों में नेतृत्व, विश्वास, पहल करने की भावना, अनिश्चितताओं का सामना करना, वचनबद्धता, सृजनात्मकता, सहयोग भावना, सत्यनिष्ठा तथा विश्वसनीयता के गुणों को विकसित करना।

(iii) विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना कि वे ऐसा कौशल तथा ज्ञान अर्जित कर सकें जिनकी आवश्यकता आँकड़ों का सर्वेक्षण, एकत्रीकरण, लेखा-जोखा तथा विश्लेषण करने और उत्पाद एवं सेवाओं के लिए सम्भावित माँग का अनुमान लगाने के लिए होती है।

(iv) विद्यार्थियों का परियोजना रिपोर्ट बनाने में मार्गदर्शन करना।

(v) विद्यार्थियों द्वारा संसाधन मूल्यांकन, बाजार-गतिविज्ञान, वित्तीय प्रबन्ध, लागत-निर्धारण, लाभ-हानि की गणना आदि विभिन्न क्षेत्रों में किए गए विशिष्ट-अध्ययन द्वारा ऐसा ज्ञान व कौशल विकसित करना जो एक उद्यम के नियोजन एवं प्रबन्धन के लिए आवश्यक है।

(vi) विद्यार्थियों में महत्वपूर्ण मूल्यों एवं उद्यमीय अनुशासन की भावना को विकसित करना।

प्रारूप	**कुल अंक : 30**
1. परियोजना रिपोर्ट/सर्वेक्षण रिपोर्ट	10 अंक
2. मौखिक परीक्षा (परियोजना रिपोर्ट/सर्वेक्षण रिपोर्ट)	05 अंक
3. प्रकरण (विशिष्ट) अध्ययन	10 अंक
4. समस्या समाधान	05 अंक

1. परियोजना रिपोर्ट/बाजार सर्वेक्षण रिपोर्ट

(क) परियोजना रिपोर्ट :

एक उद्यम की वस्तुओं/सेवाओं के सम्बन्ध में एक परियोजना रिपोर्ट तैयार करना।

अपने आस-पास के क्षेत्र में उपलब्ध वास्तविक स्रोतों, विद्यार्थी की रुचि तथा सूचनाओं की उपलब्धता के आधार पर एक परियोजना के चयन में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया जाना चाहिए। परियोजना रिपोर्ट को तैयार करने में पाठ्यपुस्तक में रिपोर्ट तैयार करने के लिए दिए गए नमूने-फार्म का प्रयोग किया जा सकता है, पुन: चूँकि परियोजना के आधार पर विद्यार्थियों को साक्षात्कार के लिए तैयार किया जाना आवश्यक है। अत: विभिन्न सम्बन्धित पक्षों का पूर्ण रूप से अध्ययन करने के पश्चात् पूर्ण सतर्कता के साथ विद्यार्थियों को परियोजना रिपोर्ट तैयार करनी चाहिए। संक्षेप में परियोजना रिपोर्ट एक वास्तविक उद्यम की ओर अग्रसर होनी चाहिए।

(ख) बाज़ार-सर्वेक्षण-रिपोर्ट :

बाज़ार सर्वेक्षण यह जानने की तकनीक एवं प्रक्रिया है कि आपके भावी उपभोक्ता कौन से हैं और वे क्या चाहते हैं? सर्वेक्षण बाज़ार में पहले से ही उपलब्ध वस्तुओं और सेवाओं का भी किया जा सकता है और विद्यार्थी नई वस्तुओं व सेवाओं के लिए भी सर्वेक्षण कर सकते हैं। सर्वेक्षण की रिपोर्ट निम्नलिखित वृहत् शीर्षकों के अन्तर्गत की जानी चाहिए :

(i) उद्देश्य

(ii) विधियाँ एवं उपकरण (साक्षात्कार प्रश्नावलियाँ आदि) जिनका उपयोग सूचनाएँ एकत्रित करने के लिए किया जाना है,

(iii) सूचना एवं सामग्री (डाटा) के अभिलेख,

(iv) सामग्री (डाटा) तथा सूचना का विश्लेषण,

(v) निर्वचन एवं निष्कर्ष

उदाहरण के रूप में किसी परिवार की प्रसाधन सम्बन्धी साबुन, दंत-मंजन आदि के विषय में पसन्द की जानकारी प्राप्त करने के लिए सर्वेक्षण किया जा सकता है। संकलित सामग्री का विश्लेषण किसी उद्यमी के लिए पैटर्न निर्धारण में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

1. परियोजना रिपोर्ट/सर्वेक्षण रिपोर्ट निर्धारण के लिए दिशा-निर्देश या मुख्य बातें :

(i) प्रस्तुतीकरण : रूपरेखा, स्पष्टता, ग्राफ, सारिणी तथा अन्य द्रश्य सामग्री का प्रयोग, संगठन, सामग्री का विधिवत् लेखांकन, तथा सूचना और सामान्य सुव्यवस्था निष्पादन — 5 अंक

(ii) मौलिकता तथा सृजनात्कता — 3 अंक

(iii) सूचना की प्रामाणिकता तथा गणनाओं की यथार्थता एवं परियोजना की सामान्य सम्भाव्यता/सर्वेक्षण के द्वारा निकाले गए निष्कर्षों को सम्हालकर रखना। — 2 अंक

2. परियोजना या बाजार सर्वेक्षण रिपोर्ट पर मौखिक परीक्षा — 5 अंक

छात्र/छात्रा की रिपोर्ट को मौलिक मानकर ही प्रश्नों का चयन करना चाहिए तथा यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विद्यार्थी ने जो कार्य किया है उसे उसकी जानकारी है। उद्यमी के गुण जैसे नेतृत्व, आत्मविश्वास, सृजनात्मकता, मौलिकता, पहलता आदि के मूल्यांकन हेतु रिपोर्ट पर आधारित विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे जाने चाहिए।

3. प्रकरण (विशिष्ट) अध्ययन — 10 अंक

प्रकरण अध्ययन एक संगठन उद्यम, अभ्यास, गतिविधि या व्यक्ति को सही ढंग से उजागर करने का केन्द्रित अनुसंधान हैं, जिसके अध्ययन से किसी पक्ष के परीक्षण का प्रयास होता है। उदाहरणस्वरूप एक उद्योग द्वारा प्रदूषण नियंत्रण पद्धति का प्रकरण अध्ययन किया जाता है। यह एक सफल उद्योगपति एक प्रकरण अध्ययन का विश्लेषण करने या रणनीतियों को समझने के लिए ऐसा विषय चुन सकता है, जिसके माध्यम से उद्योगपतियों को सफलता मिली।

वास्तव में प्रकरण अध्ययन का उद्देश्य विषयों के विश्वास, अभ्यास, रणनीति, मूल्य आदि को अग्रेषित करना है, जिसके द्वारा उन्हें उपलब्धि प्राप्त हुई है, ऐसे अध्ययनों से महान लोगों के विचारों तथा कार्यरूपरेखा को समझने में सहायता प्राप्त होती है। हम असफलताओं का भी प्रकरण अध्ययन कर सकते हैं, जिसमें कम्पनी का पतन क्यों हुआ? एक सेवा कार्य ने अपना बाजार क्यों खोया आदि को समझने में सहायता मिले। हम दोनों प्रकार के प्रकरण अध्ययनों से सबक सीखते हैं। किसी कार्य को कैसे किया जाए और कैसे न किया जाए। वे उद्यम में सन्निहित प्रक्रियाओं की मूल्यवान अंतदृष्टि को सुलभ बनाते हैं।

प्रकरण अध्ययन के लिए सुझाये गये विषय

(i) एक सफल उद्यमी की रूपरेखा तैयार करना।

(ii) किसी सार्वजनिक संस्था की सफलताओं/किलताओं का उनके कारणों सहित विश्लेषण करना।

(iii) किसी स्थानीय लघु उद्योग का अध्ययन, जिसमें यह जानकारी प्राप्त की जाए कि वह उद्यम इस स्तर तक कैसे पहुँचा।

(iv) दो या अधिक प्रतिद्वन्द्वी व्यवसायिक इकाइयों का अध्ययन, जिसमें उनका सामर्थ्य एवं कमजोरियों का विश्लेषण हो।

(v) किसी विद्यालय का प्रकरण अध्ययन, जिसमें दो बातों का विश्लेषण हो कार्य योजना करने के लिए, आधारिक संरचना, शैक्षिक, मनोरंजन क्रियाएँ आदि।

(vi) किसी स्थानीय फलते-फूलते फास्ट-फूड शॉप या रैस्टोरैन्ट का प्रकरण अध्ययन।

(vii) ऐसी व्यावसायिक इकाई द्वारा अपनाए गए विभिन्न तरीकों का प्रकरण अध्ययनय, जिसके द्वारा उसने अपने आर्थिक श्रोतों को गतिशील बनाया है।

(viii) एक व्यावसायिक इकाई द्वारा अपनायी गयी प्रबन्ध तकनीक का प्रकरण अध्ययन।

(ix) एक सफल उपभोक्ता एवं स्थाई कम्पनी द्वारा अपनाई गई बाजार रणनीति का प्रकरण अध्ययन।

(x) एक सार्वजनिक कम्पनी के वित्तीय प्रबन्ध का प्रकरण अध्ययन।

(xi) एक ऐसे विशिष्ट संस्थान का प्रकरण अध्ययन जो छोटे स्तर के उद्यमों को सहायता एवं सलाह प्रदान करता है।

(xii) दो निजी कम्पनियों के स्थिति-विवरणों का प्रकरण अध्ययन, ताकि उनकी व्यापार तथा साख अध्ययन हो सके।

(xiii) एक वृहद् निर्णायक उद्योग के स्कन्ध प्रबन्धन का अध्ययन, ताकि इष्टतम लागत प्रक्रिया का सन्निहित निर्धारण हो सके।

(xiv) एक सुस्थापित औद्योगिक इकाई या कम्पनी का प्रकरण अध्ययन, जिसमें कम्पनी का मूल्यविधि, तथा वे सामाजिक प्रतिबद्धता या वचनबद्धता को कैसे निभाते हैं के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके

(xv) एक सुस्थापित उद्योग का प्रकरण अध्ययन, जिसमें यह ज्ञात किया जाए कि वे प्रदूषण को कैसे कम करते हैं या रोकते हैं।

(xvi) पर्यावरण सौहार्द कम्पनियाँ तथा प्रतिरक्षण में उनका सहयोग का अध्ययन।

प्रकरण अध्ययन का मूल्यांकन

(i) प्रस्तुतीकरण : रूपरेखा, परिशुद्धता, स्पष्टता, प्रामाणिकता, तथा सामान्य सुव्यवस्था — 7 अंक

(ii) विश्लेषण तथा निष्कर्ष — 3 अंक

4. समस्या निराकरण **5 अंक**

इस सत्र में विद्यार्थियों को एक लिखित परीक्षा देनी होगी जिसमें उन्हें समस्या का समाधान ढूँढना होगा। परीक्षक कक्षा XII से सम्बन्धित कोई भी समस्या दे सकते हैं, जो निर्धारित पाठ्य पुस्तक से ही होगी। समस्याएँ निम्न क्षेत्रों की हो सकती हैं :

(i) परियोजना की सम्भाव्यता को स्थायित करने के लिए पर्यावरण का परीक्षण किस प्रकार किया जा सकता है।

(ii) समरूप उत्पादों के निष्कर्ष ज्ञात करने के लिए उपभोक्ता पैटर्न उत्पादों की कुछ आकृतियाँ प्रदर्शित की जाए।

(iii) सम्भाव्यता घटकों के निर्धारण के लिए जो दिए हुए उत्पाद या सेवाओं के हों, का बाजार निर्धारण करना।

(iv) कार्यशील पूँजी निर्धारण

(v) कुल उत्पादन लागत की गणना करना।

(vi) बिना हानि-लाभ व्यापार बिन्दु की गणना करना।

(vii) विनिर्माण इकाई की स्थिति का निर्धारण करना।

(viii) स्कन्ध नियन्त्रण में समस्याएँ (आर्थिक आदेश मात्रा की गणना तथा (अ ब स) का विश्लेषण करना।)

(ix) उत्पाद या सेवा का मूल्य निर्धारण विधि निर्धारित करना।

(x) उत्पाद या सेवा के विक्रय अभियान योजना के लिए संवर्धन मिश्र लागू करना।

(xi) दिए हुए कार्य के लिए साधारण बजट बनाना।

उत्तर मूल्यांकन

परीक्षक पाँच समस्याएँ तैयार करेंगे, जिन्हें वे विद्यार्थियों को प्रस्तुत करने से पूर्व स्वयं हल करेंगे। विद्यार्थी उनमें से कोई एक को चुनेंगे तथा उसी का उत्तर देंगे। उनके उत्तर में विभिन्न चरण तथा विभिन्न कारण होंगे। यदि समस्या समाधान के लिए किसी गणना की आवश्यकता न हों तथा उसका कोई एक ठीक उत्तर न हो तो सम्पूर्ण प्रक्रिया जो विद्यार्थी ने अपनाई है, उसके उत्तर के लिए उचित भारिता या अधिप्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिए।

मौलिकता तथा नवीनता की भावना को पुरुस्कृत किया जाना चाहिए। यदि उत्तर तर्क संगत हो तो व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियों, त्रुटिपूर्ण वर्तनी या हिज्जों के लिए विद्यार्थियों को दण्डित न किया जाए। यदि कहीं पर निश्चित सूत्रों का समावेश हो तो परिशुद्धता को अधिप्रतिनिधित्व अवश्य दिया जाना चाहिए।

प्रस्तावित पुस्तकों की सूची

1. उद्यमिता कक्षा XI सी.बी.एस.ई. दिल्ली
2. उद्यमिता कक्षा XII सी.बी.एस.ई. दिल्ली
3. उद्यमिता (हिन्दी) डॉ. एम.एम.पी. आखौरी तथा एस.पी. मिश्रा।

   प्रकाशक उद्यमिता तथा लघु व्यवसाय विकास के लिए राष्ट्री य सस्थान, एन.एस.आई..सी.-पी.एटीसी. कैम्पस ओखला।
4. औद्योगिक दिशा-निर्देश (हिन्दी) प्रकाशक **उद्यमिता विकास केन्द्र,** मध्यप्रदेश, 60 जेल रोड, जहाँगीराबाद, भोपाल-462008

पत्रिकाएं

(i) उद्यमिता समाचार पत्र (मासिक हिन्दी) प्रकाशक **उद्यमिता विकास केन्द्र** म.प्र , 60 जले रोड , जहाँगीराबाद, भोपाल।

(ii) लघु उद्योग समाचार

21. इतिहास (कोड संख्या 027)

मूलाधार:

विद्यार्थियों को महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं तथा प्रक्रियाओं से ऐतिहासिक समस्याओं और परिचर्चाओं द्वारा (कक्षा XI) अथवा ऐतिहासिक महत्वपूर्ण स्रोतों (कक्षा XII) द्वारा अवगत करवाया जाएगा। इन विषयों पर चर्चा करके यह आशा की जाती है कि विद्यार्थी न केवल इन घटनाओं और प्रक्रियाओं को जान पाऐंगे अपितु इतिहास बनने की हुए की खोज की उत्तेजना भी महसूस करेंगे।

उद्देश्य

- उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं में विद्यार्थियों पर इस बात पर बल दिया जाएगा कि इतिहास केवल तथ्यों के संग्रह की अपेक्षा एक तर्कसंगत विषय है, खोज की एक प्रक्रिया है और भूतकाल के बारे में जानने का एक रास्ता है, प्रस्तुत पाठ्यक्रम से उन्हें यह समझने में सहायता मिलेगी कि इतिहासकारों द्वारा इतिहास लेखन की प्रक्रिया में विभिन्न प्रकार के साक्ष्यों को छाँटना और जोड़ना, तथा उनके स्रोतों को सतर्क पढ़ना होता है। वे इस बात का मूल्यांकन कर सकेंगे कि इतिहासकार किस प्रकार भूतकाल के चरण चिह्नों को देखकर भूतकाल के विषय में जानकारी एकत्र करते हैं और किस प्रकार से ऐतिहासिक ज्ञान में विकास होता है।
- पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को विभिन्न परिस्थितियों में विकास के रूप में आपसी सम्बन्ध और उनके बीच समानताओं को समझने में सहायक होगा। इसी प्रकार विद्यार्थी अलग-अलग समय में समान प्रक्रियाओं के सम्बन्धों का विश्लेषण कर सकेंगे तथा इतिहास व अन्य संबंधित विषयों में सामाजिक खोजों के तरीकों में आपसी सम्बन्ध को खोज सकेंगे।
- 11वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में विश्व इतिहास के प्रमुख विषयों का समायोजन किया गया है। विषयों का चयन इस प्रकार किया गया है ताकि:
    - उनका केन्द्र बिन्दु राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक क्षेत्र में हुए कुछ महत्वपूर्ण विकास पर केन्द्रीभूत हो।
    - अध्ययन केवल विकास के वर्णन ही न हों जैसे कि शहरीकरण, औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण अपितु विस्थापन की प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करना भी हो। इन विषयों के अध्ययन से विद्यार्थी को विस्तृत ऐतिहासिक प्रतिक्रियाओं तथा उनके चारों ओर होने वाले विशेष वाद-विवाद का भी अंदाजा होगा।
- 11वीं कक्षा के प्रत्येक विषय के व्यवहार में निम्न समाहित होगी :

  (क) अध्ययन विषय का मार्गदर्शन,

  (ख) अध्ययन एक विशेष विषय क्षेत्र को केन्द्रित करते हुए।

  (ग) विवादित विषय से सम्बन्धित तर्कसंगत वाद-विवाद प्रारम्भ करके।
- 12वीं कक्षा में हमारा केन्द्र बिन्दु बदलकर इतिहास के प्राचीनकाल, मध्यकाल व आधुनिक काल के विषयों का विस्तृत अध्ययन होगा हालांकि प्रयत्न यही रहेगा कि इन काल परक विषयों में अंतर को कम किया जाए। हमारा उद्देश्य इन विषयों का अध्ययन विस्तार और गहराई से करना होगा बजाय समस्त ऐतिहासिक काल का क्रमानुसार सर्वेक्षण। इस प्रकार विद्यार्थियों के पूर्व कक्षाओं में अर्जित ज्ञान के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण होगा।

- 11वीं कक्षा में प्रत्येक विषय के अध्ययन में एक प्रकार के स्रोत से भी परिचित कराया जाएगा। इस प्रकार के अध्ययन से विद्यार्थी यह जानना शुरू कर देंगे कि विभिन्न प्रकार के स्रोत क्या दर्शित करते हैं और क्या नहीं। वे जान पाएँगे कि इतिहासकार इन स्रोतों की व्याख्या करने में आई समस्याओं तथा कठिनाइयों का किस प्रकार विश्लेषण करते हैं और किस प्रकार से एक घटना, ऐतिहासिक प्रक्रिया अथवा ऐतिहासिक व्यक्ति का निर्माण विभिन्न प्रकार के स्रोतों को देखकर होता है।
- 12वीं कक्षा का प्रत्येक विषय चार उप-शीर्षकों के अंदर समाहित किया जाएगा:

  (क) घटनाओं, मुद्दों और प्रक्रियाओं का विस्तृत स्वरूप।

  (ख) विषयसम्बन्धी खोज की वर्तमान स्थिति का सार।

  (ग) विषय की जानकारी किस प्रकार प्राप्त की गई है, उसका वर्णन,

  (घ) मूल स्रोत से लिए गए एक विषय से सम्बन्धित उदाहरण लेकर इतिहासकारों ने उसका प्रयोग कैसे किया है, की व्याख्या।

दोनों कक्षाओं में (11वीं और 12वीं कक्षा) यद्यपि इन विषयों को एक व्यापक कालानुक्रम से संयोजित किया गया है किन्तु फिर भी उनमें अतिछादिता है। इसका अभिप्राय यह समझाने का था कि कालानुक्रम और काल-निर्धारण सदा बहुत बारीकी से नहीं हो पाते हैं।

पाठ्य पुस्तक में प्रत्येक विषय एक विशेष समय और स्थान के अनुसार मिलेगा। किन्तु ये परिचर्चाएँ निम्न प्रकार से विस्तृत संदर्भ में दी गई हैं-

(क) विशेष घटना को काल-रेखा में रख कर।

(ख) किसी विशेष घटना अथवा प्रक्रियाओं की परिचर्चा अन्य स्थानों या समय पर हुई विकास के संदर्भ में।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

कक्षा-XI

प्रश्न-पत्र 1 **समय : 3 घंटे** **अंक : 100**

इकाई	पीरियड	अंक
1. विश्व इतिहास का परिचय	8	-
खण्ड क : प्रारंभिक समाज	**32**	**15**
2. भूमिका	06	-
3. समय के प्रारम्भ से प्रारंभिक नगर	14	-
4. प्रारंभिक नगर	12	-
खण्ड 'ख' : साम्राज्य	**40**	**25**
5. भूमिका	06	
6. तीन महाद्वीपों में फैला हुआ एक साम्राज्य	12	

7. केन्द्रीय इस्लामिक क्षेत्र	12	
8. यायावर साम्राज्य	10	
खण्ड ग : बदलती परम्पराएँ	**44**	**25**
9. भूमिका	06	-
10. तीन वर्ग	12	
11. बदलती हुई सांस्कृतिक परम्पराएँ	14	
12. संस्कृतियों का टकराव	12	
खण्ड घ : आधुनिकीकरण की राहें	**46**	**25**
13. भूमिका	08	
14. औद्योगिक क्रान्ति	12	
15. मूल निवासियों का विस्थापन	12	
16. आधुनिकीकरण की राहें	14	
मानचित्र कार्य (इकाई 1-16)	10	10
कुल	**180**	**100**

कक्षा XI : विश्व इतिहास के विषय

विषय	पीरियड	उद्देश्य
1. विश्व इतिहास की भूमिका	(8)	
खण्ड क : प्रारम्भिक समाज		
2. भूमिका	(6)	
3. समय के प्रारम्भ से	(14)	• मानव के क्रमिक विकास की पुनर्रचना के तरीकों से विद्यार्थियों को परिचित कराना।
केन्द्र बिन्दु : अफ्रीका, यूरोप 5000 ई. पूर्व तक (क) मानव के उद्भव पर विचार (ख) प्रारम्भिक समाज (ग) वर्तमान समय में शिकार-संग्रहक समाज पर इतिहासकारों के मत		• क्या वर्तमान के संग्रहण व शिकार करने वाले लोगों के अनुभवों से प्रारंभिक समाजों के जीवन को समझा जा सकता है?
4. प्रारंभिक नगर	(12)	प्रारंभिक शहरी केन्द्रों की प्रकृति से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

केन्द्र बिन्दु : इराक, तीसरे सहस्राब्द पूर्व (क) शहरों का विकास (ख) प्रारंभिक शहरी समाजों की प्रकृति (ग) इतिहासकारों के लेखन के उपयोगों पर वाद-विवाद।		क्या लेखन सभ्यता को चिह्नित करने में महत्वपूर्ण है।
खण्ड-ख : साम्राज्य		
5. भूमिका	(6)	
6. तीन महाद्वीपों में फैला हुआ एक साम्राज्य • **केद्र बिन्दु :** रोमन साम्राज्य, 27 ई. पूर्व. से 600 ई. तक (क) राजनीतिक विकास (ख) आर्थिक विस्तार (ग) धर्म (घ) परवर्ती पुराकाल (च) दासप्रथा पर इतिहासकारों के मत।	(12)	• एक प्रमुख विश्व साम्राज्य के इतिहास से विद्यार्थियों को परिचित कराना। • चर्चा करना कि क्या दासता अर्थ व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण तत्व थी।
7. केन्द्रीय इस्लामी क्षेत्र **केन्द्रबिन्दु :** 7वीं से बारहवीं शताब्दियाँ (क) राज्य पद्धति (ख) अर्थव्यवस्था (ग) संस्कृति (घ) धर्मयुद्धों पर इतिहासकारों के दृष्टिकोण।	(12)	• अफ्रीकी और एशियायी क्षेत्रों में इस्लामी साम्राज्यों के उदय से तथा उसके समाज और अर्थ व्यवस्था से विद्यार्थियों को परिचित कराना। • धर्म युद्ध का इन क्षेत्रों में क्या अर्थ है, तथा उनको कैसे अनुभव किया गया, इसे समझना।
8. यायावर साम्राज्य : **केन्द्र बिन्दु :** मंगोल, 13वीं से 14वीं शताब्दी (क) यायावार की प्रकृति (ख) साम्राज्यों का गठन (ग) विजय और अन्य राज्यों से सम्बन्ध (घ) यायावार समाजों तथा राज्य के गठन पर इतिहासकारों के विचार।	(10)	• विद्यार्थियों को यायावार समाज एवं उनकी संस्थाओं से परिचित कराना। • क्या यायावार समाजों में राज्यों का गठन संभव है, इसकी चर्चा करना।

खण्ड ग : बदलती परंपराएँ

9. भूमिका (6)	
10. तीन वर्ग (10)	
केन्द्र बिन्दु : पश्चिमी यूरोप, 13-16वीं शताब्दी तक (क) सामंतवादी समाज एवं अर्थव्यवस्था (ख) राज्यों की रचना (ग) चर्च एवं समाज (घ) सामंतवाद के ह्रास पर इतिहासकारों के विचार,	• विद्यार्थियों को समकालीन अर्थव्यवस्था एवं समाज तथा उनमें आए परिवर्तनों से परिचित कराना, • सामंतवाद के पतन पर वाद-विवाद किस प्रकार परिवर्तन की प्रव्यिाओं को समझने में सहायक होता है, यह दर्शित करना।
11. बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराए! (14) **केन्द्र बिन्दु :** यूरोप : 14वीं से 17वीं शताब्दी तक (क) साहित्य और कला में नए विचार एवं नए रूझान। (ख) पूर्ववर्ती विचारों से सम्बन्ध (ग) पश्चिमी एशिया का योगदान। (घ) यूरोप में पुनर्जागरण की धारण की मान्यता	• इस काल में बौद्धिक प्रवृत्तियों की खोज, • विद्यार्थियों को समकालीन रंगचित्रों तथा इमारतों से परिचय। • पुनर्जागरण के विचार पर वाद-विवाद।
12. संस्कृतियों का टकराव (12) **केन्द्र बिन्दु :** 15वीं से 18वीं शताब्दी के बीच अमरीका (क) यूरोपवासियों की खोज यात्राएँ (ख) स्वर्ण की खोज, दास बनाना, छापे मारना। (ग) मूल निवासी एवं संस्कृतियाँ, अराबाकी, एजटेक, इन्का लोग। (घ) विस्थापनों (स्थानान्तरण) का इतिहास। (च) दास व्यापार पर इतिहासकारों के दृष्टिकोण।	• यूरोपीय अर्थव्यवस्था के उन परिवर्तनों पर चर्चा कीजिए जिनके फलस्वरूप समुद्री यात्राएँ हो पाईं। • मूल निवासियों पर विजय के प्रभावों की चर्चा कीजिए। • दास व्यापार की प्रकृति पर वाद-विवाद कीजिए और देखिए कि ऐसा विवाद हमें इन खोजों के अर्थ के बारे में क्या बताता है।

खण्ड-घ : आधुनिकीकरण के रास्ते	**(पीरियड 46)**
13. भूमिका (8)	
14. औद्योगिक क्रान्ति **केन्द्र बिन्दु :** इंग्लैण्ड, 18वीं तथा 19वीं शताब्दी (क) अभिनव तथा तकनीकी परिवर्तन (ख) विकास के प्रतिरूप (ग) श्रमिक वर्ग का उदय (घ) क्या औद्योगिक क्रान्ति हुई थी? इतिहासकारों के दृष्टिकोण।	• इस काल में हुए विकास की प्रछति तथा उसकी सीमाओं को समझिए। • औद्योगिक क्रान्ति विचार पर विद्यार्थियों को वाद-विवाद के लिए प्रेरित कीजिए।
15. मूल निवासियों का विस्थापन (12) • केन्द्र बिन्दु : 18 से 20वीं शताब्दी में उत्तरी अमरीका एवं ऑस्ट्रेलिया। (क) उत्तरी अमरीका तथा ऑस्ट्रेंलिया में यूरोपीय उपनिवेशवादी। (ख) श्वेत प्रवासी समाजों का गठन। (ग) स्थानीय लोगों का विस्थापन एवं दमन (घ) यूरोपीय बसावट के मूल निवासियों पर पड़े प्रभाव पर इतिहासकारों के विचार।	• विद्यार्थियों को, विस्थापनों की प्रक्रियाओं से, जिनके साथ-साथ अमरीका तथा ऑस्ट्रेलिया का विकास हुआ, सुग्राही बनाइए। • विस्थापित लोगों की ऐसी प्रक्रियाओं से तात्पर्य समझाइये।
16. आधुनिकीकरण की विभिन्न राहें (14) **केन्द्र बिन्दु :** पूर्वी एशिया/उत्तर 19वीं व बीसवीं शताब्दी में (क) जापान में सैन्यीकरण एवं आर्थिक विकास (ख) चीन तथा साम्यवादी विकल्प (ग) आधुनिकीकरण पर इतिहासकारों के वाद-विवाद।	• विद्यार्थियों को जागरूक बनाइए कि वे समझें कि आधुनिक विश्व में रूपान्तरण के अनेक रूप हैं। • स्पष्ट कीजिए कि आधुनिकीकरण जैसे विचारों के तर्कसंगत मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों है?
17. मानचित्र कार्य एक से पन्द्रह इकाई तक (10)	**(पीरियड 10)**

पाठ्यक्रम की रूपरेखा

कक्षा XII

प्रश्न पत्र-एक	समय : 3 घण्टे	पीरियड	अधिकतम अंक : 100
इकाई			अंक
खण्ड-I : विश्व इतिहास के विषय		45	25
इकाई 1-4			
खण्ड-II : विश्व इतिहास के विषय		55	30
इकाई 5-9			
खण्ड-III : विश्व इतिहास के विषय		70	35
इकाई 10-15			
इकाई 16 **मानचित्र कार्य**		10	10
		कुल 180	कुल 100

भारतीय इतिहास के विषय

विषय	पीरियड	उद्देश्य
भाग I		
1. **प्रारंभिक नगरों की कहानी,** हड़प्पाई पुरातन्व **सामान्य पर्यवलोकन** : प्रारंभिक शहरी केन्द्र, **खोज की कहानी** : हड़प्पाई सभ्यता **उद्धरण:** मुख्य स्थलों पर पुरातत्वीय रिपोर्ट **विचार-विमर्श** : इसका उपयोग पुरातत्त्ववेत्ता तथा इतिहासकारों ने किस प्रकार किया है।	(11)	• विद्यार्थियों को आर्थिक व सामाजिक संस्थाओं के रूप में प्रारंभिक शहरी केन्द्रों से परिचित कराना • ऐसे तरीकों से परिचित कराना जिनसे नये आंकड़ो की सहायता से इतिहास की • वर्तमान मान्यताओं में संशोधन हो सके। • विद्वानों द्वारा पुरातत्वीय रिपोर्टों के विश्लेषण करने के तरीके को सोदाहरण समझाना।
2. **राजनीतिक एवं आर्थिक इतिहास** : शिलालेख इनकी कहानी कैसे बताते हैं? **सामान्य पर्यावलोकन** : मौर्यकाल से गुप्त काल तक का	(11)	• उपमहाद्वीप के राजनीतिक एवं आर्थिक इतिहास की प्रमुख प्रवृत्तियों से विद्यार्थी

	राजनीतिक एवं आर्थिक इतिहास **खोज की कहानी :** शिलालेख तथा लिपि को पढ़ना, राजनीतिक एवं आर्थिक इतिहास की समझ में परिवर्तन **उद्धरण :** अशोक के शिलालेख एवं गुप्तकालीन भूमि अनुदान **विचार विमर्श :** इतिहासकारों द्वारा शिलालेखों की व्याख्या।	को परिचित करना। ● शिलालेख के विश्लेषण से परिचित कराना और यह बताना कि इनसे राजनीतिक एवं आर्थिक प्रक्रियाओं के बारे में हमारी समझ कैसे बनती है।
3.	**सामाजिक इतिहास :** इतिहास रचने के लिए महाभारत **(12)** का उपयोग **सामान्य पर्यावलोकन :** सामाजिक इतिहास की समस्याएँ: जाति, वर्ग, नातेदारी, लिंगभेद **खोज की कहानी :** महाभारत का संचारण व प्रकाशन **उद्धरण :** महाभारत से इतिहासकारों द्वारा किस प्रकार इसका प्रयोग किया गया, सोदाहरण। **विचार-विमर्श :** सामाजिक इतिहास की पुन: रचना के अन्य स्रोत।	● सामाजिक इतिहास की समस्याओं से परिचित कराना। ● मूलग्रन्थों के विश्लेषण तथा सामाजिक इतिहास की पुनर्रचना में उनके प्रयोग से परिचित कराना।
4.	**बौद्ध धर्म का इतिहास : सांची स्तूप** **(11)** **सामान्य पर्यावलोकन :** (क) वैदिक धर्म, जैनधर्म, वैष्णवधर्म, शैव धर्म की संक्षिप्त समीक्षा (ख) केन्द्र बिन्दु : बौद्धधर्म **खोज की कहानी :** सांची स्तूप **उद्धरण :** सांची की मूर्तियों के चित्रों की व्याख्या **विचार-विमर्श :** वे तरीके जिन से इतिहासकारों ने मूर्तियों की व्याख्या की है बौद्ध धर्म के इतिहास की पुनर्रचना के अन्य स्रोत	● भारत के प्रारंभिक काल में प्रमुख धर्मों की गतिविधियों पर चर्चा ● दृश्य विश्लेषण के तरीकों तथा धार्मिक इतिहास पुनर्रचना में उनके प्रयोग से परिचित कराना।
खण्ड-II		
	5. कृषि सम्बन्ध : आइन-ए-अकबरी **(11)** सामान्य पर्यावलोकन : (क) सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में कृषि सम्बन्धों का ढांचा	● कृषि सम्बन्धों के विकास की गतिविधियों

(ख) इस काल में परिवर्तनों के प्रतिरूप। **खोजों की कहानी :** आइन-ए-अकबरी के सग्रंहण एवं अनुवाद का विवरण **उद्धरण :** आइने ए-अकबरी से **विचार-विमर्श :** इतिहासकारों द्वारा इतिहास की पुन:रचना में प्रयुक्त मूलपाठों का प्रयोग किस प्रकार किया गया है।	की चर्चा करना। • इतिहास लेखन में सरकारी दस्तावेजों का अन्य स्रोतों द्वारा अनुपूरण की विवेचना करना।
6. **मुगल दरबार :** इतिवृत्तों के माध्यम से इतिहास की पुन:रचना **(11)** **सामान्य पर्यावलोकन** (क) 15वीं से 17वीं शताब्दी के दौरान इतिहास की रूपरेखा। (ख) मुगल दरबार तथा राजनीति पर विचार-विमर्श। **खोज की कहानी :** कोर्ट के इतिवृत्तों की रचना-प्रक्रिया का विवरण उनके बाद के समय में किए गए अनुवाद एवं प्रेषण **उद्धरण : अकबरनामा** एवं **पादशाहनामा** से **विचार-विमर्श :** इतिहासकारों द्वारा राजनीतिक इतिहास के निर्माण में मूलपाठों के प्रयोग के तरीके।	• विद्यार्थियों को राजनीतिक इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाओं से परिचित कराना। • दिखाएं कि इतिवृत्त एवं अन्य स्त्रोत राजनीति के संस्थाओं के इतिहास की पुन: रचना में किस प्रकार प्रयुक्त होते हैं।
7. **नवीन वास्तुकला : हम्पी** **(11)** **सामान्य पर्यावलोकन** (क) विजय नगर कालीन मन्दिरों, किलों, सिंचाई सुविधाओं जैसी नई इमारतों की रूपरेखा। (ख) राजनीतिक व्यवस्था एवं वास्तुकला में सम्बन्ध **खोज की कहानी :** हम्पी की खोज की कहानी उद्धरण : हम्पी के भवनों के दृश्य **विचार-विमर्श :** इतिहासकारों ने इन संरचनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या किन तरीकों से की है।	• विद्यार्थियों के समकालीन नवनिर्मित भवनों से परिचित कराना। • उन तरीकों की चर्चा कीजिए जिनसे इतिहास की पुन: रचना में स्थापत्यकला का विश्लेषण किया जा सकता है।
8. **धार्मिक इतिहास: भक्ति-सूफी परम्पराएं** **सामान्य पर्यावलोकन:** (क) इस काल में धार्मिक गतिविधियों की रूपरेखा	• विद्यार्थियों को धार्मिक गतिविधियों से परिचित कराना।

	(ख) भक्ति एवं सूफी सन्तों के विचार और आचार। **संप्रेक्षण की कहानी :** भक्ति एवं सूफी रचनाओं को कैसे सुरक्षित रखा गया है। **उद्धरण :** भक्ति और सूफी ग्रंथों से लिए गए उद्धरण। **विचार विमर्श :** वे तरीके जिनके द्वारा इतिहासकारों ने इन ग्रंथों की व्याख्याएं की हैं।	• भक्ति साहित्य का ऐतिहासिकस्रोत के रूप में, विश्लेषण करने के तरीकों की चर्चा कीजिए।
9.	**यात्रियों के विवरणों के जरिए मध्युगीन समाज।** **सामान्य पर्यावलोकन :** यात्रियों के विवरणों के अनुसार सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन की रूपरेखा। **उनके लेखों की कहानी :** उन्होंने कहां कीं यात्राएं की, यात्राएं क्यों की, उन्होंने क्या लिखा और किनके लिए लिखा इन मुद्दों पर चर्चा। **उद्धरण :** अलबरूनी, इब्नबतूता, बनिर्अर से **विचार विमर्श :** ये यात्रा विवरण हमें क्या बताते हैं और इतिहासकारों ने इन की व्याख्या कैसे की है। **भाग III**	• विद्यार्थियों को यात्रियों द्वारा वर्णित सामाजिक इतिहास की विशेषताओं से परिचित कराना। • विवेचना करना कि यात्रियों के विवरण सामाजिक इतिहास के स्रोत के रूप में कैसे प्रयोग किए जा सकते हैं।
10.	**उपनिवेशवाद तथा ग्रामीण समाज : सरकारी रिपोर्टों से साक्ष्य।** **(क) सामान्य पर्यावलोकन :** अठाहरवीं शताब्दी में जमींदारों, किसानों और शिल्पकारों का जीवन। **(ख)** ईस्ट इंडिया कम्पनी, राजस्व प्रणाली तथा सर्वेक्षण **(ग)** उन्नीसवीं शताब्दी में आये परिवर्तन **सरकारी अभिलेखों की कहानी :** ग्रामीण समाजों की सरकारी जांच क्यों की गई, उसका विवरण तथा तैयार किए गए दस्तावेज एवं रिपोर्ट। **उद्धरण :** फरमिन्गर की पांचवीं रिपोर्ट, फ्रांसिस बुकानन-हैमिल्टन एवं दक्कन दंगों की रिपोर्ट।	• उपनिवेशवाद ने जमींदारों, किसानों और शिल्पकारों को किस प्रकार प्रभावित किया इस पर विद्यार्थियों की चर्चा। • लोगों के जीवन को समझने में सरकारी स्रोतों के प्रयोग की समस्याओं एवं सीमाओं को समझना।

विचार विमर्श : सरकारी दस्तावेज़ क्या कहते हैं और क्या नहीं कहते तथा इतिहासकारों ने उनका प्रयोग किस प्रकार किया है।	
11. 1857 का चित्रण **सामान्य पर्यावलोकन :** (11) (क) 1857-58 की घटनाएं। इन घटनाओं को किस प्रकार दर्ज किया गया तथा इनका वर्णन किस प्रकार किया गया। **केन्द्र बिन्दु :** लखनऊ **उद्धरण :** 1857 के चित्र, समकालीन विवरणों से उद्धरण **विचार विमर्श:**1857 के चित्रों ने उस विद्रोह के प्रति अंग्रेजों के विचारों को किस प्रकार प्रभावित किया?	● 1857 की घटनाओं की किस प्रकार पुनः व्याख्या की जा रही है, इस पर चर्चा। ● दृश्य सामग्री का इतिहासकारों द्वारा किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है विवेचन इसका।
12. औपनिवेशिकवाद एवं भारतीय शहर, नगरयोजना एवं नगरीय रिपोर्ट (11) **सामान्य पर्यावलोकन :** अठारहवीं व उन्नीसवीं शताब्दी में मुंबई, चिन्नई, का विकास, पर्वतीय सैरगाह, छावनियां का विकास **उद्धरण :** फोटो और पेंन्टिगं (रगं चित्र) नगरों की योजनाएं, नगर योजना रिपोर्टों से उद्धरण। केन्द्र बिन्दु कलकत्ता की नगरयोजना पर विशेष बल **विचार विमर्श:** उपरोक्त स्रोत नगरों के इतिहास के निर्माण में किस प्रकार प्रयुक्त हो सकते हैं? ये स्रोत क्या नहीं प्रदर्शित करते हैं।	● विद्यार्थियों को आधुनिक शहरी केन्द्रों से परिचय। ● विभिन्न प्रकार स्रोतों के माध्यम से नगरीय इतिहास किस प्रकार लिखा जा सकता है, इस पर चर्चा।
13. समकालीन दृष्टि से महात्मा गाँधी (13) सामान्य पर्यावलोकन (क) 1918-1948 के मध्य राष्ट्रीय आन्दोलन, (ख) गांधीवादी राजनीति एवं नेतृत्व की प्रकृति **केन्द्र बिन्दु :** 1931 में महात्मा गांधी। **उद्धरण :** भारतीय एवं अंग्रेजी भाषा के समाचार पत्रों की रिपोर्ट एवं अन्य समकालीन लेख।	● राष्ट्रीय आन्दोलन के महत्त्वपूर्ण तत्त्वों तथा गांधी जी के नेतृत्व की प्रकृति से विद्यार्थियों से परिचय। ● विभिन्न समूह गांधी जी को किस प्रकार समझते थे, इस पर चर्चा। ख इतिहासकारों को समाचार पत्र, डायरियां

विचार विमर्श-समाचार पत्र किस प्रकार इतिहास लेखन के स्रोत हो सकते हैं।	तथा पत्र ऐतिहासिक स्रोतों के रूप में कैसे पढ़ने चाहिए और उनकी व्याख्या।
14. विभाजन : मौखिक स्रोतों के आधार पर सामान्य पर्यवलोकन (क) 1940 के दशक का इतिहास, (ख) राष्ट्रवाद, साम्प्रदायिकतावाद और विभाजन **केन्द्र बिन्दु :** पंजाब और बंगाल **उद्धरण :** विभाजन के अनुभवी व्यक्तियों की मौखिक गवाही। **विचार विमर्श :** विभाजन के इतिहास की पुन:रचना में मौखिक गवाहियों का विविध विश्लेषण।	• राष्ट्रीय आन्दोलन के अन्तिम दशक, सांप्रदायिकता के विकास और विभाजन की कहानी की चर्चा। • सांप्रदायिक हिंसा से गुज़रने वाले लोगों के अनुभवों से उस समय की घटनाओं को समझाना। • मौखिक स्रोतों की संभावनाओं और सीमाओं को स्पष्ट करना।
15. संविधान का निर्माण सामान्य पर्यावलोकन (क) स्वतंत्रता एवं नवराष्ट्र-राज्य, (ख) संविधान का निर्माण **केन्द्र बिन्दु :** संविधान सभा में वाद-विवाद **उद्धरण :** वाद विवादों से **विचार विमर्श :** ये वाद-विवाद क्या दर्शाते हैं तथा उनका विश्लेषण कैसे किया जा सकता है।	ख विद्यार्थियों को स्वतंत्रता के पश्चात् के प्रारंभिक वर्षों के इतिहास से परिचय। • नवराष्ट्र राज्य के आदर्शों की स्थापना के निमित्त हुई बहस और उन आदर्शों को सूत्र रूप में रखने का विवेचन करना। • समझना कि इस प्रकार की बहसें व चर्चाएं किस प्रकार से पढ़ी जा सकती हैं।

16. मानचित्र कार्य इकाई 1-15 तक का।

संस्तुत पाठ्यपुस्तकें :

1. विश्व इतिहास के विषय, कक्षा XI, एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित

1. भारतीय इतिहास के विषय, भाग-I, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।
2. भारतीय इतिहास के कुछ अंश भाग-II, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।
3. भारतीय इतिहास के कुछ अंश भाग-III, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।

22. राजनीति विज्ञान (कोड संख्या 028)

मूलाधार

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर राजनीति विज्ञान को एक विषय के रूप में चुनने वाले विद्यार्थियों को राजनीतिक वैज्ञानिक के चिन्तन के विविध मुद्दों से परिचित करवाने का अवसर प्रदान किया जाता है। इस स्तर पर, विद्यार्थियों को उनके इर्द-गिर्द की राजनीतिक प्रक्रियाओं से जोड़ने तथा उन प्रक्रियाओं को वर्तमान रूप देने वाले ऐतिहासिक सन्दर्भ को समझ पाने के योग्य बनाने की आवश्यकता है। राजनीति विज्ञान के विभिन्न विषय विद्यार्थियों को विषय की विभिन्न धाराओं : राजनीतिक सिद्धान्त, भारतीय राजनीति तथा अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति से अवगत कराते हैं। अन्य दो धाराओं तुलनात्मक राजनीति और लोकप्रशासन के मुद्दों को भी पाठ्यक्रम में समुचित स्थानों पर समायोजित किया गया है। इन विभिन्न धााराओं से परिचय कराते समय, इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थियों को विषय के शब्दजाल से बोझिल न किया जाए। यहाँ पूर्व स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों में इस विषय के प्रति रुचि उत्पन्न करने का विचार प्रमुख ही रहा है।

उद्देश्य :

भारतीय संविधान सिद्धांत और व्यवहार

- विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना ताकि वे उन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं तथा परिस्थितियों को समझ सकें, जिनके अन्तर्गत भारत के संविधान का प्रारूप तैयार हुआ।
- विद्यार्थियों को ऐसा अवसर प्रदान करना, जिससे वे उन विभिन्न दृष्टिकोणों से अवगत हों जिनसे भारतीय संविधान निर्माताओं का पथ-प्रदर्शन हुआ।
- विद्यार्थियों को इस योग्य बनाना, जिससे वे संविधान की मौलिक विशेषताओं को पहचान सकें तथा विश्व के अन्य संविधानों के साथ तुलना कर सकें।
- वे उन अनेक तरीकों का विश्लेषण कर सकें, जिनके द्वारा संवैधानिक प्रावधानों ने वास्तविक राजनीतिक जीवन में उन्हें कार्यान्वित किया है।

राजनीतिक सिद्धांत

- विवेकपूर्ण-तर्क शक्ति एवं निष्कर्ष निकालने के कौशल को विकसित करना।
- केवल अपने ही नहीं अपितु दूसरों के दृष्टिकोणों का सम्मान करते हुए मनन एवं चिन्तन करना।
- सामान्य सामाजिक जीवन तथा आधुनिक राजनीतिक जीवन के साथ-साथ राजनीतिक दार्शनिकों के चिन्तन के मुद्दों से विद्यार्थियों को परिचित करना।
- सामयिक राजनीतिक जीवन की चिन्ताओं, जिनसे विद्यार्थी घिरे हुए हैं, उनके बारे में उन्हें अर्थपूर्ण भागीदारी के योग्य बनाना।
- विरासत में प्राप्त विभिन्न अपरीक्षित पूर्वाग्रहों का विश्लेषण करने के लिए प्रोत्साहित करना।

स्वतन्त्र भारत में राजनीति

- उत्तर-स्वतंत्रता-काल में घटित महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं तथा व्यक्तियों से छात्रों को अवगत कराने के योग्य बनाना।
- हाल ही की ऐतिहासिक घटनाओं एवं प्रक्रियाओं के राजनीतिक विश्लेषण द्वारा कौशल का विकास करना।

- बृहत् प्रक्रियाओं तथा सूक्ष्म परिस्थितियों से स्वयं को जोड़ने की क्षमता का विकास करना।
- समकालीन भारत के अर्थपूर्ण ज्ञान के लिए, ऐतिहासिक परिदृश्य द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना।

समकालीन विश्व राजनीति

- विद्यार्थियों के ज्ञान को भारत तक ही सीमित न रखते हुए, समकालीन विश्व के राजनीतिक मानचित्र को पहचानने के योग्य बनाना।
- विद्यार्थियों को उत्तर शीत-युद्ध युग की विभिन्न महत्त्वपूर्ण घटनाओं तथा प्रक्रियाओं से अवगत कराना।
- हमारे दैनिक जन जीवन को वैश्विक घटनाएँ तथा प्रक्रियाएँ किस प्रकार प्रभावित करती हैं, इस की जानकारी के लिए विद्यार्थियों को सचेत करना।
- समकालीन मुद्दों का राजनीतिक विश्लेषण ऐतिहासिक परिदृश्य में करने की क्षमता को सुदृढ़ करना।

कक्षा XI

प्रश्न पत्र-एक **समय-3 घण्टे** **अंक 100**

इकाई		पीरियड	अंक
भाग-क : भारत का संविधान-सिद्धांत और व्यवहार			
1.	संविधान : क्यों और कैसे ?	12	10
2.	भारतीय संविधान में अधिकार	12	
3.	चुनाव और प्रतिनिधित्व	10	
4.	विधायिका	10	10
5.	कार्यपालिका	10	
6.	न्यायपालिका	10	10
7.	संघवाद	10	
8.	स्थानीय शासन	10	10
9.	संविधान-एक जीवंत दस्तावेज	10	
10.	संविधान का राजनीतिक दर्शन	10	10
		104	50
भाग-ख : राजनीतिक सिद्धांत			
11.	राजनीतिक सिद्धांत: एक परिचय	10	10
12.	स्वतंत्रता	10	

13. समानता	10	10
14. सामाजिक न्याय	12	
15. अधिकार	10	10
16. धार्मनिरपेक्षता	10	
17. राष्ट्रवाद	10	10
18. नागरिकता	10	
19. शांति	10	10
17. विकास	10	
	102	**50**

भाग-क : संविधान-सिद्धांत और व्यवहार

पीरियड

1. **संविधान-क्यों और कैसे? संविधान की सत्ता** 12

संविधान की क्यों आवश्यकता है?

2. **भारतीय संविधान में अधिकार** 12

अधिकारों का महत्व, भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार, राज्य की नीति के निदेशक तत्व, मौलिक अधिकारों तथा निर्देशक तत्वों में सम्बन्ध।

3. **चुनाव और प्रतिनिधित्व** 10

चुनाव और लोकतंत्र, भारत में चुनाव व्यवस्था, निर्वाचन क्षेत्रों का आरक्षण, स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव, चुनाव सुधार।

4. **विधायिका** 10

हमें संसद क्यों चाहिए? संसद के दो सदन। संसद के कार्य एवं शक्तियां। विधायी कार्य, कार्यपालिका पर नियंत्रण, संसदीय समितियां, स्व-नियमन।

5. **कार्यपालिका** 10

कार्यपालिका क्या है? विभिन्न प्रकार की कार्यपालिकाएँ। भारत में संसदीय कार्यपालिका : प्रधान मंत्री तथा मंत्री-परिषद्। स्थायी कार्यपालिका-नौकरशाही।

6. **न्यायपालिका** 10

हमें स्वतंत्र न्यायपालिका क्यों चाहिए? न्यायपालिका की संरचना, न्यायिक सक्रियता, न्यायपालिका और अधिकार, न्यायपालिका और संसद।

7. संघवाद 10

संघवाद क्या है? भारतीय संविधान में संघवाद, सशक्त केन्द्रीय सरकार और संघवाद, भारतीय संघीय व्यवस्था में संघर्ष, विशेष प्रावधान।

8. स्थानीय शासन 10

हमें स्थानीय सरकारों की क्यों आवश्यकता है? भारत में स्थानीय शासन का विकास, 73वाँ और 74 वाँ संशोधन, 73वें और 74वें संशोधन का क्रियान्वयन।

9. संविधान एक जीवंत दस्तावेज 10

क्या संविधान अपरिवर्तनीय होते हैं? संविधान की संशोधन प्रक्रिया। संविधन में इतने संशोधन क्यों? संविधान की मूल संरचना तथा उसका विकास। संविधान-एक जीवंत दस्तावेज।

10. संविधान का राजनीतिक दर्शन 10

संविधान के दर्शन का क्या आशय है? हमारे संविधान का राजनीतिक दर्शन क्या है? प्रक्रियागत उपलब्धियाँ, आलोचनाएँ।

भाग-ख : राजनीतिक सिद्धांत

पीरियड

11. राजनीतिक सिद्धांत: एक परिचय 10

राजनीति क्या है? राजनीतिक सिद्धांत में हम क्या पढ़ते हैं? राजनीतिक सिद्धांतों का व्यवहार में उतारना। हमें राजनीतिक सिद्धांत क्यों पढ़ना चाहिए?

12. स्वतंत्रता 10

स्वतंत्रता का आदर्श। स्वतंत्रता क्या है? हमें प्रतिबंधों की आवश्यकता क्यों है? हानि सिद्धांत। सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वतंत्रता।

13. समानता

समानता का महत्व। समानता क्या है? समानता के विभिन्न आयाम। हम समानता को बढ़ावा (प्रोत्साहन) कैसे दे सकते हैं?

14. सामाजिक न्याय 12

न्याय क्या है? न्यायपूर्ण निष्पक्षपता एवं न्याय। सामाजिक न्याय का अनुसरण।

15. अधिकार 10

अधिकार क्या हैं? अधिकार कहाँ से आते हैं? कानूनी अधिकार और राज्य सत्ता। अधिकारों के प्रकार। अधिकार और जिम्मेदारियाँ।

16. धर्म निरपेक्षता **11**

धर्म निरपेक्षता क्या है? धर्म निरपेक्ष राज्य क्या हैं? धर्म-निरपेक्ष के सम्बन्ध में पाश्चात्य तथा भारतीय दृष्टिकोण। भारतीय धर्म-निरपेक्षता की आलोचनाएँ तथा तर्काधार।

17. राष्ट्रवाद **10**

राष्ट्रवाद क्या है? राष्ट्र एवं राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय आत्म-निर्णय, राष्ट्रवाद तथा बहुलवाद

18. नागरिकता **11**

नागरिक तथा राष्ट्र, सार्वभौमिक नागरिकता, विश्व नागरिकता।

19. शान्ति **10**

शान्ति क्या है? क्या हिंसा कभी शांति को प्रोत्साहित कर सकती है? शांति एवं राज्य,

सत्ता शांति कायम करने के विभिन्न तरीके शांति के लिए समकालीन चुनौतियाँ।

20. विकास **10**

विकास क्या है? प्रबल/प्रभावी विकास मॉडल की आलोचनाएँ। विकास की

वैकल्पिक अवधारणा।

संस्तुत पाठ्य्यपुस्तकें :

वैश्वीकरण की चुनौती एवं उत्तर: नई आर्थिक नीति एवं उसका विरोध उत्तरी भारत में अन्य पिछड़ी जातियों का उत्थान। चुनावी एवं गैर चुनावी क्षेत्रों में दलित राजनीति की चुनौतियाँ: अयोध्या गुजरात देंगें।

कक्षा XII

भाग-क : समकालीन विश्व राजनीति

इकाई		पीरियड	अंक
1.	विश्व राजनीति में शीतयुद्ध का दौर	14	14
2.	द्वितीय विश्व का विघटन तथा दो ध्रुवीयता का अंत	12	
3.	विश्व राजनीति में अमरीकी वर्चस्व	12	
4.	आर्थिक एवं राजनीतिक सत्ता के वैकल्पिक केंद्र	10	16
5.	शीतयुद्ध के अंत के दौर में दक्षिणी एशिया	12	
6.	एक ध्रुवीय विश्व में अंतर्राष्ट्रीय संगठन	12	10
7.	समकालीन विश्व में सुरक्षा	10	
8.	पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन	10	10
9.	वैश्वीकरण एवं इसकी आलोचना	12	
		102	**50**

भाग-ख : स्वतंत्र भारत में राजनीति

10.	राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियाँ	12	16
11.	एक दल के प्रभुत्व का दौर	12	
12.	नियोजित विकास की राजनीति	10	
13.	भारत के विदेश संबंध	12	6
14.	कांग्रेस प्रणाली चुनौतियाँ और पुनर्स्थापना	12	12
15.	संवैधानिक व्यवस्था का संकट	12	
16.	क्षेत्रीय आकांक्षाएँ एवं संघर्ष	10	
17.	नए जन आंदोलनों का उदय 16	10	16
18.	भारतीय राजनीति में नए बदलाव	12	
		102	**50**

भाग-क : समकालीन विश्व राजनीति

विषय सूची

1. **विश्व राजनीति में शीत युद्ध का दौर** — **14 पीरियड**

   द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् दो महाशक्तियों के गुटों का आरम्भ। शीत युद्ध के दायरे। दो-ध्रुवीयता को चुनौतियाँ : गुटनिरपेक्ष आंदोलन, नव अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की खोज। भारत और शीतयुद्ध।

2. **दूसरे विश्व का विघटन तथा दो-ध्रुवीयता का अंत** — **12 पीरियड**

   विश्व राजनीति में नए अस्तित्व:रूस, बाल्कान राज्य तथा मध्य एशिया के राज्य, जनतांत्रिक राजनीति एवं पूंजीवाद का आगमन तथा उत्तर साम्यवादी शासन। भारत का रूस तथा अन्य उत्तर साम्यवादी देशों के साथ संबंध।

3. **विश्व राजनीति में अमरीकी वर्चस्व** — **12 पीरियड**

   एक-पक्षवाद का विस्तार : अफगानिस्तान, प्रथम खाड़ी युद्ध, 9/11 के प्रति प्रतिक्रिया तथा इराक पर आक्रमण।

   आर्थिक तथा वैचारिक क्षेत्रों में अमरीकी वर्चस्व तथा उसे चुनौतियाँ। अमरीका के साथ भारत के संबंधों का नवीकरण।

4. **आर्थिक एवं राजनीतिक सत्ता के वैकल्पिक केन्द्र** — **10 पीरियड**

   चीन का आर्थिक शक्ति के रूप में उत्तर-माओवादी दौर में उत्थान, यूरोपीय संघ की रचना एवं विस्तार, आसियान, भारत-चीन संबंधों में बदलाव।

5. **उत्तर-शीत युद्ध दौर में दक्षिणी एशिया** — **12 पीरियड**

   पाकिस्तान तथा नेपाल में जनतांत्रिक तथा पलटाव। श्रीलंका में जातीय संघर्ष, आर्थिक वैश्वीकरण का इस क्षेत्र पर प्रभाव। दक्षिणी एशिया में संघर्ष तथा शांति संबंधी प्रयास। भारत के पड़ौसी देशों के साथ संबंध।

6. **एक ध्रुवीय विश्व में अंतर्राष्ट्रीय संगठन** **12 पीरियड**

संयुक्त राष्ट्र का पुनर्गठन एवं भविष्य। पुनर्गठित संयुक्त राष्ट्र में भारत का स्थान। नए अंतर्राष्ट्रीय पात्रों का उदय : नए अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन, गैर-सरकारी संगठन। नई वैश्वीय शासित संस्थाएँ कहाँ तक लोकतांत्रिक तथा उत्तरदायी हैं?

7. **समकालीन विश्व में सुरक्षा** **12 पीरियड**

सुरक्षा संबंधी पारंपरिक चिंताएँ तथा निरस्त्रीकरण संबधी नीतियाँ। अपारंपरिक अथवा मानवता की सुरक्षा : वैश्विक गरीबी, स्वास्थ्य एवं शिक्षा। स्थानान्तरण एवं मानवाधिकार संबंधी विषय।

8. **विश्व राजनीति में पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन** **10 पीरियड**

पर्यावरणीय आंदोलन तथा वैश्विक पर्यावरणीय मानक का विकास। परंपरागत तथा सांझी सम्पदा संबंधी संघर्ष। मूलवासी और उनके अधिकार। वैश्विक पर्यावरण संबंधी विवाद पर भारत का पक्ष।

9. **वैश्वीकरण तथा इसके आलोचक** **12 पीरियड**

आर्थिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक प्रदर्शन।

वैश्वीकरण के परिणामों की प्रकृति संबंधी विवाद

वैश्वीकरण विरोधी आंदोलन। वैश्वीकरण के कार्यक्षेत्र में भारत तथा इसके विरोध में संघर्ष।

भाग-ख : स्वतंत्र भारत में राजनीति

10. **राष्ट्र-निर्माण की चुनौतियाँ** **12 पीरियड**

राष्ट्र-निर्माण के बारे में नेहरू की सोच : भारत विभाजन की पैतृक सम्पत्ति : शरणार्थियों के पुनर्स्थापन की चुनौती, काश्मीर समस्या। राज्यों का गठन एवं पुनर्गठन, भाषा को लेकर राजनीतिक संघर्ष।

11. **एक दल के प्रभुत्व का दौर**

प्रथम तीन आम चुनाव, राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के प्रभुत्व की प्रकृति, राज्य स्तर पर प्रभुत्व की असमतलता, कांग्रेस की गठबन्धनता की प्रकृति। प्रमुख विपक्षी दल।

12. **नियोजित विकास की राजनीति** **10 पीरियड**

पंचवर्षीय योजनाएँ, राज्य-क्षेत्र की व्यापकता तथा नवीन आर्थिक हितों का उद्‌गम। अकाल एवं पंचवर्षीय योजनाओं का निलम्बन। हरित क्रांति तथा इसमें राजनीतिक बदलाव।

13. **भारत के विदेश संबंध**

नेहरू की विदेश नीति। 1962 का भारत-चीन युद्ध, 1965 तथा 1971 के भारत-पाक युद्ध, भारत का परमाणु-कार्यक्रम तथा विश्व राजनीति के बदलते समीकरण।

14. **कांग्रेस प्रणाली : चुनौतियाँ** **10 पीरियड**

नेहरु के पश्चात् राजनीतिक उत्तराधिकार। गैर-कांग्रेसवाद तथा 1967 के चुनाव परिणामों में परिवर्तन संविधान की सत्ता की झलक। कांग्रेस में विभाजन तथा पुनर्गठन, 1971 के चुनाव में कांग्रेस की जीत, 'गरीबी हटाओ' की राजनीति।

15. संवैधानिक व्यवस्था का संकट **12 पीरियड**

नौकरशाही तथा न्यायपालिका की 'प्रतिबद्धता' की खोज। गुजरात में नवनिर्माण आंदोलन तथा बिहार आंदोलन। आपात्काल : प्रसंग, संवैधानिक एवं अतिरिक्त संवैधानिक परिमाण, आपात्काल का विरोध। 1977 के चुनाव तथा जनता पार्टी का उदय। नागरिक स्वतंत्रताओं संबंधी संगठनों का उद्गम।

16. क्षेत्रीय आकांक्षाएँ एवं संघर्ष **10 पीरियड**

क्षेत्रीय दलों का उदय। पंजाब में संकट-स्थिति तथा 1984 के सिख विरोधी दंगें। काश्मीर की स्थिति। उत्तरपूर्वी भारत में चुनौतियाँ तथा प्रतिक्रियाएँ।

17. नए सामाजिक आंदोलनों का उदय **10 पीरियड**

किसान आंदोलन, महिला आंदोलन, पर्यावरण तथा विकास-प्रभावित जन आंदोलन। मंडल आयोग की रपट का व्यवहारीकरण तथा उसके परिणाम।

18. भारतीय राजनीति में नए विकास **12 पीरियड**

1990 में सहभागिता का उमड़ाव। जनता दल तथा भारतीय जनता पार्टी का उदय। क्षेत्रीय दलों की बढ़ती भूमिका और गठबंधन की राजनीति। राष्ट्रीय मोर्चा तथा राष्ट्रीय जनतांत्रिक सरकार। चुनाव 2004 तथा संप्रग सरकार।

संस्तुत पाठ्यपुस्तकें :

1. भारत का संविधान, कक्षा - XI, एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित
2. राजनीति सिद्धांत, भाग-II, एन सी ई. आर. टी द्वारा प्रकाशित
3. समकालीन विश्व राजनीति, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।
4. स्वतंत्र भारत में राजनीति, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।

23. भूगोल (कोड सं. - 029)

मूलाधार

भूगोल को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर एक वैकल्पिक विषय के रूप में समाविष्ट किया गया है। दस वर्ष की सामान्य शिक्षा के उपरांत विद्यार्थी इस स्तर के प्रारंभ होने पर विभिन्न शाखाओं में बँट जाते हैं तथा पहली बार उनका परिचय विषय की कठिनाइयों से होता है। उच्चतर शिक्षा के प्रवेशद्वार पर खड़े विद्यार्थी अपनी शैक्षिक रुचियों को बढ़ावा देने के लिए भूगोल को चुनते हैं। इसीलिए उन्हें विषय की अधिक विस्तृत और गहन समझ की आवश्यकता होती है। अन्य विद्यार्थियों के लिए भौगोलिक ज्ञान दैनिक जीवन में उपयोगी होता है, क्योंकि यह युवा वर्ग की शिक्षा का लाभदायक माध्यम है। भूगोल का योगदान अपनी विषय-वस्तु संज्ञान प्रक्रियाओं, कुशलताओं और उन मूल्यों में निहित है, जिनको यह प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार यह संसार के पर्यावरणीय और सामाजिक आयामों के अन्वेषण, समझ और मूल्यांकन में विद्यार्थियों की मदद करता है।

भूगोल लोगों और उनके पर्यावरण के अंतर्संबंधों की खोज करता है। इसीलिए इसमें भौतिक और मानव-पर्यावरणों तथा स्थानीय, राज्य/प्रादेशिक, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर उनकी अन्योन्य क्रियाओं को शामिल किया गया है। अतः धरातल पर भौतिक और मानवीय लक्षणों और परिघटनाओं के वितरणात्मक प्रतिरूपों के लिए जिम्मेदार आधारभूत सिद्धान्तों को ठीक-ठीक समझना ज़रूरी है। इन सिद्धान्तों का अनुप्रयोग संसार और भारत के चयनित विशिष्ट अध्ययनों के द्वारा किया जाएगा। इस प्रकार भारत के भौतिक और मानवीय पर्यावरण तथा भौगोलिक दृष्टि से कुछ मुद्दों का अधिक विस्तार से अध्ययन किया जाएगा। विद्यार्थी भौगोलिक अनुसंधान में प्रयुक्त विभिन्न विधियों से परिचित हो जाएंगे।

उद्देश्य

भूगोल का पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों की निम्नलिखित में सहायता करेगा :

- भूगोल की पारिभाषिक शब्दावली, मूल संकल्पनाओं और मूल सिद्धान्तों से परिचित कराएगा।
- पृथ्वी तल के प्राकृतिक तथा मानवीय लक्षणों और परिघटनाओं के स्थानिक विन्यास की प्रक्रियाओं और प्रतिरूपों की खोज, पहचान तथा समझ पैदा करेगा।
- भौतिक और मानवीय पर्यावरणों के अंतर्संबंधों और उनके प्रभाव को समझने और विश्लेषण करने में सहायक होगा।
- स्थानीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय और भूमंडलीय स्तर की नई परिस्थितियों या समस्याओं में भौगोलिक ज्ञान और अन्वेषण की विधियों का प्रयोग करेगा।
- आँकड़ों/सूचनाओं के संग्रह, संसाधन और विश्लेषण तथा मानचित्र व आरेख सहित रिपोर्ट तैयार करने और जहाँ कहीं संभव हो, कंप्यूटर के उपयोग से संबंधित भौगोलिक कुशलताओं का विकास करेगा।
- समाज से संबंधित मुद्दों जैसे पर्यावरणीय मुद्दे सामाजिक-आर्थिक समस्याओं और स्त्री-पुरुष संबंधी समस्याओं के समझने में भौगोलिक ज्ञान का उपयोग करेगा तथा समाज का जिम्मेदार और प्रभावी सदस्य बनेगा।

कक्षा-11

एक सैद्धांतिक प्रश्न पत्र-एक	समय : 3 घंटे	पूर्णांक : 70
भाग (क) भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत		**35 अंक**
इकाई-1 : भूगोल एक विषय के रूप में		3
इकाई-2 : पृथ्वी		5
इकाई-3 : भू-आकृतियां		8
इकाई-4 : जलवायु		10
इकाई-5 : जल (महासागर)		4
इकाई-6 : पृथ्वी पर जीवन		3
इकाई-7 : मानचित्र कार्य		2
भाग (ख) भारत : भौतिक पर्यावरण		**35 अंक**
इकाई-8 : विषय-प्रवेश		3
इकाई-9 : भू-आकृति विज्ञान		10
इकाई-10 : जलवायु, वनस्पति और मृदा		10
इकाई-11 : प्राकृतिक संकट और विपदाएं		9
इकाई-12 : मानचित्र कार्य		3
भाग (ग) प्रायोगिक कार्य	**40 पीरियड**	**30 अंक**
इकाई-1 : मानचित्रों के सिद्धांत	12	10
इकाई-2 : स्थलाकृतिक और मौसम मानचित्र	28	15
इकाई-3 : प्रायोगिक अभिलेख पुस्तिका और मौखिक परीक्षा		5

भाग (क) भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत **75 पीरियड**

इकाई-1 : भूगोल, एक विषय के रूप में **3 पीरियड**

- भूगोल एक संयोजक और स्थानिक विशेषताओं के विज्ञान के रूप में।
- भूगोल की शाखाएं, भौतिक भूगोल का महत्व।

इकाई-2 : पृथ्वी **10 पीरियड**

- पृथ्वी की उत्पत्ति और विकास, पृथ्वी का अभ्यंतर,
- वैगनर का महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत और प्लेट विवर्तनिकी,
- भूकंप और ज्वालामुखी।

इकाई-3 : भू-आकृतियां **18 पीरियड**

- शैल : शैलों के प्रमुख प्रकार और उनकी विशेषताएं,
- भू-आकृतियां और उनका विकास,
- भू-आकृतिक प्रक्रम : अपक्षय, बृहत् क्षरण, अपरदन और निक्षेपण, मृदा-रचना।

इकाई-4 : जलवायु **30 पीरियड**

- वायुमंडल-संघटन और संरचना, मौसम और जलवायु के तत्व।
- सूर्यातप-आपतन-कोण और वितरण, पृथ्वी का ऊष्मा बजट वायुमंडल का तापमान और शीतलन (चालन, संवहन,पार्थिव विकिरण और अभिवहन, तापमान, तापमान नियंत्रक कारक, तापमान का वितरण-क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर, तापमान का व्युत्क्रमण।
- वायुमंडलीय दाब-वायुदाब कटिबंध; पवनें- भूमंडलीय, मौसमी तथा स्थानीय; वायुराशियों और वाताग्र; उष्णकटिबंधीय तथा बहिरुष्ण कटिबंधीय चक्रवात।
- वर्षण वाष्पीकरण, संघनन ओस, तुषार, कुहरा, कुहासा और बादल, वर्षा प्रकार और विश्व में वितरण।
- विश्व की जलवायु वर्गीकरण (कोपेन), पौधघर प्रभाव, भूमंडलीय तापन और जलवायवी परिवर्तन।

इकाई-5 : जल (महासागर) **8 पीरियड**

- जलीय चक्र
- महासागर-तापमान और लवणता का वितरण, महासागरीय जल की गतियाँ-तरंगें, ज्वार-भाटा और धाराएं; अंत:समुद्री उच्चावच।

इकाई-6 : पृथ्वी पर जीवन **6 पीरियड**

- जीवमंडल-पादपों और अन्य जीवों का महत्व; जैव विविधता तथा संरक्षण; पारितंत्र और पारिस्थितिक संतुलन।

इकाई-7 : विश्व के राजनीतिक रेखा मानचित्र में ऊपर दी गई इकाइयों पर आधारित लक्षणों की पहचान का मानचित्र कार्य

भाग (ख) भारत भौतिक पर्यावरण **65 पीरियड**

इकाई-8 : विषय-प्रवेश **3 पीरियड**

- स्थिति-स्थानिक संबंध और भारत का विश्व में स्थान।

इकाई-9 : भू-आकृति विज्ञान **23 पीरियड**

- संरचना और उच्चावच
- अपवाह तंत्र: जलविभाजक/जलसंभर की संकल्पना; हिमालयी और प्राय:द्वीपीय,
- भू-आकृतिक विभाग

इकाई-10 : जलवायु, वनस्पति और मृदा **23 पीरियड**

- मौसम और जलवायु-तापमान का स्थानिक और कालिक वितरण, वायुदाब, पवनें और वर्षा, भारतीय मानसून, रचनातंत्र, आगम और प्रत्यावर्तन, वर्षा की परिवर्तिता, स्थानिक और कालिक, जलवायु के प्रकार (कोपेन)
- प्राकृतिक वनस्पति-वनों के प्रकार और वितरण, वन्य जीवन, संरक्षण, जीवमंडल आरक्षित क्षेत्र।
- मृदा-प्रमुख प्रकार (आई.सी.ए.आर. अर्थात् भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा किया गया वर्गीकरण) और उनका वितरण, मृदा का निम्नीकरण और संरक्षण।

इकाई-11 : प्राकृतिक संकट और विपदाएं : कारण, परिणाम और प्रबंधन (प्रत्येक शीर्षक के लिए एक विशिष्ट अध्ययन का निर्धारण) **16 पीरियड**

- बाढ़ और सूखा
- भूकंप और सुनामी
- चक्रवात
- भू-स्खलन

इकाई-12 : मानचित्र कार्य : भारत के राजनीतिक रेखा-मानचित्र में ऊपर दी गई इकाइयों पर आधारित लक्षणों का स्थान निर्धारण तथा और नामांकन संबंधी मानचित्र कार्य।

भाग (ग) प्रायोगिक कार्य **40 पीरियड**

इकाई-1 : मानचित्रों के सिद्धांत **12 पीरियड**

मानचित्र-प्रकार, मापनी-प्रकार: साधारण रैखिक मापनी की रचना, दूरी मापन, दिशा ज्ञात करना और प्रतीकों (चिन्हों) का उपयोग।

अंक्षाश, देशांश व समय

मानचित्र प्रक्षेप प्ररूपता, प्रक्षेपों की रचना और विशेषताएं, एक मानक अक्षांश शांकव प्रक्षेप और मर्केटर का प्रक्षेप

इकाई-2 : स्थलाकृतिक और मौसम मानचित्र **28 पीरियड**

- स्थलाकृतिक मानचित्रों का अध्ययन (1 : 50,000 या 1 : 25000 मापनी पर निर्मित भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा प्रकाशित मानचित्र) समोच्च रेखाएं और अनुप्रस्थ काट और भू-आकृतियों की पहचान, ढाल, पहाड़ी, घाटी, जल-प्रपात, भृगु, बस्तियों का वितरण।
- वायव फोटो : प्रकार और ज्यामिती ऊर्ध्वाधर वायव फोटो, मानचित्रों और वायव फोटो में अन्तर, फोटो की मापनी निर्धारण।
- उपग्रह चित्र : सुदूर संवेदन में अवस्थाएं: आंकड़ा (डेटा) अर्जन, प्लेटफार्म और संवेदक तथा आंकड़ा उत्पाद (फोटोग्राफीय और अंकीय)
- वायव फोटो और उपग्रह चित्रों से भौतिक और सांस्कृतिक लक्षणों की पहचान, मौसम उपकरणों का उपयोग, तापमापी, शुष्कार्द बल्ब तापमापी, वायुदाब मापी, वात-दिग्दर्शी, वर्षा मापी मौसम चार्टों का उपयोग, वायुदाब, पवन और वर्षा के वितरण का वर्णन करना।

इकाई-3 : प्रायोगिक अभिलेख पुस्तिका और मौखिक परीक्षा।

संस्तुत पाठ्यपुस्तकें :

1. भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।
2. भारत : भौतिक पर्यावरण, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।
3. भूगोल में प्रायोगिक कार्य, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।

कक्षा-12

सैद्धांतिक प्रश्न प्रत्र-एक	**समय : 3 घंटे**	**पूर्णांक : 70**
(क) मानव भूगोल के मूल सिद्धान्त		**35 अंक**
इकाई-1 : मानव भूगोल		3
इकाई-2 : लोग		5
इकाई-3 : मानव क्रियाकलाप		10
इकाई-4 : परिवहन, संचार और व्यापार		10
इकाई-5 : मानव बस्तियां		5
इकाई-6 : मानचित्र कार्य		2
(ख) भारत : लोग और अर्थव्यवस्था		**35 अंक**
इकाई-7 : लोग		5
इकाई-8 : मानव बस्तियां		4
इकाई-9 : संसाधन और विकास		12
इकाई-10 : परिवहन, संचार और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार		7
इकाई-11 : भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित मुद्दे और समस्याएं		4
इकाई-12 : मानचित्र कार्य		3
(ग) प्रायोगिक कार्य		**30 अंक**
इकाई-1 : आँकड़ों का संसाधन और थिमैटिक (विषयक) मानचित्रण		15
इकाई-2 : क्षेत्र-अध्ययन या स्थानिक सूचना प्रौद्योगिकी		10
इकाई-3 : प्रायोगिक अभिलेख पुस्तिका और मौखिक परीक्षा		5

(क) मानव भूगोल के मूल सिद्धांत **70 पीरियड**

इकाई-1 : मानव भूगोलः प्रकृति और विषय-क्षेत्र **3 पीरियड**

इकाई-2 : लोग **15 पीरियड**

- जनसंख्या-वितरण, घनत्व और वृद्धि।
- जनसंख्या परिवर्तन-स्थानिक प्रतिरूप और संरचना, जनसंख्या परिवर्तन के निर्धारक।
- आयु, स्त्री-पुरुष अनुपात, ग्रामीण-नगरीय संघटन।
- मानव विकास-संकल्पना, चयनित संकेतक, अंतर्राष्ट्रीय तुलनाएं।

इकाई-3 : मानव क्रियाकलाप **25 पीरियड**

- प्राथमिक क्रियाकलाप-संकल्पना और बदलती प्रवृत्तियां, संग्रहण पशुचारण, खनन, निर्वाह कृषि, आधुनिक कृषि, कृषि और संबद्ध क्रियाकलापों में कार्यरत लोग, चयनित देशों से कुछ उदाहरण।
- द्वितीयक क्रियाकलाप संकल्पना, निर्माण उद्योग, प्रकार-कुटीर, छोटे पैमाने के, बड़े पैमाने के, कृषि आधारित तथा खनिज आधारित उद्योग, द्वितीयक क्रियाकलापों में कार्यरत लोग, चयनित देशों से कुछ उदाहरण।
- तृतीयक क्रियाकलाप-संकल्पना, व्यापार, परिवहन और संचार, सेवाएं, तृतीयक क्रियाकलापों में कार्यरत लोग, चयनित देशों से कुछ उदाहरण।
- चतुर्थक क्रियाकलाप-संकल्पना, ज्ञान-आधारित उद्योग, चतुर्थक क्रियाकलापों में कार्यरत लोग, चयनित देशों से कुछ उदाहरण।

इकाई-4 : परिवहन, संचार और व्यापार **19 पीरियड**

- स्थल परिवहन सड़के-रेलमार्ग, पार-महाद्वीपीय, रेलमार्ग।
- जल परिवहन-अंतःस्थलीय जलमार्ग, प्रमुख महासागरीय मार्ग।
- वायु परिवहन-अंतर्महाद्वीपीय वायुमार्ग।
- तेल और गैस पाइप लाइनें।
- उपग्रह संचार और साइबर स्पेस।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार-आधार और बदलते प्रतिरूप, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश के रूप में पत्तन, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में डब्ल्यू. टी. ओ. (विश्व व्यापार संगठन) की भूमिका।

इकाई-5 : मानव बस्तियां **8 पीरियड**

बस्तियों के प्रकार-ग्रामीण और नगरीय, नगरों की आकारिकी (केस अध्ययन) महानगरों का वितरण, विकासशील देशों में मानव बस्तियों की समस्याएं।

इकाई-6

विश्व के राजनीतिक रेखा मानचित्र में ऊपर दी गई इकाइयों पर आधारित लक्षणों की पहचान का मानचित्र कार्य।

भाग (ख) भारत : लोग और अर्थव्यवस्था **70 पीरियड**

इकाई-7 : लोग **12 पीरियड**

- जनसंख्या : वितरण, घनत्त्व और वृद्धि, जनसंख्या का संघटन-भाषाई, धार्मिक, स्त्री-पुरुष अनुपात, ग्रामीण-नगरीय और व्यावसायिक; समय और प्रादेशिक विभिन्नताओं के अनुसार जनसंख्या परिवर्तन।
- प्रवास : अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय-कारण और परिणाम,
- मानव विकास : चयनित संकेतक और प्रादेशिक प्रतिरूप।
- जनसंख्या, पर्यावरण और विकास।

इकाई-8 : मानव बस्तियां **8 पीरियड**

- ग्रामीण बस्तियां-प्रकार और वितरण,
- नगरीय बस्तियां-प्रकार, वितरण और प्रकार्यात्मक वर्गीकरण

इकाई-9 : संसाधन और विकास **28 पीरियड**

- भूमि-संसाधन-सामान्य भूमि उपयोग, कृषि-भूमि उपयोग, प्रमुख फसलों की भौगोलिक दशाएं और वितरण (गेहूँ, चावल, चाय, काफी, कपास, जूट, गन्ना और रबड़) कृषि-विकास और समस्याएं।
- जल संसाधन-उपलब्धता और उपयोग-सिंचाई, घरेलू औद्योगिक तथा अन्य उपयोग, जल का अभाव और संरक्षण की विधियां,-वर्षा जल संग्रहण और जलसंभार प्रबंधन (जल संभर प्रबंधन में भागीदारी से संबद्ध एक विशिष्ट अध्ययन को शामिल किया जाए।)
- खनिज और ऊर्जा संसाधन - धात्विक (लौह-अयस्क, तांबा, बॉक्साइट, मैंगनीज) तथा आधात्विक (अभ्रक, नमक) खनिजों का वितरण, परंपरागत (कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस और जल-विद्युत) तथा गैर-परंपरागत (सौर, पवन, बायोगेस) ऊर्जा संसाधन एवं संरक्षण।
- उद्योग - प्रकार, औद्योगिक अवस्थिति के कारक चयनित उद्योगों का वितरण और बदलते प्रतिरूप लोहा और इस्पात, सूती वस्त्र, चीनी, पेट्रो-रसायन और ज्ञान आधारित उद्योग, औद्योगिक अवस्थिति पर उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण का प्रभाव, औद्योगिक संकुल।
- भारत में नियोजन-लक्ष्य क्षेत्र नियोजन (विशिष्ट अध्ययन), सतत पोषणीय विकास का विचार (विशिष्ट अध्ययन)।

इकाई-10 : परिवहन, संचार औरैर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार **12 पीरियड**

- परिवहन और संचार-सड़कें, रेलमार्ग, जलमार्ग और वायु मार्ग, तेल और गैस पाइप लाइनें, राष्ट्रीय विद्युत ग्रिड, संचार जाल, रेडियो, दूरदर्शन, उपग्रह और इंटरनेट।
- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार-भारत के विदेशी व्यापार के बदलते प्रतिरूप, समुद्री पत्तन और उनके पृष्ठ प्रदेश तथा वायु पत्तन।

इकाई-11 : भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में चयनित मुद्दों और समस्या (प्रत्येक शीर्षक) पर एक विशिष्ट अध्ययन शामिल किया जाए) **10 पीरियड**

- पर्यावरण प्रदूषण, नगरीय-अपशिष्ट निपटान

- नगरीकरण, ग्रामीण-नगरीय प्रवास, गंदी बस्ती की समस्याएँ।
- भू-निम्नीकरण

इकाई-12 : मानचित्र कार्य

भारत के राजनीतिक रेखामानचित्र में ऊपर दी गई इकाइयों पर आधारित लक्षणों का स्थान निर्धारण और नामांकन संबंधी मानचित्र कार्य। 3 अंक

भाग (ग) प्रायोगिक कार्य **30 पीरियड**

इकाई-1 : आँकड़ों का संसाधन और थिमैटिक (विषयक) मानचित्रण **20 पीरियड**

- आँकड़ों के स्रोत
- आँकड़ों का सारणीयन और संसाधन, औसत की गणना, केन्द्रीय प्रवृत्ति की माप, और कोटि सहसंबंध।
- आँकड़ों का निरूपण-आरेखों की रचना: दंड, वृत्त और प्रवाह-संचित्र; थिमैटिक (विषयक) मानचित्र, बिंदु, वर्णमात्री और सममान रेखा मानचित्रों की रचना।
- आँकड़ों के संसाधन और मानचित्रण में कंप्यूटरों का उपयोग।

इकाई-2 : क्षेत्र अध्ययन और स्थानिक सूचना प्रौद्यौगिकी **10 पीरियड**

- क्षेत्र निरीक्षण और अध्ययन : मानचित्र अनुस्थापन, प्रेक्षण और स्केच बनाना, किसी एक स्थानीय मुद्दे का सर्वेक्षण, प्रदूषण, भौम जल में परिवर्तन, भूमि उपयोग और भूमि उपयोग में परिवर्तन, निर्धनता, ऊर्जा के मुद्दे, मृदा निम्नीकरण, बाढ़ों और सूखे का प्रभाव, विद्यालय का छात्र-ग्रहण क्षेत्र, बाजार का सर्वेक्षण और घरेलू सर्वेक्षण (अध्ययन के लिए किसी भी स्थानीय समस्या से जुड़े शीर्षक को लिया जा सकता है। आँकड़ों के संग्रहण के लिए प्रेक्षण और प्रश्नावली द्वारा सर्वेक्षण को चुना जा सकता है, संग्रहीत आँकड़ों का आरेख और मानचित्रों के साथ सारणीयन और विश्लेषण किया जा सकता है।

या

स्थानिक सूचना प्रौद्यौगिकी

- भौगोलिक सूचना तंत्र (जी.आई.एस) से परिचय, यंत्र सामग्री आवश्यकताएं और प्रक्रिया सामग्री का प्रतिरूपक, आँकड़ा संरूप, रेखापुंज (रैस्टर) और सदिश (वैक्टर) आँकड़े, आँकड़ा, निवेश, संपादन और संस्थिति निर्माण, आँकड़ों का विश्लेषण उपरिशयन और चयक (बफर)।

संस्तुत पाठ्यपुस्तकें :

1. मानव भूगोल के मूल सिद्वांत, कक्षा XII, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।
2. भारत-लोग और अर्थव्यवस्था, कक्षा XII,एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।
3. भूगोल में प्रायोगात्मक कार्य भाग-II, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।

24. मनोविज्ञान

(कोड नं. 037)

मूलाधार

स्कूली शिक्षा के उच्चतर माध्यमिक स्तर पर मनोविज्ञान को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शामिल किया गया है। एक अध्ययन क्षेत्र के रूप में मनोविज्ञान मनुष्य के अनुभवों, व्यवहारों और मानसिक प्रक्रियाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक तथा सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भ में अध्ययन करता है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मनोविज्ञान के मूलभूत विचारों, सिद्धान्तों तथा विधियों से परिचित कराना है ताकि वे अपने को तथा अपने सामाजिक परिवेश को अच्छी तरह से समझ सकें। इसमें क्षेत्रों के ज्ञान तथा समझ को स्वत: विकसित करने के लिए आवश्यक जानकारी तथा रुचि पैदा करने पर बल किया गया है।

यह पाठ्यक्रम संदर्भ में स्थापित मनोवैज्ञानिक ज्ञान और प्रक्रियाओं से संबंधित है। इसमें व्यवहार की प्रक्रिया की जटिलता पर जोर दिया गया है तथा सरलीकृत कारण-परिणाम सोच को हतोत्साहित किया गया है। इसे आलोचनात्मक चिन्तन को प्रोत्साहित करके, विद्यार्थियों में सांस्कृतिक कारकों की व्यवहार में भूमिका को प्रशंसा करने के लिए प्रोत्साहन करके, तथा यह बताकर कि जीवविज्ञान और अनुभव व्यवहार को किस तरह निर्धारित करते हैं- इन तरीकों से अनुसरण किया गया है। यह पाठ्यक्रम निजी बोधा को विकसित करने के साथ दृष्टिकोणोंकी बहुलता पर भी ध्यान देता है।

यह सुझाव दिया गया है, है कि पढ़ाने सीखने के क्रम में विद्यार्थी अपनी समझ को स्वयं विकसित करें। इसलिए मनोविज्ञान की पढ़ाई व्यक्ति-वृत्त अध्ययन, कथाएँ, अनुभव पर आधारित अभ्यास, दिन-प्रतिदिन के सामान्य अनुभवों के विश्लेषण पर आधारित होनी चाहिए।

पाठ्यक्रम को सुधारने और अद्यतन करने का यह प्रयास शिक्षकों तथा विद्यार्थियों से प्राप्त सुझावों पर आधारित है। इसके साथ-साथ पाठ्यक्रम का बोझ, अंतर्नुशासनात्मक उपागम, लिंगगत समानता संबंधित मुद्दों, विशिष्ट एवं हाशिए पर बसे समूहों और शांति और पर्यावरण की चिंता और नागरिकता के मूल्यों को पैदा करना भी इसका उद्देश्य है।

उद्देश्य

- विद्यार्थियों के निकटस्थ समाज और वातावरण के संदर्भ में मानव व्यवहार तथा मन का बोध विकसित करना।
- जीवन के विभिन्न पहलुओं में मनोवैज्ञानिक ज्ञान और इसके अनुप्रयोग की अनुशासनात्मक प्रकृति के लिए विद्यार्थियों में रुचि जगाना।
- विद्यार्थियों को प्रखर दृष्टि-सम्पन्न, सामाजिक रूप से जागरूक तथा आत्मावलोकनपरक बनाना।
- विद्यार्थियों को स्वयं के विकास तथा प्रभावी बनने की जिज्ञासा पैदा करना तथा संवेदनशील तथा उत्तरदायी नागरिक बनने में मदद करना।

कक्षा-11 (सिद्धांत)

सैद्धांतिक प्रश्न पत्र-एक	**समय : 3 घंटे**	**अंक : 70**

इकाई	पीरियड	अंक
मनोविज्ञान के आधार		
I. मनोविज्ञान का परिचय	16	08
II. मनोविज्ञान की विधियाँ	20	09
III. मानवव्यवहार के आधार	20	08
IV. मानव-विकास	16	07
V. सांवेदिक और प्रात्याक्षिक प्रक्रियाएँ	16	08
VI. सीखना	20	08
VII. मानव-स्मृति	20	08
VIII. भाषा और चिन्तन	20	07
IX. अभिप्रेरणा और संवेग	18	07
प्रायोगिक कार्य (प्रॉजेक्ट, प्रयोग, लघु अध्ययन)	**60**	**30**

मनोविज्ञान के मूलाधार **90 पीरियड**

इकाई-I : मनोविज्ञान का परिचय — 08 अंक — 16 पीरियड

यह इकाई मनोविज्ञान को एक अनुशासन के रूप में इसके अनुप्रयोग एवं इसका अन्य वैज्ञानिक विषयों के साथ संबंध को उपयुक्त तथा रोचक उदाहरणों तथा दैनिक जीवन के अनुभवों के विश्लेषण के माध्यम से समझने में सहायक होगा।

मनोविज्ञान की प्रकृति, मूल अवधारणाएँ : व्यक्ति, चेतना, व्यवहार और अनुभव, मनोवैज्ञानिक विशेषताओं में समानताएँ एवं भिन्नताएँ, मनोविज्ञान का एक अनुशासन के रूप में विकास, भारत में मनोविज्ञान का विकास, मनोविज्ञान और अन्य अनुशासन, विभिन्न मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के पारस्परिक संबंध।

इकाई-II : मनोविज्ञान की प्रविधियाँ — 09अंक — 20 पीरियड

इस एकक का उद्देश्य पाठकों को मनोवैज्ञानिक प्रश्नों तथा मुद्दों का अध्ययन करने व समझने की प्रविधियों से परिचय कराना है।

मनोवैज्ञानिक गवेषणा का लक्ष्य, कुछ महत्वपूर्ण विधियाँ : प्रेक्षण, नैसर्गिक, प्रायोगिक, सहसंबंधक अध्ययन, साक्षात्कार, केस अध्ययन; मनोवैज्ञानिक उपकरण: परीक्षण, प्रश्नावलियाँ तथा उपस्कर : आँकड़ों का विश्लेषण : केन्द्रीय प्रवृत्ति/ के नापों की अवधारणा तथा गणना। आँकड़ों की रैखिक प्रस्तुति : दण्ड, हिस्टोग्राम, पोलीगन, मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के अध्ययन में नैतिक मुद्दे।

इकाई-III : मानव व्यवहार का आधार | **08 अंक** | **20 पीरियड**

इस एकक में मानव व्यवहार तथा अनुभवों को निर्धारित करने वाले जैविक और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों पर केन्द्रित किया गया है। मानव व्यवहार पर विकासवादी दृष्टिकोण, जैविक और सांस्कृतिक आधार, तंत्रिका तंत्र और अंत:स्रावी तंत्र/संरचना का अनुभव और व्यवहार के साथ संबंध, मस्तिष्क और व्यवहार, व्यवहार में तंत्रिका संघटकों की भूमिका, निद्रा और जागृति की अवस्था, व्यवहार के आनुवांशिक आधार, संस्कृति और मानव-व्यवहार, समाजीकरण, अपनी संस्कृति को आत्मसात करना तथा दूसरी संस्कृति का अंगीकार, वैश्वीकरण, विविधता और भारतीय संदर्भ में बहुलता।

इकाई-IV : मानव विकास | **07 अंक** | **16 पीरियड**

यह इकाई विकास में भिन्नता तथा जीवन विस्तार में विकासात्मक कार्यों से सम्बन्धित है।

विकास का अर्थ: विकास को प्रभावित करने वाले कारक, विकास के विविध संदर्भ, विकासात्मक अवस्थाओं का विहंगमावलोकन, गर्भावस्था में विकास, शैशवास्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था (विशेषत:, पहचान, स्वास्थ्य और सामाजिक प्रतिभागिता को समस्याएँ), प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था।

इकाई-V : सांवेदिक और प्रात्याक्षिक प्रक्रियाएँ | **08 अंक** | **16 पीरियड**

यह इकाई विभिन्न सांवेदिक उद्दीपकों को ग्रहण करने, ध्यान देने तथा उन्हें अर्थ प्रदान करने की प्रक्रिया को समझने पर केन्द्रित है संसार को समझना, उद्दीपकों की प्रकृति, ज्ञानेन्द्रियों की प्रकृति और कार्य-प्रणाली, सांवेदिक अनुकूलन, ध्यान : प्रकृति और निर्धारक, चयनात्मक तथा सतत ध्यान, प्रत्याक्षात्मक संगठन के नियम, कर्ता की विशेषताओं की प्रत्यक्षीकरण में भूमिका, पैटर्न की पहचान, प्रत्यक्षात्मक गोचर : पश्चात् प्रतिभाएँ, दिक्-प्रत्यक्ष, प्रात्यक्षिक स्कैर्य, भ्रम, व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण, प्रत्यक्षीकरण पर सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव।

इकाई-VI : सीखना | **08 अंक** | **20 पीरियड**

इस इकाई में नए व्यवहारों को सीखने तथा व्यवहार में परिवर्तन पर ध्यान दिया गया है।

सीखने की प्रकृति तथा सीखने का वक्र : सीखने के प्रारूप, क्लासिकी और नैमित्तिक अनुबंधान, प्रेक्षणात्मक सीखना, संज्ञानात्मक सीखना, वाचिक सीखने, सप्रत्यय का सीखना, कौशलों को सीखना, सीखने में सहायक कारक, सीखने का अंतरण: प्रकार और अनुप्रयोग। सीखने की शैलियाँ, सीखने की अयोग्यता, सीखने के सिद्धान्तों के कुछ अनुप्रयोग।

इकाई-VII : मानव स्मृति | **08 अंक** | **20 पीरियड**

यह इकाई सूचना के ग्रहण करने, धारण करने, पुन:प्राप्ति तथा लोप से सम्बद्ध है। स्मृति-वृद्धि तरीकों के बारे में इसमें विवेचन किया जाएगा।

स्मृति की प्रकृति, सूचना संसाधन उपागम, संसाधन के स्तर, स्मृति प्रणालियाँ-सांवेदिक स्मृति, अल्पकालिक स्मृति, दीर्घकालिक स्मृति, ज्ञान का प्रतिनिधित्व, स्मृति का संगठन, रचनात्मक प्रक्रिया के रूप में स्मृति; विस्मरण की प्रकृति तथा कारण; स्मृति को बढ़ाना, स्मृति से जुड़ी विकृतियाँ।

इकाई-VIII : भाषा और चिन्तन | **07 अंक** | **20 पीरियड**

इस इकाई का संबंध चिंतन तथा अन्य सम्बद्ध प्रक्रियाएँ जैसे कि तर्क करने, समस्या समाधान, निर्णय लेने और सर्जनात्मक चिंतन से है। इसका सरोकार चिन्तन और भाषा से भी है।

चिंतन और भाषा : प्रकृति और अंत:संबंध, संज्ञानात्मक विकास की अवस्थाएँ : पियाजे, वायगॉट्स्की तथा सूचना संसाधन उपागम का परिचय, भाषा तथा भाषा प्रयोग का विकास, तर्कना, समस्या समाधान, निर्णय, सर्जनात्मक चिंतन : प्रकृति, प्रक्रिया एवं विकास।

इकाई-IX : अभिप्रेरण एवं संवेग **07 अंक** **18 पीरियड**

यह इकाई मानव क्यों व्यवहार करता है, इस प्रश्न से जुड़ी है। मानव किस तरह से सकारात्मक एवं नकारात्मक घटनाओं का सामना करता है, यह भी इस इकाई का विषय है। मानव अस्तित्व और अभिप्रेरण की प्रकृति, जैविक आवश्यकताएँ, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रेरक : उपलब्धि, संबंधन और शक्ति, मॉस्लो की आवश्यकताओं का परानुक्रम, नवीन संप्रत्यय : सक्षमता, आत्म प्रभाविकता, आंतरिक अभिप्रेरण : संवेग की प्रकृति, संवेग के शारीरिक/जैविक संज्ञानात्मक तथा सांस्कृतिक आधार, संवेग का प्रकटन, सकारात्मक संवेग, खुशी, आशावादिता, समानुभूति, कृतज्ञता, सकारात्मक संवेगों का विकास, क्रोध और भय जैसे नकारात्मक संवेगों का प्रबंधन।

प्रायोगिक कार्य (परियोजना (प्रोजेक्ट), प्रयोग (एक्सपेरिमेंट), लघु अध्ययन इत्यादि)30 अंक **60 पीरियड**

विद्यार्थियों को एक परियोजना तथा एक प्रयोग करने होंगे। प्रोजेक्ट करने में अनुसंधान की प्रविधियाँ तथा संबंधित कौशल शामिल है। प्रायोगिक कार्य में प्रयोग करना तथा लघु अध्ययन शामिल होंगे जो कि पाठ्यक्रम के विषयों से संबंधित है (यथा, मानव विकास, सीखना, स्मृति, अभिप्रेरण, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान तथा चिंतन)

(i)	प्रयोगात्मक फाइल	05 अंक
(ii)	परियोजना फाइल	05 अंक
(iii)	मौखिक परीक्षा (परियोजना एवं प्रयोग)	05 अंक
(iii)	एक प्रयोग : (5 अंक प्रयोग करने के लिए और 10 अंक रिपोर्ट के लिए)	15 अंक

कक्षा-12

सैद्धांतिक पत्र प्रश्न-एक **समय : 3 घंटे**	**अंक**
इकाई अनुसार अंकभार	**70**
इकाई	
I. बुद्धि और अभिक्षमता	09
II. स्व और व्यक्तित्व	10
III. मानवीय क्षमताएँ तथा और जीवन चुनौतियों का सामना	07
IV. मनोवैज्ञानिक विकार	10
V. चिकित्सात्मक के उपागम तथा परामर्श	07
VI. अभिवृत्ति और सामाजिक संज्ञान	08
VII. सामाजिक प्रभाव और समूह प्रक्रियाएँ	07

VIII. पर्यावरणीय और सामाजिक सरोकार		06
IX. अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान		06
प्रायोगिक कार्य (मनोवैज्ञानिक परीक्षण, केस प्रोफाइल)		**30 अंक**

मनोविज्ञान, स्व और समाज

इकाई-I : बुद्धि और अभिक्षमता **09अंक** **20 पीरियड**

इस इकाई का उद्देश्य यह अध्ययन करना है कि लोग किस तरह बुद्धि और अभिक्षमता के क्षेत्र में एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

बुद्धि में वैयक्तिक भिन्नता : बुद्धि के सिद्धान्त, संस्कृति और बुद्धि, सांवेगिक बुद्धि; अभिक्षमता प्रकृति और प्रकार, मनोवैज्ञानिक गुणों का मूल्यांकन।

इकाई-II : स्व और व्यक्तित्व **10अंक** **24 पीरियड**

यह इकाई स्व और व्यक्तित्व के विभिन्न उपागमों के संदर्भ में अध्ययन पर केन्द्रित है। साथ ही व्यक्तित्व के मूल्यांकन का भी विवेचन किया जाएगा।

स्व के विविध पक्ष : स्व का संप्रत्यय: आत्मगौरव और आत्म नियमन; संस्कृति और स्व, व्यक्तित्व : संप्रत्यय, व्यक्तित्व अध्ययन के उपागम, प्रकार और शीलगुण, मनोगत्यातमक, मानववादी, व्यवहारवादी और सांस्कृतिक, व्यक्तित्व का मूल्यांकन : आत्म प्रतिवेदनात्मक मापक, व्यवहार विश्लेषण, और प्रक्षेपी मापक।

इकाई-III मानवीय क्षमताएँ और जीवन की चुनौतियों का सामना **07अंक** **14 पीरियड**

इस इकाई का संबंध तनाव की प्रकृति तथा तनाव के प्रति अनुक्रिया का व्यक्ति द्वारा तनाव के मूल्यांकन के विश्लेषण से है। इसमें तनाव का सामना करने के तरीके भी शामिल है।

जीवन की चुनौतियां तथा समायोजन; अनुकूलन का संप्रत्यय; मानवी क्षमताएं तथा सद्गुण : प्रकृति, प्रकार तथा मनोवैज्ञानिक प्रकार्यों पर प्रभाव; तनाव का समाधान; स्वास्थ्य तथा स्वस्ति का संप्रत्यय, जीवनशैली, स्वास्थ्य और स्वस्ति।

इकाई-IV : मनोवैज्ञानिक विकार **10अंक** **24 पीरियड**

यह इकाई सामान्यता एवं असामान्यता के संप्रत्यय तथा मुख्य मनोवैज्ञानिक विकार का विवेचन करता हैं।

असामान्यता तथा मनोवैज्ञानिक विकार के संप्रत्यय, असामान्य व्यवहार के कारणात्मक कारक, विकारों का वर्गीकरण, मुख्य मनोवैज्ञानिक विकार, चिंता, शरीर प्रारूपी, वियोजनातमक, मनोदशात्मक, मनोविकलता, विकासात्मक, व्यवहारात्मक और पदार्थ-संबंधित।

इकाई-V : चिकित्सात्मक उपागम तथा परामर्श **07अंक** **20 पीरियड**

इस इकाई में मनोवैज्ञानिक विकारों के उपचार के विभिन्न उपागमों की प्रभाविकता का विवेचन किया गया है।

चिकित्सा की प्रकृति तथा प्रक्रिया, चिकित्सा संबंध की प्रकृति, चिकित्सा के प्रकार : मनोगत्यात्मक, मानववादी, संज्ञानात्मक, व्यवहारवादी, वैकल्पिक चिकित्साएँ : योग, ध्यान, जेन, मानसिक रूप से बीमार लोगों का पुनर्वास।

इकाई-VI : अभिवृत्ति तथा सामाजिक संज्ञान **08अंक** **20 पीरियड**

यह अभिवृत्ति के निर्माण तथा परिवर्तन, गुणारोपण प्रवृत्तियों पर सांस्कृतिक प्रभाव तथा प्रसामाजिक व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों पर केन्द्रित है।

गुणारोपण के माध्यम से व्यवहार की व्याख्या, सामाजिक संज्ञान, स्कीमा तथा रूढ़ि युक्तियां, छवि-निर्माण, अभिवृत्ति की प्रकृति तथा अवयव, अभिवृत्ति का निर्माण तथा परिवर्तन, दूसरों की उपस्थिति में व्यवहार : प्रसामाजिक व्यवहार, पूर्वाग्रह तथा भेदभाव, पूर्वाग्रह से निपटने की युक्तियाँ।

इकाई-VII : सामाजिक प्रभाव तथा सामूहिक प्रक्रियाएँ **07अंक** **22 पीरियड**

यह इकाई समूह के संप्रत्यय, इसके कार्य तथा सामाजिक प्रभाव की गतिकी यथा, अनुरूपता, आज्ञाकारिता और अनुपालन पर केन्द्रित है। द्वन्द्व के समाधान की विभिन्न युक्तियों का भी विवेचन किया जाएगा।

प्रभाव-प्रक्रियाएँ : अनुरूपता, आज्ञापालन और अनुपालन की प्रकृति, सहयोग और प्रतिस्पर्धा, समूह : प्रकृति, निर्माण और प्रकार, समूह का व्यक्ति के व्यवहार पर प्रभाव, सामाजिक पहचान, अंतर्सामूहिक द्वन्द्व, द्वन्द्व के समाधान की युक्तियाँ।

इकाई-VIII : पर्यावरणीय और सामाजिक सरोकार **06अंक** **18 पीरियड**

यह इकाई कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों की मनोवैज्ञानिक समझ के अनुप्रयोग पर केन्द्रित है।

मानव-पर्यावरण संबंध, मानव व्यवहार पर पर्यावरणीय प्रभाव : शोर, प्रदूषण, भीड़, प्राकृतिक आपदा, सामाजिक मुद्दे : आक्रामकता और हिंसा, सामाजिक असमानता और गरीबी, जनसंचार और मानवीय मूल्य, पर्यावरण का पक्षधर व्यवहार, मानवाधिकार और नागरिकता शांति।

इकाई-IX : अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान **18 पीरियड**

यह इकाई मनोविज्ञान के अनुप्रयोग के कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों से परिचय कराती है।

निम्न क्षेत्रों में मनोविज्ञान का अनुप्रयोग :

(1) शिक्षा

(2) खेल

(3) संचार

(4) संगठन

मनोवैज्ञानिक परीक्षण प्रायोगिकी **60 पीरियड**

छात्रों को इस पाठ्यक्रम में सम्मिलित पाठों से संबद्ध 2 प्रायोगिक कार्य तथा एक केस प्रोफाइल तैयार करने होंगे।

केस प्रोफाइल में प्रयोज्य का विकासात्मक इतिहास शामिल होगा जिसमें गुणात्मक (प्रेक्षण साक्षात्कार) और मात्रात्मक (मनोवैज्ञानिक परीक्षण) उपागमों का उपयोग किया जाएगा। प्रायोगिक कार्य मानकीकृत मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन उपकरणों का विभिन्न क्षेत्रों में (यथा, बुद्धि, व्यक्तित्व, अभिरुचि, समायोजन, अभिवृत्ति, स्व-संप्रत्यय तथा चिंता) उपयोग से सम्बन्धित होगा।

अंकों का वितरण :

(i)	प्रयोगिक फाइल	05 अंक
(ii)	केस प्रोफाइल	05 अंक
(iii)	मौखिक परीक्षा (केस प्रोफाइल एवं प्रयोगिक पर)	05 अंक
(iv)	दो प्रयोगिक कार्य (05 अंक सही प्रयोग करने और 10 अंक रिपोर्ट लिखने के लिए)	15 अंक

संस्तुत पाठ्यपुस्तकें :

1. मनोविज्ञान, कक्षा XI, एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित।
2. मनोविज्ञान, कक्षा XII, एन. सी. ई. आर. टी. द्वारा प्रकाशित

25. समाजशास्त्र

(कोड सं. 039)

मूलाधार

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर समाजशास्त्र को एक वैकल्पिक विषय के रूप में प्रारम्भ किया गया है। इस पाठ्यक्रम की रचना इस प्रकार की गई है कि यह विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में देखी-सुनी बातों की अभिव्यक्ति में सहायता प्रदान करे, परिवर्तनशील समाज के लिए एक रचनात्मक अभिवृत्ति विकसित करे तथा इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विद्यार्थी को संकल्पनाओं तथा सैद्धान्तिक कौशल से परिपूर्ण करे। इस चरण में समाजशास्त्र की पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को मानवीय व्यवहार की गतिशीलताओं को, उसकी जटिलताओं और अभिव्यक्तियों के साथ समझने में सक्षम बनाती है। सामाजिक जगत को समझने के प्रयास में आज के विद्यार्थियों को उनके मन में उठने वाले प्रश्नों के उत्तर तथा व्याख्याओं की आवश्यकता होती है। अत: सामाजिक संरचना के प्रति एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है ताकि वे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में अर्थपूर्ण रूप से भाग ले सकें। इस पाठ्यक्रम में अभ्यासों तथा परियोजना कार्य पर आधारित अन्त:क्रियात्मक समझ ही नहीं अपितु शिक्षकों एवं विद्यार्थियों द्वारा मिल जुल कर सीखने की नवीन विधाओं को विकसित करने के लिए स्थान दिया गया है।

- समाजशास्त्र समाज का अध्ययन करता है। बच्चा जिस समाज में रहता है, उससे उसकी अन्तरंगता समाजशास्त्र के अध्ययन को एक दोधारी अनुभव बना देती है। एक तरु समाजशास्त्र परिवार तथा नातेदारी, वर्ग, जाति तथा जनजातीय मार्म तथा सन्दर्भित क्षेत्रीय संस्थाओं का अध्ययन करता है तो दूसरी तरु बच्चे इन सबसे चाहे अलग ढंग से ही सही किन्तु पहले से ही परिचित होते हैं। क्यूँकि भारत एक ऐसा अलग समाज है जो ऊँच-नीच के आर्थिक-सामाजिक स्तरीकरण व सांस्कृतिक-सामुदायिक समानान्तर भिन्नताओं दोनों प्रकार से विविधता पूर्ण है, पाठ्य पुस्तकों में इस बात का प्रयास किया गया है कि इस विषय को एक शक्ति के स्रोत तथा पूछताछ के क्षेत्र दोनों रूपों में प्रकट करें।

- दृष्टिकोणों व परिप्रेक्ष्यों की बहुलता समाजशास्त्र की बौद्धिक विरासत का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इस विरासत की खासियत है कि यह परिचित को अजनबी नजरों से देखने, व सीखी-सिखाई या स्थापित तथ्यों को दुबारा जाँचने को प्रेरित करता है। समाजशास्त्र का यह प्रश्नात्मक एवं आलोचनात्मक स्वरूप न केवल दूसरी संस्कृतियों को समझने, बल्कि अपनी स्वयं की संस्कृति को पुन: समझना सम्भव बनाती है।

- यह एकाधिक दृष्टिकोण एक ऐसी अन्तर्निहित समृद्धता तथा खुलापन प्रदान करते हैं जो प्राय: अधिकांश विषयों में व्यावहारिक रूप में नहीं पाया जाता है। शुरू से ही समाजशास्त्र में एक निरूपणात्मक पद्धति (Interpretative method) की अनेक परम्पराएँ स्थापित रही हैं जो एक दूसरे को समृद्ध भी बनाती हैं और आपसी प्रतिस्पर्धा भी कायम रखती है। इन परम्पराओं ने खुल कर ''व्यक्तिनिष्ठा'' तथा कारणात्मक दोनों प्रकार की व्याख्याओं को ध्यान में रखते हुए इनको अधिक सुसंस्कृत बनाने पर बल दिया है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि इसके व्यवहारिक कार्य शैलियों की परम्परा में व्यापक सर्वेक्षण पद्धति तथा एक समृद्ध नृजातीय अनुसन्धान की पद्धति, दोनों सम्मिलित हैं। नि:सन्देह भारतीय समाजशास्त्र ने समाजशास्त्र और सामाजिक मानवविज्ञान की प्राय: भिन्न समझे जाने वाले इन उपागमों की आपसी दूरी को पाट दिया है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को क्षेत्र-कार्य (field work) करने के उत्साह तथा समाजशास्त्र विषय के सैद्धांतिक महत्व दोनों से परिचित कराने के अनेक अवसर प्रदान करता है।

- समाजशास्त्र की बहुलता प्रधान विरासत विद्यार्थी में अपने समाज के प्रति व्यापक तथा सूक्ष्म दोनों प्रकार के दृष्टिकोण उत्पन्न करती है। आज के सन्दर्भ में यह विशेष रूप से सच है जबकि स्थानीय प्रक्रियाएँ भूमण्डलीय प्रक्रियाओं द्वारा परिभाषित तथा निरूपित होती हैं।

- यह पाठ्यक्रम इस पूर्वधारणा से प्रेरित है कि समाज के एक संगठन सिद्धान्त के रूप में लिंग-भेद को एक अतिरिक्त प्रसंग के रूप में नहीं अपितु हर अध्याय के मौलिक अंग के रूप में लिया जाना चाहिए।
- ये अध्याय विद्यार्थी-केन्द्रित उपागम भी स्थापित करते हैं, जिससे विद्यार्थी ने जिस यथार्थ को जिया है उसे समाजशास्त्र में अध्ययन किए जाने वाली सामाजिक संरचनाओं तथा सामाजिक प्रक्रियाओं से जोड़ा जा सके।
- पाठ्य पुस्तकों में सजग प्रयास किया गया है कि समाज के अनुसन्धान (exploration) के अवसर प्राप्त हों, जिनसे सीखने की प्रक्रिया एक खोजी प्रक्रिया बन सके। इसके लिए आवश्यक है कि समाजशास्त्रीय प्रत्ययों को स्थापित सत्य के रूप में नहीं बल्कि मानव-निर्मित सामाजिक प्रक्रियाओं की उपज के रूप में देखा जाए, जिन पर सदैव प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

उद्देश्य

- विद्यार्थी को इस योग्य बनाना कि वह कक्षा की पढ़ाई को बाहरी वातावरण से जोड़ सकें।
- विद्यार्थियों को समाजशास्त्र की मूल संकल्पनाओं से परिचित करवाना ताकि वह सामाजिक जीवन को देखने और उसकी व्याख्या करने में समर्थ हो पाए।
- सामाजिक प्रक्रियाओं की जटिलता के प्रति जागरूक बनाना।
- विश्व की एवं भारतीय समाज की विविधताओं की सराहना करना।
- समकालीन भारतीय समाज को समझने और उसकी विवेचना करने में विद्यार्थियों को सशक्त बनाना।

कक्षा-XI

सैद्धांतिक प्रश्नपत्र - एक	समय : 3 घंटे	अंक : 80

	इकाई	अंक
क.	**समाजशास्त्र परिचय**	**34**
	1. समाज, समाजशास्त्र एवं अन्य समाज विज्ञानों से सम्बन्ध	6
	2. मूल संकल्पनाएँ	8
	3. सामाजिक संस्थाएँ	10
	4. संस्कृति एवं समाज	10
	5. व्यावहारिक समाजशास्त्र : सिद्धान्त एवं तकनीक	प्रयोगात्मक परीक्षा द्वारा जाँच
ख.	**समाज का बोध**	**46**
	6. संरचना, प्रक्रिया और स्तरीकरण	10
	7. सामाजिक परिवर्तन	10
	8. पर्यावरण एवं समाज	10
	9. पाश्चात्य सामाजिक विचारक	8
	10. भारतीय समाजशास्त्री	8

कक्षा-XI

व्यावहारिक परीक्षा	समय-3घन्टे	पूर्णांक 20

	इकाई	अंक
क.	**परियोजना (शैक्षिक सत्र में स्कूल के स्तर पर लिया जाए)**	**07 अंक**
	(i) उद्देश्य का विवरण	2 अंक
	(ii) कार्यप्रणाली/तकनीक	2 अंक
	(iii) सारांश	3 अंक
ख.	**परियोजना कार्य के आधार पर मौखिक परीक्षा**	**05 अंक**
ग.	**अनुसन्धान अभिकल्प (डिजाइन)**	**08 अंक**
	(i) समग्र रूपरेखा	1 अंक
	(ii) अनुसांधन प्रश्न/उपकल्पना	1 अंक
	(iii) तकनीक का चयन	2 अंक
	(iv) विस्तार से तकनीक के कार्यान्वयन की कार्यविधि का विवरण	2 अंक
	(v) उपरोक्त तकनीक की सीमाएँ	2 अंक

क. समाजशास्त्र से परिचय

इकाई-1 : समाज एवं समाजशास्त्र का अन्य समाज विज्ञानों से सम्बन्ध **22 पीरियिड**

- समाज का परिचय : व्यष्टिपरक एवं सामूहिकता। एकाधिक परिप्रेक्ष्य।
- समाजशास्त्र का परिचय : उद्भव, प्रकृति एवं विषय क्षेत्र। अन्य विषयों से सम्बन्ध।

इकाई-2 : मूल संकल्पनाएं **22 पीरियड**

- सामाजिक समूह
- प्रस्थिति एवं भूमिका
- सामाजिक स्तरीकरण
- सामाजिक नियन्त्रण

इकाई-3 : सामाजिक संस्थाएँ **24 पीरियड**

- परिवार एवं नातेदारी
- राजनीतिक एवं आर्थिक संस्थाए!
- धर्म एक सामाजिक संस्था के रूप में
- शिक्षा एक सामाजिक संस्था के रूप में

इकाई-4 : संस्कृति एवं समाज **20 पीरियड**

- संस्कृति, मूल्य एवं मानक : साझा, एकाधिक, सविरोमा
- समाजीकरण : अनुरूपता, संघर्ष एवं व्यक्तित्व को आकार देना।

इकाई-5 : व्यावहारिक समाजशास्त्र : विधि एवं तकनीक **22 पीरियड**

- उपकरण एवं तकनीक : अवलोकन, सर्वेक्षण, साक्षात्कार
- समाजशास्त्र में क्षेत्रीय कार्य का महत्व

ख. समाज का बोध

इकाई-6 : संरचना, प्रक्रिया एवं स्तरीकरण **22 पीरियड**

सामाजिक संरचना

सामाजिक प्रक्रियाएँ : सहयोग, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष

सामाजिक स्तरीकरण : वर्ग, जाति, प्रजाति, लिंग

इकाई-7 : सामाजिक परिवर्तन **22 पीरियड**

सामाजिक परिवर्तन : प्रकार एवं विस्तार; कारण एवं परिणाम

सामाजिक व्यवस्था : प्रभावी, प्राधिकार एवं कानून; अपराध एवं हिंसा

गाँव, कस्बा एवं शहर : नगरीय एवं ग्रामीण समाज में परिवर्तन

इकाई-8 : पर्यावरण एवं समाज **18 पीरियड**

पारस्थितिकी एवं समाज

पर्यावरण संकट एवं सामाजिक उत्तरदायित्व

इकाई-9 : पाश्चात्य सामाजिक विचारक **24 पीरियड**

कार्ल मार्क्स-वर्ग संघर्ष

एमिल दुर्खाइम-श्रम विभाजन

मैक्स वैबर-नौकरशाही

इकाई-10 : भारतीय समाजशास्त्री **24 पीरियड**

जी.एस. घुर्ये-प्रजाति एवं जाति

डी.पी. मुखर्जी-परम्परा एवं परिवर्तन

ए.आर. देसाई-राज्य

एम.एन. श्रीनिवास गाँवों का अध्ययन

कक्षा-XII

सैद्धान्तिक एक प्रश्नपत्र-एक **समय : 3 घंटे** **अंक : 80**

इकाई		पीरियड	अंक
क.	**भारतीय समाज**		**32**
	1. भारतीय समाज का परिचय		**मूल्याँकन नहीं होगा**
	2. जनांकिकी संरचना एवं भारतीय समाज		6
	3. सामाजिक संस्थाएँ नैरन्तर्य एवं परिवर्तन		6
	4. बाजार एक सामाजिक संस्था के रूप में		6
	5. सामाजिक असमानता एवं अपवर्जन के प्रकार		6
	6. सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ		8
	7. परियोजना कार्य के लिए सुझाव		**मूल्याँकन नहीं होगा**
ख.	**भारतीय समाज में परिवर्तन एवं विकास**		**48**
	8. संरचनात्मक परिवर्तन		6
	9. सांस्कृतिक परिवर्तन		6
	10. लोकतन्त्र की कहानी		6
	11. ग्रामीण समाज में परिवर्तन एवं विकास		6
	12. औद्योगिक समाज में परिवर्तन एवं विकास		6
	13. भूमण्डलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन		6
	14. जनसंपर्क और संचार		6
	15. सामाजिक आन्दोलन		6
	कुल		**80**

व्यावहारिक परीक्षा

इकाई	समय : 3 घंटे	अंक : 20
क.	**परियोजना (शैक्षिक सत्र में स्कूल के स्तर पर लिया जाए)**	**07 अंक**
	(i) उद्देश्य का विवरण	2 अंक
	(ii) कार्यप्रणाली/तकनीक	2 अंक
	(iii) सारांश	3 अंक

ख.	**परियोजना कार्य के आधार पर मौखिक परीक्षा**	**05 अंक**
ग.	**अनुसन्धान अभिकल्प (डिज़ाइन)**	**08 अंक**

(i) समग्र आकार (फार्मेट) — 1 अंक

(ii) अनुसंधान प्रश्न/उपकल्पना — 1 अंक

(iii) तकनीक का चयन — 2 अंक

(iv) विस्तार से तकनीक के कार्यान्वयन की कार्यविधि का विवरण — 2 अंक

(v) उपरोक्त तकनीक की सीमाएँ (कमियाँ) — 2 अंक
(ख) एवं (ग) को आन्तरिक परीक्षा के दिन व्यवस्थित किया जाएगा।

भारतीय समाज

इकाई-1 : भारतीय समाज का परिचय — **10 पीरियड**

- उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद, वर्ग एवं समुदाय

इकाई-2 : जनांकिकीय (जनसांख्यिकीय) संरचना एवं भारतीय समाज — **10 पीरियड**

- ग्रामीण-नगरीय संलग्नता और विभाजन

इकाई-3 : सामाजिक संस्थाएँ : नैरन्तर्य एवं परिवर्तन — **14 पीरियड**

- परिवार एवं नातेदारी
- जाति व्यवस्था

इकाई-4 : बाजार एक सामाजिक संस्था के रूप में — **10 पीरियड**

- बाजार एक सामाजिक संस्था के रूप में

इकाई-5 : सामाजिक असमानता एवं अपवर्जन के प्रतिरूप — **24 पीरियड**

- जाति पूर्वाग्रह, अनुसूचित जातियाँ एवं अन्य पिछड़े वर्ग
- जनजातीय समुदायों की सीमान्तता
- महिला समानता का संघर्ष
- धार्मिक अल्पसंख्यकों को संरक्षण
- अपंगों की देखभाल

इकाई-6 : सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ — **12 पीरियड**

- साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता, जातिवाद एवं पितृतन्त्र की समस्याएँ
- एकाधिक एवं असमान समाज में राज्य की भूमिका
- हमारी साझेदारी क्या है

इकाई-7 : परियोजना कार्य के लिए सुझाव (मूल्यांकन नहीं होगा) **18 पीरियड**

ख भारत में विकास एवं परिवर्तन **10 पीरियड**

इकाई-8 : संरचनात्मक परिवर्तन

- उपनिवेशवाद, औद्योगीकरण, नगरीकरण

इकाई-9 : सांस्कृतिक परिवर्तन **12 पीरियड**

- आधुनिकीकरण, पाश्चात्यकरण, संस्कृतिकरण, धर्मनिर्पेक्षता।
- सामाजिक सुधार आन्दोलन एवं कानून

इकाई-10 : लोकतंत्र की कहानी **22 पीरियड**

- संविधान सामाजिक परिवर्तन के एक उपकरण के रूप में
- राजनीतिक दल, दबाव समूह एवं लोकतन्त्रीय राजनीति
- पंचायती राज एवं सामाजिक रूपान्तरण की चुनौतियाँ

इकाई-11 : ग्रामीण समाज में परिवर्तन एवं विकास **10 पीरियड**

- भूमि सुधार, हरित क्रान्ति एवं कृषिक समाज

इकाई-12 : औद्योगिक समाज में परिवर्तन एवं विकास **14 पीरियड**

- नियोजित औद्योगीकरण से उदारीकरण तक
- वर्ग संरचना में परिवर्तन

इकाई-13 : भूमंडलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन **12 पीरियड**

इकाई-14 : जनसम्पर्क एवं संचार **12 पीरियड**

इकाई-15 : सामाजिक आन्दोलन **22 पीरियड**

- वर्ग आधारित आन्दोलन : कामगार, किसान
- जाति-आधारित आन्दोलन : दलित आन्दोलन, पिछड़ी जातियाँ, उच्च जातियों के उत्तर का रुझान
- स्वतन्त्र भारत में महिला आन्दोलन
- जनजातीय आन्दोलन
- पर्यावरण आन्दोलन

संस्तुत पाठ्यपुस्तकें

1. सामाजशास्त्र-परिचय, कक्षा XI रा.शि.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित
2. समाज का बोध, कक्षा XI रा.शि.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित
3. भारत में सामाजिक परिवर्तन, और विकास कक्षा XII रा.शि.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित
4. भारतीय समाज, कक्षा XII रा.शि.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित

26. दर्शन शास्त्र

(कोड नं. 040)

उद्देश्य

दर्शन शास्त्र एक सैद्धान्तिक उपक्रम है, जिसकी व्यावहारिक उपयोगिता भी है। इसका उद्देश्य जीवन एवं सत्ता के स्वरूप एवं अर्थ को जानना है। दर्शनशास्त्र को ज्ञान की सभी शाखाओं की जननी कहा जाता है। दर्शन का स्वरूप यह है कि इसके अन्तर्गत किसी भी उत्तर को समीक्षा या प्रश्न किये बिना नहीं माना जा सकता है। इसमें उन सभी स्वयंसिद्ध अभिगृहीतों एवं पूर्व मान्यताओं को समझने और व्याख्यायित करने का प्रयास किया जाता है जो ज्ञान की बाकी सभी शाखाओं में बिना समीक्षा किये स्वीकृत कर लिए जाते हैं। ग्यारहवीं तथा बारहवीं कक्षाओं का पाठ्यक्रम इस प्रकार से बनाया गया है कि छात्रों को विभिन्न समस्याओं के स्वरूप की सामान्य जानकारी दी जा सके कि दर्शनशास्त्र की भिन्न शाखाओं : तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र, प्राचीन भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन में इन समस्याओं पर किस प्रकार विवेचन हुआ है, और किस प्रकार से उनका समाधान किया जा सकता है।

कक्षा XI (सैद्धान्तिक)

सैद्धांतिक प्रश्न पत्र-एक **समय : 3 घंटे** **अंक 100**

इकाई		अंक
वैज्ञानिक विधि		
1.	प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञान की विधियाँ	10
2.	निरीक्षण एवं प्रयोग	10
3.	विज्ञान एवं प्राक्कल्पना	10
4.	मिल की प्रयोगात्मक अन्वेषण की विधि	10
5.	न्याय दर्शन की ज्ञान मीमांसा (सामान्य)	10
तर्कशास्त्र		
6.	तर्कशास्त्र का स्वरूप एवं विषय	06
7.	पद एवं तर्कवाक्य: तर्क वाक्यो में संबध	15
8.	निरपेक्ष न्याययुक्ति	10
9.	प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के मूलत्तत्व	06
10.	बौद्ध दर्शन का आकारिक तर्कशास्त्र	13
	कुल	**100**

इकाई-1 : प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञानों की विधियाँ **20 पीरियड**

विज्ञान का महत्त्व, वैज्ञानिक विधि का स्वरूप एवं उद्देश्य, वैज्ञानिक आगमन एवं सरल गणना द्वारा आगमन में भेद। प्राकृतिक विज्ञानों एवं सामाजिक विज्ञानों की पद्धतियों में भेद।

इकाई-2 : निरीक्षण एवं प्रयोग **20 पीरियड**

दोनों में अन्तर, निरीक्षण के तर्कदोष

इकाई-3 : विज्ञान एवं प्राक्कल्पना **25 पीरियड**

वैज्ञानिक विधियों में प्राक्कल्पना का स्थान। प्राक्कल्पना के निर्माण की विधि। वैध प्राक्कल्पना की आकारिक शर्तें। प्राक्कल्पना एवं निर्णायक प्रयोग

इकाई-4 : मिल की प्रायोगिक अन्वेषण विधियाँ **25 पीरियड**

- अन्वय विधि
- व्यतिरेक विधि
- अन्वय-व्यतिरेक विधि
- सहवर्ती विचलन विधि
- अवशेष विधि

इकाई-5 : न्याय दर्शन की ज्ञान मीमांसा

सामान्य सर्वेक्षण : प्रमा, प्रमाण, प्रामाण्य, प्रत्यक्ष अनुमान, उपमान, शब्द। **30 पीरियड**

तर्कशास्त्र

इकाई-6 : तर्कशास्त्र का स्वरूप एवं क्षेत्र **14 पीरियड**

तर्कशास्त्र क्या है। तर्कशास्त्र का उपयोग एवं व्यावहारिक प्रयोग सत्यता एवं वैधता में अन्तर

इकाई-7 : पद एवं तर्कवाक्य **30 पीरियड**

पद की परिभाषा; गुणार्थ और निर्देश,

तर्कवाक्य की परिभाषा एवं तर्कवाक्यों का पारम्परिक वर्गीकरण।

पदों की व्याप्ति

तर्कवाक्यों में सम्बन्ध

पारम्परिक वाक्य-विरोध चतुष्कोण

इकाई-8 : निरपेक्ष न्याययुक्ति **24 पीरियड**

परिभाषा; वैध न्याययुक्ति के नियम एवं न्याययुक्ति में दोष

इकाई-9 : प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र के तत्व **14 पीरियड**

तर्कशास्त्र में प्रतीकों के उपयोग का महत्त्व

मौलिक सत्यता सारिणी विधियाँ

इकाई-10 : बौद्ध दर्शन का आकारिक तर्कशास्त्र : अनुमान का सिद्धांत **26**

संस्तुत पुस्तकें :

1. भोलानाथ राय : निगमनात्मक तर्कशास्त्र
2. भोलानाथ राय : आगमनात्मक तर्कशास्त्र
3. आई. एम कोपी : तर्कशास्त्र का परिचय
4. एस.सी. चटर्जी : न्याय थ्योरी ऑफ नालेज
5. एस. आर. भट एवं अनु मेहरोत्रा : बुद्धिस्ट एपिस्टीमालाजी
6. चटर्जी एवं दत्त : भारतीय दर्शन की रूपरेखा

कक्षा XII (सैद्धान्तिक)

सैद्धांतिक प्रश्न पत्र-एक **समय : 3 घंटे** **अंक : 100**

इकाई		अंक
क.	**भारतीय दर्शन**	**50**
1.	भारतीय दर्शन का स्वरूप एवं विभिन्न सम्प्रदाय	10
2.	भगवद्गीता का दर्शन	10
3.	बौद्ध एवं जैन विचारधारा	10
4.	न्याय-वैशेषिक एवं सांख्य-योग	10
5.	अद्वैत वेदान्त	10
ख :	**पाश्चात्य दर्शन**	**40**
6.	ज्ञान एवं सत्य	10
7.	कारणता का सिद्धान्त	10
8.	सत्ता का स्वरूप	10
9.	वस्तुवाद एवं प्रत्ययवाद	10
ग :	**व्यावहारिक दर्शन शास्त्र**	**10**
10.	पर्यावरण नैतिकता, व्यवसाय सम्बन्धी नैतिकता, शिक्षा का दर्शनशास्त्र	
	कुल अंक	**100**

क : भारतीय दर्शन

खण्ड-1 : भारतीय दर्शन का स्वरूप एवं विभिन्न सम्प्रदाय : **24 पीरियड**

- कुछ मौलिक प्रत्यय श्रृत, कर्म, चार पुरुषार्थ : धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष

खण्ड-2 : भगवद्‌गीता का दर्शन : **24**

- कर्म योग (अनासक्त कर्म) स्वधर्म, लोकसंग्रह

खण्ड-3 : बौद्ध एवं जैन दर्शन सम्प्रदाय **24**

- चार आर्य सत्य एवं अष्टांगिक मार्ग : प्रतीत्य समुत्पाद, अनेकान्तवाद एवं स्याद्‌वाद

खण्ड-4 : न्याय-वैशेषिक एवं सांख्य-योग **24**

- न्याय दर्शन के प्रमाणों का सिद्धान्त,
- वैशेषिक दर्शन का पदार्थों का सिद्धान्त
- सांख्य दर्शन का त्रिगुण सिद्धान्त
- योग-अष्टांगयोग

खण्ड-5 : अद्वैत वेदान्त **24 पीरियड**

- आत्मा, ब्रह्म एवं जगत का स्वरूप

ख : पाश्चात्य दर्शन

खण्ड-6 : ज्ञान एवं सत्य **24 पीरियड**

- बुद्धिवाद, अनुभववाद एवं कांट का समीक्षावाद

खण्ड-7 : कारणता का सिद्धान्त **24 पीरियड**

कारण का स्वरूप:

- अरस्तु का चतुर्विध कारण सिद्धान्त
- कारण-कार्य सम्बन्ध : अनुलागा, नियमितता और अनुवर्तिता के सिद्धान्त
  कारण के सिद्धान्त

खण्ड-8 : सत्ता का स्वरूप **24 पीरियड**

- ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण : सत्तामूलक, प्रयोजनवादी एवं विश्वसृजन मूलक युक्तियाँ

खण्ड-9 : वास्तुवाद एवं प्रत्ययवाद **24 पीरियड**

मन-देह समस्या

ग : व्यावहारिक दर्शन शास्त्र

खण्ड-10 : पर्यावरणीय एवं व्यवसाय सम्बन्धी नैतिकता **24 पीरियड**

- भौतिक, मानसिक पर्यावरणों का अध्ययन

- व्यावसायिक नैतिकता
- शिक्षा का दर्शन शास्त्र

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. जॉन पेंट्रिक : इन्ट्रोडक्शन टु फिलासाफी
2. जॉन हास्पर्य : इन्ट्रोडक्शन टु फिलासाफिकल अनेलिसिस
3. धीरेन्द्र मोहनदत्त एवं सतीश चन्द्र चटर्जी : भारतीय दर्शन की रूपरेखा
4. एम. हिरियन्न : भारतीय दर्शन के मूल तत्त्व
5. ए.सी. एविंग : फन्डामेन्टल क्युशचन आर्फ फिलासाफी
6. एच. टाइटस : लिविंग इश्यूज़ इन फिलासाफी
7. सी.डी. शर्मा :ए क्रिटिकल सर्वे आर्फ इन्डियन फिलासाफी
8. विलियम लिलि : एन इन्ट्रोडक्शन टु एथिक्स
9. एस.आर. भट्ट एवं अनु मेहरोत्रा : बुद्धिस्ट एपिस्टामॉलाजी
10. एस.आर. भट्टः नोलेज, वैल्यूज एंड एजुकेशन, ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
11. श्री अरबिन्दो आन एजूकेशन, पाण्डीचेरी
12. संप्लीमेंटरी रीडिग पार्ट सी : मैटीरियल ऑन यूनिट 10 एप्लाइड फिलोस्फी सीबीएसई, दिल्ली

27. CREATIVE WRITING AND TRANSLATION STUDIES

Code No. 069

Aims and Objectives of the Course

- To enable the learners to understand literature as a creative act and understand the creativity involved in it.
- To enable them to appreciate the form of the creative work, the writer's purpose, its meaning, the attitudes and moods, cultural nuances and its universal appeal.
- To enable them to understand the meaning that is not directly expressed and the multiplicity of meanings that may be understood from the text.
- To enable them to generally appreciate literature and to respond to a text both intellectually and emotionally.
- To acquaint them with the different literary practices, genres, styles, figures of speech and techniques of writing.
- To enable them to write creatively guided by the principles of different genres of writing in both fictional and non-fictional prose, as well as poetry.
- To make them aware that for translation, they need proficiency in both the languages.
- To enable them to learn and use the principles underlying translation from one language into another.
- To equip them to translate simple texts from one language into another while retaining the flavour of the original text.

The Whole Approach to Creative Writing and Translation Studies

- Ideally the teacher herself/himself should show sensitivity towards different forms of literature and highlight the creative dimensions of the text.
- An integrated skill approach is recommended to enable the learners to listen, read and respond both orally and in the written form so that the literary experience becomes a complete one.
- The teacher is expected to perceive the learners as individuals, thus making room for multiple meanings and connotations, depending on their own perceptions and previous experiences.

- Though literature has creative principles, established forms, styles, even imagery for different themes and genres 'out-of the box' thinking should also be encouraged.
- Both group and individual activities are advisable to foster discussion, exposition, expressionand contemplation.

Acquisition of Language Skills

Approach to Reading

- Activities that enable the learner to draw upon his own experience to understand the meaning of the literary text.
- Activities that promote the higher order reading skills of interpretative, evaluative and creative comprehension should be employed.
- Method of reading should lead to the development of vocabulary by perceiving their differentiallevels of meaning.
- Development of the ability to deconstruct a text to read between and beyond the lines should be encouraged.

Specific Objectives of Reading

To develop in the learners the ability to :

- use dictionaries, thesaurus and reference materials both actual and virtual
- read differently i.e. skimming, scanning and close reading.
- infer and understand the writer's attitude, bias, cultural and ideological leanings.
- comprehend the difference between what is said and what is implied.
- differentiate the language of persuasion, exposition and expression of personal feelings and ideas.
- distinguish fact from opinion.
- grasp the cultural context of the work.
- identify different figures of speech and appreciate the writer's purpose in using them
- develop a personal response to the given text
- appreciate the special features of the language used in literary text

- identify the elements of style such as humour, pathos, satire and irony in the text
- explore and evaluate features of character, plot, setting etc.
- appreciate the oral, mobile and visual elements of drama.

Listening and Speaking (Aural and Oral)

Specific Objectives of Aural and Oral Skills involved in the conduct of the course are to develop the ability to :

- listen to different types of texts and distinguish their types/genres, the language used, the purpose for which it is written and interpret meaning.
- listen with comprehension speeches, lectures and talks and participate actively in the ensuing discussion.
- listen to reports and other expository texts and extract relevant information: listening for gist or detail.
- listen to poetry for understanding and enjoyment.
- take part in role-plays and enact different characters in drama.
- develop the art of public speaking.
- read poetry aloud with expression.

Approach to Writing Skills

Classroom approach should involve activities that enable learners to develop the skills using a process approach:

The Writing Skills that the course aims to develop are the advanced writing skills. However, during the course of the activities the learners would also learn the sub-skills of writing and get an insight into theprocess of writing.

The course aims to develop advanced writing skills involving the sub-skills of writing which will

- lead to a logical conclusion of a reading activity.
- integrate listening, speaking and reading as precursors to the actual act of writing.
- avoid linguistic or stylistic errors in writing.

- use appropriate language, style, format, metre (in poetry), sentence-length and length of the piece or embellishments in a particular genre.
- write in an original manner while adhering to the basic principles of a genre.

Further, the objective is to train the learners specifically in the following kinds of writing :

- responses to the questions based on the text.
- different kinds of text using appropriate vocabulary, language, length and style.
- **expository texts**: reports, descriptions of people, places and processes.
- **narrative texts**: reports, autobiography, memoir, stories.
- **reflective texts**: using ideas and themes expressing one's view and using a persuasive writing style.
- travelogues and features featuring appropriate illustrations and highlights.
- essays on different themes concerning their lives.
- simple stories in a narrative style.
- simple dialogues on a given situation.
- a book or a film review.
- short speeches in an impressive or persuasive style.
- a diary or a journal.
- full-fledged composition from outlines
- poems using appropriate words and keeping in mind the rhyme and metre.
- short poems within the frame of a given genre of poetry.

Participation in an interactive class-room approach is advised. Activities should be designed to promote

i) understanding the employment of different kinds of writing skills, and

ii) appreciation and effective composition of different kinds of writing.

CREATIVE WRITING AND TRANSLATION STUDIES

Code No : 069

Class XI

3 hours

One paper **100 Marks**

Section-wise Weightage of the Paper

Section	**Areas of Learning**	**Marks**	
A.	Reading Comprehension (Three unseen passages, prose and poetry)	20	80
B. i)	Creative Writing Skills	20	
ii)	Translation	20	
C.	Textual	20	
D	Portfolio Assessment (CCE - Internal)	20	
	Total :	**100**	

SECTION A

READING COMPREHENSION **20 Marks**

40 period

Three unseen passages (including poems) with a variety of questions on different levels of comprehension (literal, interpretative and critical) including marks for vocabulary such as inferring and word formation. The total range of the three passages including the poem or a stanza, would be about 1050-1100 words.

a. **Non-fictional prose,** an excerpt 250-300 words in length (for extracting information, inferring and interpreting, evaluating and word attack) - 07 marks

b. **Fictional prose**, a very short story or an excerpt, 250-300 words in length (for interpretation, understanding character, making personal responses and vocabulary) - 07 marks

c. **A short poem** or **a few stanzas** (for understanding central idea, appreciation and personal response) - 06 marks

The **passages or poems** could be any one of the following types:

a) Autobiographies or reflective writing like essays or articles.

b) Excerpts from narrative and fictional writing like stories, novels and plays.

c) A short poem like a sonnet or a lyric, or a stanza from a ballad or a longer lyrical poem.

SECTION B

A CREATIVE WRITING SKILLS **20 marks**

40 periods

Four writing tasks as indicated below:

1. Develop **a composition** of personal writing such as a diary entry, memoir or an autobiography **(200 words)** 6 marks

2. Develop **a feature or a review** such as a travelogue, book or film review based on verbal or a visual input **(200 words)** 6 marks

3. Developing an **original poem** such as a sonnet or a lyric or free verse based on a given idea or theme, visual input, an incident or event in life. 8 marks

B TRANSLATION **20 Marks**

40 periods

1. **Guided translation** i.e. a piece of translated text for completion based on the original text (prose or poetry) 04 marks

2. **Open translation** of a prose piece (**100 words**) 08 marks

3. **Open translation** of a short poem or a stanza 08 marks

SECTION C

READER **20 Marks**

60 periods

1. **Four** questions of **three marks** each to be answered in **60-80 words** based on the understanding of the text. 12 marks

2. **One** out of the **two open ended** essay topics to be answered in **200 words.** 08 marks

SECTION D

PORTFOLIO ASSESSMENT **20 Marks**

50 periods

The Reader has inbuilt suggestions and activities for the students' **Portfolio**.

20 marks have been allotted for the **Portfolio** wherein the following would be assessed:

1. Ideas and their sequencing
2. Applying the basic principles of the particular genre
3. Use of correct and effective language
4. Use of appropriate style
5. Use of techniques and figures of speech.

Note : The Portfolio will consist of a compilation of all written submissions over the duration of the course. A minimum of 15 written assignments each of creative writing and translation would need to be submitted. The submission would include both the original and improved versions of assigned tasks reflective of gradual improvement.

The Portfolio will be evaluated according to the following criteria :

1. Regularity in submission of both class and home written assignments.
2. Quality of tasks with emphasis on creative and comprehensive application.
3. Average grades of all Creative Writing and Translation written tasks.
4. Oral Communication Skills and classroom transaction.

Conversation Skills will be tested as part of **'Continuous Assessment'**. The students can be assessed for making relevant responses to the text, making a point of view and defending their point of view. Students will also be assessed for their ability to read aloud portions from stories, poems or plays. Dramatization would be another aspect which would be used for exercising their spoken skills.

NOTE : **The Portfolio can be monitored and moderated at any time by an expert nominated by the Board.**

Recommended Books :

Reader : 1. **Creative Writing & Translation Studies for Class XI published by CBSE.**

2. **Reader published by NCERT.**

CREATIVE WRITING AND TRANSLATION STUDIES

Code No : 069

Class XI

3 hours

One paper **100 Marks**

Section-wise Weightage of the Paper

Section	Areas of Learning	Marks	
A.	Reading Comprehension (Three unseen passages, prose and poetry)	20	80
B. i)	Creative Writing Skills	20	
ii)	Translation	20	
C.	Textual	20	
D	Portfolio Assessment (CCE - Internal)	20	
	Total :	**100**	

SECTION A

READING COMPREHENSION **20 Marks**

40 period

. . . . unseen passages (including poems) with a variety of questions on different levels of comprehension (literal, interpretative and critical) including marks for vocabulary such as inferring and word formation. The total range of the three passages including the poem or a stanza, would be about **1050-1100** words.

a. **Non-fictional prose,** an excerpt **400-450 words** in length (for extracting information, inferring and interpreting, evaluating and word attack) - 07 marks

b. **Fictional prose**, a very short story or an excerpt, **300-350 words** in length (for interpretation, understanding character, making personal responses and vocabulary) - 07 marks

c. **A short poem** or a few stanzas (for understanding central idea, appreciation and personal response) - 06 marks

The **passages or poems** could be any one of the following types:

a) Excerpts from expository or narrative writing like descriptions, reports, biographies, memoirs or autobiographies or reflective writing like essays or articles.

b) Excerpts from narrative and fictional writing like stories, novels and plays.

c) A short poem like a sonnet or a lyric, or a stanza from a ballad or a longer lyrical poem.

SECTION B

i) CREATIVE WRITING SKILLS **20 marks**

40 periods

Four writing tasks as indicated below:

4. Develop **a composition** of personal writing such as a diary entry, memoir or an autobiography **(200 words)** 6 marks

5. Develop **a feature or a review** such as a travelogue, book or film review based on verbal or a visual input **(200 words)** 6 marks

6. Developing an **original piece** of writing based on a given idea or theme, visual input, an incident or event in life. 8 marks

ii) TRANSLATION **20 Marks**

40 periods

7. **Guided translation** i.e. a piece of translated text for completion based on the original text **(prose or poetry)** 04 marks

8. **Open translation** of a prose piece **(100 words)** 08 marks

9. **Open translation** of a short poem or a stanza 08 marks

SECTION C

READER **20 Marks**

60 periods

10. **Four** questions out of five of three marks each to be answered in **60-80 words** based on the understanding of the text. 12 marks

11. **One** out of the **two open ended** essay topics to be answered in **200 words.** 08 marks

SECTION D

Portfolio Assessment **20 Marks**

40 periods

The Reader has inbuilt suggestions and activities for the students' Portfolio.

20 marks have been allotted for the portfolio wherein the following would be assessed:

1. Ideas and their sequencing
2. Applying the basic principles of the particular genre
3. Use of correct and effective language
5. Use of appropriate style
6. Use of techniques and figures of speech.

Note : The Portfolio will consist of a compilation of all written submission over the duration of the course. A minimum of 15 written assignments each of creative writing and translation would need to be submitted. The submission would include both the original and improved versions of assigned tasks reflective of gradual improvement.

The Portfolio will be evaluated according to the following criteria :

1. Regularity in submission of both class and home written assignments.
2. Quality of tasks with emphasis on creative and comprehensive application.
3. Average grades of all Creative Writing and Translation written tasks.
4. Oral Communication Skills and classroom transaction.

Conversation Skills will be tested as part of **'Continuous Assessment'**. The students can be assessed for making relevant responses to the text, making a point of view and defending their point of view. Students will also be assessed for their ability to read aloud portions from stories, poems or plays. Dramatization would be another aspect which would be used for exercising their spoken skills.

NOTE : The Portfolio can be monitored and moderated at any time by an expert nominated by the Board.

Recommended Books :

Reader : Creative Writing and Translation Studies for Class XII published by CBSE.

28. PHYSICAL EDUCATION
(Code No.048)

It covers the following:

I. Eligibility conditions for opting Physical Education as an elective subject II. Conditions for granting affiliation to the schools for offering Physical Education as an elective subject III. Theory syllabus for class XI (Part A & B) IV. Theory syllabus for class XII (Part A & B). V. Part C - Practical - Distribution of marks for the practical syllabus.

I. ELIGIBILITY CONDITIONS FOR OPTING PHYSICAL EDUCATION

The following category of students shall be permitted to opt the Physical Education:

(i) Those granted permission to join the course should be medically fit to follow the physical education curriculum, theory and practical, prescribed by the Board.

(ii) Those who have represented the school in the Inter School Sports & Games Competitions in any Game/Sport.

(iii) The student should undergo the prescribed physical fitness test and secure a minimum of 40% score.

II. CONDITIONS FOR GRANTING AFFILIATION TO SCHOOLS FOR OFFERING PHYSICAL EDUCATION AS AN ELECTIVE SUBJECT.

Only those schools satisfying the following conditions will be permitted to offer physical education as a course of study at +2 stage as an elective subject:

(i) The school should have adequate open space to accommodate at least 200 M track and play fields for minimum three games/sports.

(ii) The teacher handling the elective programme of physical education should hold a Master

Degree in Physical Education.

(iii) The school should provide adequate funds for physical education and health education for purchase of equipments, books on physical education and also for the maintenance of sports facilities.

III. PHYSICAL EDUCATION

Class XI – Theory **Max.Marks 70**

PART – A

UNIT I : CONCEPT OF PHYSICAL EDUCATION

1.1 Meaning and Definition of Physical Education, Its Aim and Objectives

1.2 Need and importance of Physical Education

1.3 Misconceptions about Physical Education & its Relevance in Inter Disciplinary Context

1.4 Philosophies of Physical Education - Idealism; Naturalism; Pragmatism and Humanism

1.5 Fundamental concepts of Biomechanics in Physical Education and Sports - Laws of Motion, Force, Friction and Projectiles

UNIT 2 : CAREER ASPECTS IN PHYSICAL EDUCATION

2.1 Physical Education as a Profession

2.2 Professional Ethics

2.3 Physical Education and Career Options

2.4 Avenues for Career Preparation

2.5 Self Assessment for Career Choices

UNIT 3 : HEALTH CONCEPTS OF PHYSICAL EDUCATION

3.1 Role of Physical Education Programme on Individual & Family

3.2 Community Health Programme

3.3 Effects of Alcohol, Tobacco and Drugs on Sports Performance

3.4 Life Style Management and Sports - Obesity, Hypertension and Stress

UNIT 4 : OLYMPIC MOVEMENT

4.1 Ancient Olympics (Before 1896)

4.2 Modern Olympics (After 1896)

4.3 Olympic Ideals and objectives

4.4 Values through Olympics Movement - Friendship, Solidarity, Fair Play and Free of Discrimination.

4.5 Olympic Symbols

UNIT 5 : SOCIOLOGICAL ASPECTS OF PHYSICAL EDUCATION

5.1 Meaning of Sociology

5.2 Concept of Sports Sociology and its Importance

5.3 Games & Sports as Man's Cultural Heritage

5.4 Socialization in Sports at Home, School & Community

5.5 Leadership through Physical Education Programmes

UNIT 6 : MEASUREMENTS IN SPORTS

6.1 Meaning and its Importance in Physical Education and Sports

6.2 Cross Weber Test (Contents & Administration)

6.3 Calculation of BMI

6.4 Calculation of Waist-Hip-Ratio

6.5 Rock Fort One mile Test

6.6 AAPHER Physical Fitness Test (Content & Administration)

6.7 Measurement of Heart Rate (Resting & After Exercise)

UNIT 7 : PHYSIOLOGICAL ASPECTS OF PHYSICAL EDUCATION

7.1 Warming up - General & Specific and its Physiological basis

7.2 Functions and Effects of Exercise on Muscular & Skeletal Systems

7.3 Functions and Effects of Exercise on Respiratory & Circulatory Systems

7.4 Factors Affecting the Physical Fitness Components

UNIT 8 : CHANGING TRENDS IN PHYSICAL EDUCATION & SPORTS

8.1 Concept and Principles of Integrated Physical Education

8.2 Concept and Principles of Adapted Physical Education

8.3 Concept and Components of Occupational Health Hazards

8.4 Concept and Components of Health related fitness

8.5 Sports for All

Part B

Following sub topics related to any one Game/Sport of choice of student out of: Athletics, Badminton, Gymnastics, Judo, Skating, Swimming, Table Tennis, Taekwondo, Tennis, Yoga

Unit 1

1.1 History of the Game/Sport

1.2 Latest General Rules of the Game/Sport

1.3 Specifications of Play Fields and Related Sports Equipments

1.4 Important Tournaments and Venues

1.5 Sports Personalities

1.6 Proper Sports Gear and its Importance

Unit 2

2.1 Fundamental Skills of the Game/Sport

2.2 Specific Exercises of Warm-up and Conditioning

2.3 Related Sports Terminologies

2.4 Sports Awards

2.5 Common Sports Injuries & its Prevention

2.6 CBSE Sports and its Organizational Set-up

IV. PHYSICAL EDUCATION

Class XII – Theory **Max.Marks 70**

PART – A

UNIT 1 : PHYSICAL FITNESS & WELLNESS

1.1 Meaning & Importance of Physical Fitness & Wellness

1.2 Components of Physical Fitness & Wellness

1.3 Factors Affecting Physical Fitness & Wellness

1.4 Principles of Physical Fitness Development

1.5 Means of Fitness Development - Aerobic & Anaerobic, Games & Sports, Yoga and Recreational Activities

UNIT 2 : PLANNING IN SPORTS

2.1 Fixtures - Knock Out; League; Seeding and Bye

2.2 Intramurals And Extramurals

2.3 Formation Of Committees for Organizing Sports Events

2.4 Specific Sports Programmes - Health Runs; Run for Fun; Run for Unity; Run for Awareness; Run for Specific Causes.

UNIT 3 : SPORTS ENVIRONMENT

3.1 Meaning & Need for Sports Environment

3.2 Essential Elements of Positive Sports Environment

3.3 Role of Individual in Improvement of Sports Environment for Prevention of Sports RelatedAccidents

3.4 Role of Spectators and Media for Creating Positive Sports Environment

UNIT 4 : POSTURES

4.1 Meaning and Concept of Correct Postures - Standing And Sitting

4.2 Advantages of Correct Posture

4.3 Common Postural Deformities - Knock Knee; Flat Foot; Round Shoulders; Lordosis, Kyphosis, Bow Legs and Scolioses

4.4 Physical Activities as Corrective Measures

UNIT 5 : YOGA

5.1 Meaning & Importance of Yoga

5.2 Yoga as an Indian Heritage

5.3 Elements of Yoga

5.4 Role of Yoga in Sports - Asanas, Pranayam and Mediation

UNIT 6 : SPORTS AND NUTRITION

6.1 Balanced Diet

6.2 Elements of Diet

6.3 Components of Diet

6.4 Role of Diet on Performance

UNIT 7 : TRAINING METHODS

7.1 Meaning, Concept and Principles of Training

7.2 Methods of Flexibility Development

7.3 Methods of Strength Development - Isometric & Isotonic

7.4 Methods of Endurance Development - Continuous Method, Interval Training & Fartlek.

7.5 Methods of Speed Development

7.6 Circuit Training

UNIT 8 : PSYCHOLOGICAL ASPECTS OF PHYSICAL EDUCATION

8.1 Definition & Importance of Sports Psychology

8.2 Types and Techniques of Motivation

8.3 Developmental Characteristics at Different Stages of Growth

8.4 Adolescent Problems & its Management

8.5 Ethics in Sports

8.6 Anxiety and its Management

Part B

Following sub topics related to any one Game/Sport of choice of student out of: Basketball, Cricket, Football, Handball, Hockey, Kabaddi, Kho Kho, & Volleyball.

Unit 1

1.1 History of the Game/Sport

1.2 Latest General Rules of the Game/Sport

1.3 Specifications of Play Fields and Related Sports Equipments

1.4 Important Tournaments and Venues

1.5 Sports Personalities

1.6 Proper Sports Gear and its Importance

Unit 2

2.1 Fundamental Skills of the Game/Sport

2.2 Specific Exercises of Warm-up and Conditioning

2.3 Related Sports Terminologies

2.4 Sports Awards

2.5 Common Sports Injuries & its Prevention

2.6 SGFI & its Organizational Set-Up

V. PART 'C' - PRACTICAL

(For classes XI & XII)

Max.Marks 30

The Practical Syllabus has been divided into five parts & the marks allotted for each part are as follows:

(i)	Physical Fitness Test (Compulsory) :	10 Marks
(ii)	Skill of Chosen Sport/Game :	05 Marks
(iii)	Any Five Asanas :	05 Marks
(iv)	Viva :	05 Marks
(v)	Record Book(File)* :	05 Marks

* Record Book (File) must include other than the details of Game/Sport of your choice the following:

(i) BMI calculation of minimum ten Students

(ii) AAHPHER Test Score of minimum ten Students

28. शारीरिक शिक्षा (कोड संख्या 048)

यह निम्नलिखित पहलुओं को सम्मिलित करता है

1. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु पात्रता शर्ते,
2. शारीरिक शिक्षा को वैकल्पिक विषय के रूप में पेश करने वाले विद्यालयों को सम्बद्धता देने सम्बन्धी शर्तें
3. कक्षा-11वीं के लिए थ्योरी पाठ्यक्रम (भाग क एवं ख)
4. कक्षा-12वीं के लिए थ्योरी पाठ्यक्रम (भाग क एवं ख)
5. भाग ग प्रायोजिक कार्यकलाप/प्रायोगिक पाठ्यक्रम के लिए अंकों का वितरण
6. कक्षा-11वीं में शारीरिक शिक्षा में प्रवेश के लिए शारीरिक स्वस्थता परीक्षा हेतु शर्तें एवं कक्षा 11वीं एवं 12वीं की छात्राओं के लिए शारीरिक स्वस्थ्यता की जाँच के लिए शर्ते।
7. कक्षा 11वीं में शारीरिक शिक्षा में प्रवेश के लिए शारीरिक स्वास्थ्यता परीक्षा हेतु शर्तें तथा कक्षा 11वीं एवं 12वीं के छात्रों के लिए शारीरिक स्वस्थता के लिए जाँच हेतु शर्ते।
8. पाठ्यक्रम की विषय वस्तु की सूची, कार्यभार/शिक्षण घटक, आबंटन के अधिकतम अंक, पेपर सेटिंग एवं परीक्षा के लिए सेटिंग प्रश्नपत्रों की प्रकृति।
9. शारीरिक शिक्षा थ्योरी पेपर के मूल्यांकन के लिए मार्गदर्शिका।
10. शारीरिक शिक्षा के अध्यापकों के लिए मार्गदर्शिका।

1. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु पात्रता शर्तें

I. निम्नलिखित विद्यार्थी वर्ग पाठ्यक्रम में प्रवेश के पात्र होंगे

1. जिन्होंने किसी भी खेल में अंतर-विद्यालय खेल प्रतियोगिताओं में विद्यालय का प्रतिनिधित्व किया है।
2. जिन्होंने विद्यालय का प्रतिनिधित्व नहीं किया परन्तु पाठ्यक्रम में प्रवेश लेने के इच्छुक हैं उन्हें शारीरिक स्वास्थ्यता परीक्षण से गुजरना होगा तथा न्यूनतम 40% अंक प्राप्त करने होंगे।
3. जिन्हें पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु आज्ञा प्रदान कर दी गई हो, उन्हें शारीरिक शिक्षा के निर्धारित कार्यक्रम को पूर्ण करने के लिए चिकित्सा की दृष्टि से स्वस्थय होना चाहिए।
4. शारीरिक-शिक्षा एवं स्वास्थ्य-शिक्षा की कक्षा की एक इकाई 40 विद्यार्थियों से अधिक नहीं होनी चाहिए।
5. अनुदेशात्मक घंटे तथा पीरियड-अवधि पूर्णतय बोर्ड के नियमों के अनुसार होंगे।

II. शारीरिक शिक्षा को वैकल्पिक विषय के रूप में पेश करने वाले विद्यालयों को सम्बद्धता देने संबंधी शर्तें।

केवल उन्हीं विद्यालयों को +2 स्तर पर पाठ्यक्रम में शारीरिक शिक्षा को वैकल्पिक विषय के रूप में पेश करने के लिए अनुमति प्रदान की जाएगी जो निम्नलिखित शर्तें पूर्ण करेंगे

1. विद्यालय के पास पर्याप्त खुला स्थान होना चाहिए जिसमें कम से कम 200 मीटर का ट्रैक तथा तीन खेलों/क्रीड़ाओं के लिए खेल का मैदान बन सके।

2. शारीरिक शिक्षा के वैकल्पिक कार्यक्रम को कार्यान्वित करने वाला शिक्षक शारीरिक शिक्षा में स्नातकोत्तर होना चाहिए।

3. विद्यालय का शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य शिक्षा को लिए, साजो-सामान की खरीद के लिए, शारीरिक शिक्षा की पुस्तकों के लिए और खेल सुविधाओं के रख-रखाव के लिए भी पर्याप्त निधि उपलब्ध करानी चाहिए।

शारीरिक शिक्षा

कक्षा-11 थ्योरी **भाग-क** **अधिकतम अंक 70**

1. शारीरिक शिक्षा की अवधारणा

1.1 शारीरिक शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा, इसके लक्ष्य एवं उद्देश्य

1.2 शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता और महत्व

1.3 शारीरिक शिक्षा के बारे में भ्रांतियां और इसकी अंतः अनुशासनिक संदर्भ में महत्ता।

2. शारीरिक शिक्षा में व्यवसाय के आयाम।

2.1 शारीरिक शिक्षा में व्यवसाय के विकल्प।

2.2 जीविका आयोजन के लिए मार्ग।

2.3 जीविका चयन के लिए अभिप्रेरणा और आत्ममूल्यांकन।

3. शारीरिक शिक्षा के दैहिकी आयाम।

3.1 वार्मिंग अप-सामान्य एवं विशिष्ट एवं इसके दैहिकी आधार।

3.2 व्यायाम का मांसपेशी और पाचन-तंत्रों पर प्रभाव।

3.3 व्यायाम का श्वास और परिसंचरण तंत्रों पर प्रभाव।

4. शारीरिक शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आयाम।

4.1 खेलकूद मनोविज्ञान की भूमिका एवं परिभाषा।

4.2 खेलकूद में उपलब्धियां एवं प्रेरणा

4.3 किशोर समस्याएं और इसका प्रबंधन

5. शारीरिक शिक्षा के स्वास्थ्य धारणाएं

5.1 समुदाय स्वास्थ्य प्रोत्साहन (व्यक्तिगत, परिवार एवं समाज) पर शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम की भूमिका।

5.2 अल्कोहल, तम्बाकू तथा मादक दवाओं का खेलकूद प्रदर्शन पर प्रभाव।

5.3 मोटापा कारण एवं निवारण उपाय तथा प्रदर्शन पर खुराक की भूमिका।

शारीरिक शिक्षा

कक्षा-11वीं

भाग-ख

विद्यार्थी निम्नलिखित में से कोई भी खेल/स्पोर्ट से अपनी इच्छानुसार चुन सकते हैं : बैडमिंटन हैंडबाल, हॉकी, कबड्डी, खोखो, स्केटिंग, तैराकी एवं ताइक्वांडो।

एकक-1

1.1 खेल/खेलकूद का इतिहास

1.2 खेल/खेलकूद के नवीनतम सामान्य नियम

1.3 खेल के मैदानों का माप एवं संबंधित खेल-कूद उपस्करों का विनिर्देशन

1.4 महत्वपूर्ण टूर्नामेंट एवं स्थान

1.5 खेलकूद व्यक्तित्व

एकक-2

2.1 खेल/खेलकूद के मूल कौशल

2.2 गरमाने (वार्म-अप) एवं अनुकूलन (कंडीनशनिंग) के विशिष्ट व्यायाम।

2.3 संबंधित खेलकूद पारिभाषिकी

2.4 खेलकूद पुरस्कार

2.5 सामान्य खेलकूद चोटें एवं उनसे बचाव

शारीरिक शिक्षा

अधिकतम अंक 70 **कक्षा 12वीं-थ्योरी**

भाग-क

1. शारीरिक स्वस्थता एवं पुष्टता

1.1 शारीरिक स्वस्थता एवं पुष्टता का अर्थ एवं महत्व

1.2 शारीरिक स्वस्थता एवं पुष्टता के घटक

1.3 शारीरिक स्वस्थता एवं पुष्टता को प्रभावित करने वाले तत्व

1.4 शारीरिक स्वस्थता विकास के सिद्धांत

1.5 स्वस्थता विकास के साधन : ऐरोबिक एवं ऐनायरोबिक खेलकूद, योग एवं मनोविनोद क्रियाएँ।

2. प्रशिक्षण विधियां

2.1 प्रशिक्षण का अर्थ एवं अवधारणा

2.2 प्रशिक्षण की विधियां

2.3 बल विकास की विधियां : आईसोमैटिक व आईसोकाईनेटिक व्यायाम।

2.4 सहनशक्ति विकास की विधियां सतत् विधि, मध्यान्तर प्रशिक्षण और फार्टलेक

2.5 गति विकास की विधियां त्वरित दौड़ और वेग/चाल दौड़

2.6 परिधि प्रशिक्षण

3. शारीरिक शिक्षा के सामाजिकी आयाम

3.1 समाजशास्त्र एवं खेलकूद समाजशास्त्र का अर्थ

3.2 खेल व क्रीड़ा मनुष्य की सांस्कृतिक विरासत के रूप में

3.3 समाजीकरण, नेतशत्व, शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम तथा ओलंपिक गतिविधि द्वारा नैतिक शिक्षा

4. क्रीड़ा एवं पर्यावरण

4.1 शारीरिक शिक्षा कार्यक्रम में पर्यावरण का अर्थ एवं आवश्यकता

4.2 सकारात्मक पर्यावरण के आवश्यक तत्व

4.3 खेल संबंधी दुर्घटनाओं के बचाव हेतु पर्यावरण के सुधार में व्यक्ति की भूमिका

5. योग

5.1 योग का अर्थ एवं महत्व

5.2 योग एक भारतीय विरासत

5.3 योग के तत्व

5.4 क्रीड़ा में योग की भूमिका

शारीरिक शिक्षा

कक्षा-12वीं

भाग-ख

इन विषयों में से विद्यार्थी की इच्छा के किसी एक खेल/क्रीड़ा से संबंध रखने वाले निम्नलिखित उप विषय ऐथलेटिक, बॉस्केटबॉल, क्रिकेट, फुटबाल, जूडो, टेबल-टेनिस, टेनिस एवं बॉलीबॉल

एकक-1

1.1 खेल/क्रीड़ा का इतिहास

1.2 खेल/क्रीड़ा के अद्यतन सामान्य नियम

1.3 खेल मैदानों का माप और खेल के साजो-सामान का विशिष्ट विवरण

1.4 खेल/क्रीड़ा के आधारभूत कौशल

1.5 संबंधित खेल पारिभाषिकी

एकक-2

2.1 महत्वपूर्ण खेल प्रतियोगिताएं (टूर्नामेंट) और स्थान

2.2 खेल व्यक्तित्व

2.3 खेल पुरस्कार

2.4 विभिन्न खेल संगठन

2.5 खेल चोटों की बहाली व प्रथम उपचार

खण्ड-ग प्रयोगात्मक

(कक्षा-11वीं एवं 12वीं के लिए)

भाग-ग **अधिकतम अंक 30**

क्रियात्मक पाठ्यक्रम को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया गया है और प्रत्येक भाग के लिए आबंटित अंक नीचे दिए गए हैं

1. शारीरिक स्वस्थ्यता जांच (अनिवार्य)	:	10 अंक
2. खेल/क्रीड़ा चुनने का कौशल	:	15 अंक
3. मौखिक एवं रिकॉर्ड पुस्तक (फाईल)	:	05 अंक

6. शारीरिक शिक्षा की कक्षा XI मे प्रवेश के लिए शारीरिक स्वस्थ्यता टेस्ट के लिए शर्तें एवं कक्षा XI एवं XII की छात्राओं के लिए शारीरिक स्वस्थ्यता के लिए टेस्ट

क		ख			ग		घ	ङ	
60 मी. (सैकेंड में)	100 मी. (सैकेंड में)	लम्बी कूद (मीटर में)	स्टेडिंग ब्रॉड जम्प (मीटर में)	अनुलम्ब कूद (मीटर में)	संशोधित बेंटनी पुश-अप (संख्या में)	बैटनी सिट-अप (संख्या में)	ओवर हैंड बैकवार्ड दोनों हाथों के साथ बॉस्केटबाल फेंकना (मीटर में)	गोला फेंक 04.00 कि.ग्रा. (मीटर में)	शटन टन 4.10 मी (सैकेंड में)
10	9.0	14.0	2.00	28	25	30	12.00	07.50	10.50
9	9.2	14.3	1.85	26	23	27	01.50	07.00	10.70
8	9.5	14.7	1.65	23	20	24	10.50	06.50	11.00
7	9.8	15.1	1.45	20	18	21	09.50	06.00	11.30
6	10.2	15.6	1.25	17	16	19	08.50	05.50	11.60
5	10.6	16.2	1.00	15	14	14	07.00	05.50	12.00
4	1.0	17.0	0.80	13	12	12	06.00	04.50	12.40
3	11.5	17.5	0.60	10	10	10	05.00	04.00	12.80
2	12.0	18.5	0.50	08	07	07	04.00	03.50	13.50
1	12.5	19.2	0.40	06	04	04	03.50	03.00	14.50

- रुचि के अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी को पांच मद का चयन करना होगा।
- मद क, ख, ग तथा घ से टेस्अ के लिए एक मद का चुनाव करना चाहिए तथा लेख मद ङ सभी के लिए अनिवार्य हैं।

7. कक्षा XI मे शारीरिक शिक्षा हेतु प्रवेश के लिए शारीरिक स्वस्थ्यता परीक्षा व कक्षा XI एवं XII के लड़कों शारीरिक स्वस्थ्यता जांच के लिए मानक

	क		ख			ग		घ		ङ
बिन्दू	60 मी. (सैकेंड में)	100 मी. (सैकेंड में)	लम्बी कूद (मीटर में)	स्टेडिंग ब्रॉड जम्प (मीटर में)	अनुलम्ब कूद (मीटर में)	पुश-अप (संख्या में)	बैटनी सिट-अप (संख्या में)	ओवर हैंड बैकवार्ड दोनों हाथों के साथ बॉस्केटबाल फेंकना (मीटर में)	गोला फेंक 07.260 कि.ग्रा. (सैंकड में)	शटन टन 4.10 मी (मीटर में)
10	07.50	12.00	05.50	02.50	40	40	45	16.00	07.50	09.00
9	07.70	12.30	05.20	02.35	38	38	42	15.50	07.00	09.20
8	08.00	12.70	04.90	02.15	35	35	38	14.50	06.50	09.50
7	08.30	13.10	04.60	01.95	32	32	34	13.50	06.00	09.80
6	08.60	13.60	04.30	01.75	28	29	30	12.50	05.50	10.10
5	08.90	14.20	04.00	01.50	25	25	25	11.50	05.00	10.50
4	09.30	15.00	03.80	01.25	23	21	22	10.50	04.50	11.00
3	09.70	15.50	03.60	01.00	20	17	19	09.50	04.00	11.50
2	10.10	16.50	03.30	00.80	18	14	15	89.50	03.560	12.20
1	10.50	17.50	03.30	00.60	16	10	10	07.50	03.00	13.00

- रुचि के अनुसार प्रत्येक विद्यार्थी को पांच मद का चयन करना होगा।
- मद क, ख, ग तथा घ से टेस्अ के लिए एक मद का चुनाव करना चाहिए तथा लेख मद ङ सभी के लिए अनिवार्य हैं।

पाठ्य विवरण की विषय वस्तु की सूची, कार्य का भर/शिक्षण घटक, आंबटन के लिए, अधिकतम अंक, परीक्षा के लिए पेपर सेटिंग प्रश्न पत्रों की प्रकृति

पाठ्यक्रम के विषय वस्तु की सूची	कार्य का भर/शिक्षण घटक	अधिकतम अंक आबंटन	पेपर सेटिंग	परीक्षा के लिए सेटिंग प्रश्न पत्रों की प्रकृति
भाग 'क'			एक एकक से किसी भी	• ज्ञान विषय के दो प्रश्न
एकक	10 पीरियड	10	प्रकृति के 02 प्रश्न सेट किए जाने चाहिए	• प्रयोग के दो प्रश्न
एकक I	10 पीरियड	10		• समझ के दो प्रश्न
एकक II	10 पीरियड	10	• कुल पाठ्यक्रम में से 14 प्रश्न सेट किए जाएंगे।	• उदार प्रकृति का एक प्रश्न
एकक III	10 पीरियड	10	• विद्यार्थी को सात प्रश्न करने अनिवार्य हैं।	
एकक IV	10 पीरियड	10		
एकक V	10 पीरियड	10	प्रत्येक एकक से एक	
भाग 'ख'				
एकक I	10 पीरियड	10		
एकक II	10 पीरियड	10		
प्रायोगात्मक				

कवर के 70 पीरियड	10	निर्धारण	(i) शर्तों के अनुसार स्वस्थ्यता टेस्ट
(i) शारीरिक स्वस्थ्यता (ii) खेलकूद एवं स्पोर्टस के लिए खेलकूद का प्रशिक्षण (iii) पुस्तक/फाईल एवं वायवा के रिकॉर्ड की तैयारी (iv) कक्षा के बीच तुलनात्मक निर्धारण	 15 05	(i) स्वस्थ्यता स्तर (ii) कौशल में निपुणता (iii) पुस्तक/फाइल एवं वायवा के रिकॉर्ड की तैयारी	(ii) तीन मानदंडों पर कौशल टेस्ट (क) तीन में से एक वैकल्पिक (ख) परीक्षक द्वारा अनिवार्य सेट (ग) विद्यार्थी की रुचि के अनुसार स्वतुत्र (iii) कक्षा के बीच तुलनात्मक निर्धारण

9. शारीरिक शिक्षा के थ्योरी पेपर के मूल्यांकन हेतु मार्गदर्शन

1. प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का होगा।
2. विद्यार्थियों से प्रत्येक इकाई में दिए गए दो विकल्पों में से एक प्रश्न करने की आशा की जाती है।
3. प्रत्येक प्रश्न के लिए 10 अंकों का विभाजन निम्नानुसार है

(i) अंतर्वस्तु का ज्ञान	3 अंक
(ii) अंतर्वस्तु के ज्ञान की समझ	3 अंक
(iii) सामर्थ्य/उदाहरण/ज्ञान के प्रयोग हेतु विवरण एवं धारणा की समझ	4 अंक

टिप्पणी लम्बे एवं मध्यम लम्बाई के प्रश्नों के लिए मद सं. 3 लागू होगी। लम्बे प्रश्न 200-250 शब्दों के होगें व लघु प्रश्न 80-100 शब्दों के होंगे।

4. अति लघु प्रश्नों के 5 सब-सेट प्रत्येक 2 अंक के हैं।

टिप्पणी पारिभाषिकी/परिभाषाएं/अवधारणाओं का वर्णन लगभग 30 शब्दों में किया जाएगा। यदि वणर्न सदंर्भ लेखकों स्रोत और प्रयोग की स्थिति से समर्थित है तो 2 अंक दिए जा सकते हैं। अन्यथा उपयुक्त रूप से अंक आवंटित किए जा सकते हैं।

5. बड़े निबंध के उदार घटक/व्यापक टिप्पणी/अर्थगर्भित लेखन 250 शब्दों से अधिक होगा।

1. विषय का ज्ञान एवं समझ	2 अंक
2. संदर्भ का स्रोत/लेखक/मनोयोग	1 अंक
3. अनुप्रयोग आयामों की समझ	3 अंक
4. अर्थगर्भित लेखन/आलोचनात्मक विश्लेषण/भावी मॉडल	4 अंक

10. शारीरिक शिक्षा अध्यापकों के लिए मार्गदर्शन

शारीरिक शिक्षा का अध्यापन सैद्धांतिक ज्ञान की समझ का सम्मिश्रण है जिसका प्रयोग विभिन्न खेलों एवं कूद के प्रदर्शन में किया जाना है। तदनुसार कक्षा-11वीं एवं 12वीं स्तर पर पाठ्यक्रम के सम्पादन हेतु सुझाए गए निम्नलिखित विचारों को मार्गदर्शन के रूप में प्रयुक्त करना चाहिए। 1, 3, 4, 5 एवं 6, 7 को पूर्णतया ज्ञात/तथ्य अंगीकार होने चाहिए। 8 पाठ्यक्रम की अंतर्वस्तु, कार्यभार/शिक्षण के घटक, अधिकतम अंकों का आबंटन, पेपर सेटिंग तथा परीक्षा के लिए सेट प्रश्नों की प्रकृति की व्यवस्था करता है। यह तदनुसार पाठ्यक्रम को पूरा करने के लिए अध्यापकों हेतु मार्गदर्शन मुहैया करता है। 9. विद्यार्थियों की उत्तर-पुस्तिकाओं के मूल्यांकन कर्ताओं द्वारा अनुसरण की जाने वाली मार्गदर्शिका मुहैया कराता है। उसके संबंध में अध्यापकों के लिए यह आवश्यक है कि वे मूल्यांकन के घटकों को भी समझें।

पाठ्यक्रम की प्रत्येक यूनिट को अवश्य पढ़ाया जाएगा व विद्यार्थियों को अवधारणा (परिभाषाएं, व्याख्याएं आदि) के ज्ञान, व्याख्या एवं वर्णन में समझ, शारीरिक शिक्षा में खेलकूद व जीवन के विभिन्न विन्यास में अनुप्रयोग।

उदाहरण : इकाई-2, कक्षा-11वीं

शारीरिक शिक्षा में जीविका के आयाम

जीविका विकल्प शारीरिक शिक्षा, पारम्परिक व उभरती प्रवृत्तियों में क्या जीविकाएं है?

प्रशिक्षण/अनुशिक्षण, स्वास्थ्य संबंधी जीविका, प्रशासन संबंधी जीविकाएं, प्रदर्शन संबंधी जीविकाएं (कर्मचारियों/खिलाड़ियों/रिकॉर्ड्स/रिपोर्ट इत्यादि) संप्रेषण (पत्रकारिता, फोटोग्रफी, टी.वी., रिपोर्टर, पुस्तक प्रकाशन, लेखन, उद्योग, मार्केटिंग, विक्रय, इवेंट मैनेजमेंट इत्यादि)

2.2 विभिन्न जीविकाओं के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों में विभिन्न डिग्री एवं डिप्लोमा, पात्रता कोर्स की अवधि, विभिन्न कोर्स कराने वाली विभिन्न संस्थाएं

2.3 जीविका चुनाव में स्व-मूल्यांकन एवं अभिप्रेरणा। प्रेरक के रूप में कार्य करने वाले कारक और खेलकूद जीविका चुनने के लिए व्यक्तिगत इच्छा के मूल्यांकन के लिए मानक।

पाठ्यक्रम के विभिन्न भागों की विभिन्न अवधारणाओं की समझ और ज्ञान को लागू करने के रूप में तात्कालिक सामाजिक विन्यास में सामुदायिक आधारित कार्यक्रम, व्यक्तिगत/समूह सर्वेक्षण, साक्षात्कार एवं क्विज का उत्तरदायित्व लेना चाहिए।

जहाँ तक सम्भव हो श्रव्य-दृश्य मदद का सहारा, बातचीत, रेडियो, टी.वी., प्रोजेक्टर इत्यादि विषय को स्पष्ट करने के लिए करना चाहिए।

पाठ्यक्रम के प्रयोगात्मक घटक के लिए पाठ्यचर्या को प्रमाणन, प्रदर्शन मैचों, प्रयोगात्मक मैचों खेलकूद में दक्षता, वार्षिकोत्सव, वार्षिक खेलकूद दिवस इत्यादि के माध्यम से सम्पादित करना चाहिए। अधिगम घटक के महत्व का तुलनात्मक निर्धारण परीक्षार्थी के प्रदर्शन के आधार पर किया जाए। आन्तरिक मूल्यांकन निरन्तर एवं प्रगतिशील होना चाहिए।

भाग-ग

ट्रैक एण्ड फील्ड

प्रयोगात्मक : 10 अंक

1. तेज दौड़ और रिले

(i) उचित अनुदेशों का प्रयोग करते हुए ब्लॉक्स के साथ आरम्भ करने का अभ्यास।

(ii) समय क्रिया अवधि-प्रतिक्रियात्मक समय, ब्लॉक, निकासी का समय, गतिवर्द्धन समय, गति रख-रखाव का समय, समापन समय।

श्रेणीकरण की योजना

(क) 100 मीटर दौड़

लड़के	लड़कियां
11.5 सैकन्डस से नीचे = A1	13.7 सैकन्डस से 14.4 सैकन्डस = A1
11.6 सैकन्डस से 12.3 सैकन्डस = A2	14.5 सैकन्डस से 15.2 सैकन्डस = A2
12.4 सैकन्डस से 13.1 सैकन्डस = B1	15.3 सैकन्डस से 16.0 सैकन्डस = B1
13.2 सैकन्डस से 13.9 सैकन्डस = B2	16.1 सैकन्डस से 16.8 सैकन्डस = B2
14.0 सैकन्डस से 14.7 सैकन्डस = C1	16.9 सैकन्डस से 17.7 सैकन्डस = C1
14.8 सैकन्डस से 15.5 सैकन्डस = C2	17.8 सैकन्डस से 18.5 सैकन्डस = C2
15.6 सैकन्डस से 16.3 सैकन्डस = D1	18.6 सैकन्डस से 19.4 सैकन्डस = D1
16.4 सैकन्डस से 17.1 सैकन्डस = D2	19.4 सैकन्डस से 20.1 सैकन्डस = D2
17.2 सैकन्डस से ऊपर = E	20.2 सैकन्डस और ऊपर = E

(ख) 200 मीटर दौड़

लड़के	लड़कियां
25.0 सैकन्डस से नीचे = A1	24.0 सैकन्डस से 14.4 सैकन्डस = A1
25.1 सैकन्डस से 26.0 सैकन्डस = A2	24.1 सैकन्डस से 27.0 सैकन्डस = A2
26.1 सैकन्डस से 27.0 सैकन्डस = B1	27.1 सैकन्डस से 30.0 सैकन्डस = B1
27.1 सैकन्डस से 28.0 सैकन्डस = B2	30.1 सैकन्डस से 33.0 सैकन्डस = B2
28.1 सैकन्डस से 29.0 सैकन्डस = C1	33.1 सैकन्डस से 36.0 सैकन्डस = C1
29.1 सैकन्डस से 30.0 सैकन्डस = C2	36.1 सैकन्डस से 39.0 सैकन्डस = C2
30.1 सैकन्डस से 31.0 सैकन्डस = D1	39.1 सैकन्डस से 42.0 सैकन्डस = D1

31.1 सैकन्डस से 32.0 सैकन्डस = D2	42.1 सैकन्डस से 45.1 सैकन्डस = D2
32.1 सैकन्डस से ऊपर = E	45.1 सैकन्डस और ऊपर = E

(ग) 400 मीटर दौड़

लड़के	लड़कियां
56.0 सैकन्डस से नीचे = A1	68 सैकन्डस से 14.4 सैकन्डस = A1
56.1 सैकन्डस से 58.0 सैकन्डस = A2	68.1 सैकन्डस से 15.2 सैकन्डस = A2
58.1 सैकन्डस से 60.0 सैकन्डस = B1	71.1 सैकन्डस से 16.0 सैकन्डस = B1
60.1 सैकन्डस से 62.0 सैकन्डस = B2	74.1 सैकन्डस से 16.8 सैकन्डस = B2
62.1 सैकन्डस से 64.0 सैकन्डस = C1	77.1 सैकन्डस से 17.7 सैकन्डस = C1
64.1 सैकन्डस से 66.0 सैकन्डस = C2	80.1 सैकन्डस से 18.5 सैकन्डस = C2
66.1 सैकन्डस से 68.0 सैकन्डस = D1	83.1 सैकन्डस से 19.4 सैकन्डस = D1
68.1 सैकन्डस से 70.0 सैकन्डस = D2	86.1 सैकन्डस से 20.1 सैकन्डस = D2
70.1 सैकन्डस से ऊपर = E	89.1 सैकन्डस और ऊपर = E

2. मध्यम और लम्बी दूरी की दौड़

(i) उचित आदेशों का प्रयोग करते हुए खड़ी अवस्था में आरम्भ करने का अभ्यास।

(ii) क्षमता-परीक्षण दौड़ की तकनीक

श्रेणीकरण की योजना

(घ) 800 मीटर दौड़

लड़के	लड़कियाँ
2.10.0 और नीचे = A1	2.45.0 और नीचे = A1
2.10.1 से 2.20.0 = A2	2.45.1 सैक. से 2.55.0 = A2
2.20.1 से 2.30.0 = B1	2.55.1 सैक. से 3.05.0 = B1
2.30.1 से 2.40.0 = B2	3.05.1 सैक. से 3.15.0 = B2
2.40.1 से 2.50.0 = C1	3.15.1 सैक. से 3.25.0 = C1
2.50.0 से 3.00.0 = C2	3.25.1 सैक. से 3.35.0 = C2
3.00.1 से 3.10.0 = D1	3.35.1 सैक. से 3.45.0 = D1
3.00.1 से 3.20.0 = D2	3.45.1 सैक. से 3.55.0 = D2
3.20.1 और ऊपर = E	3.55.1 सैक. और ऊपर = E

(ड) 1500 मीटर दौड़ (केवल लड़के)

4.40.0 और नीचे = A1

4.40.1 से 4.50.0 = A2

4.50.1 से 5.00.0 = B1

5.00.1 से 5.10.0 = B2

5.10.1 से 5.20.0 = C1

5.21.1 से 5.30.0 = C2

5.31.1 से 5.40.0 = D1

5.40.1 से 4.50.0 = D2

5.50.1 और ऊपर = E

(च) 3000 मीटर दौड़ (केवल लड़कों के लिए)

10.30.0 और नीचे = A1

10.30.1 से 11.00.0 = A2

11.00.1 से 11.30.0 = B1

11.30.1 से 12.00.0 = B2

12.00.1 से 12.30.0 = C1

12.30.1 से 13.00.0 = C2

13.00.1 से 13.30.0 = D1

13.30.1 से 14.00.0 = D2

14.00.1 और ऊपर = E

बाधा दौड़

(i) लयबद्धता से टांग को घुमाने की क्रिया

(ii) पिछली टांग की क्रिया

(iii) बाधा कूदते समय शरीर की स्थिति

(iv) बाजू क्रिया

(v) आरम्भ से पहली बाधा और अन्य बाधाओं के मध्य लयबद्धता का विकास करना।

श्रेणीकरण की योजना

(लड़कों के लिए)	**(लड़कियों के लिए)**
110 मीटर बाधा	**100 मीटर बाधा**
20.0 सैकन्डस से नीचे = A1	20.0 सैकन्डस और नीचे = A1
20.1 सैकन्डस से 21.0 सैकन्डस = A2	20.1 सैकन्डस से 21.0 सैकन्डस = A2
21.1 सैकन्डस से 22.0 सैकन्डस = B1	21.1 सैकन्डस से 22.0 सैकन्डस = B1
22.1 सैकन्डस से 23.0 सैकन्डस = B2	22.1 सैकन्डस से 23.0 सैकन्डस = B2
23.1 सैकन्डस से 24.0 सैकन्डस = C1	23.1 सैकन्डस से 24.0 सैकन्डस = C1
24.1 सैकन्डस से 25.0 सैकन्डस = C2	24.1 सैकन्डस से 25.0 सैकन्डस = C2
25.1 सैकन्डस से 26.0 सैकन्डस = D1	25.1 सैकन्डस से 26.0 सैकन्डस = D1
26.1 सैकन्डस से 27.0 सैकन्डस = D2	26.1 सैकन्डस से 27.0 सैकन्डस = D2
27.1 सैकन्डस और ऊपर = E	27.1 सैकन्डस और ऊपर = E

400 मीटर बाधा दौड़ (लड़कों के लिए)

65.0 सैकन्डस से नीचे = A1

65.1 सैकन्डस से 68.0 सैकन्डस = A2

68.1 सैकन्डस से 71.0 सैकन्डस = B1

71.1 सैकन्डस से 74.0 सैकन्डस = B2

74.1 सैकन्डस से 77.0 सैकन्डस = C1

77.1 सैकन्डस से 80.0 सैकन्डस = C2

80.1 सैकन्डस से 83.0 सैकन्डस = D1

83.1 सैकन्डस से 86.1 सैकन्डस = D2

86.1 सैकन्डस से ऊपर = E

लम्बी कूद

आगे को दौड़ना

उछलना (टेक-ऑफ)

उड़ने की अवस्था (हवा में दौड़ने की शैली)

नीचे उतरना

श्रेणीकरण की योजना

लड़के	लड़कियाँ
5.50 मी. से ऊपर = A1	5.00 मी. और ऊपर = A1
5.00 मी. से 5.49 मी. = A2	4.50 मी. से 4.99 मी. = A2
4.50 मी. से 4.99 मी. = B1	4.00 मी. से 4.49 मी. = B1
4.00 मी. से 4.49 मी. = B2	3.50 मी. से 3.99 मी. = B2
3.50 मी. से 3.99 मी. = C1	3.00 मी. से 3.49 मी. = C1
3.00 मी. से 3.49 मी. = C2	2.50 मी. से 2.99 मी. = C2
2.50 मी. से 2.99 मी. = D1	2.00 मी. से 2.49 मी. = D1
2.00 मी. से 2.49 मी. = D2	1.50 मी. से 1.99 मी. = D2
2.00 मी. से नीचे = E	1.49 मी. और नीचे = E

ट्रिपल जम्प

(केवल लड़कों के लिए)

आगे की दौड़

उछलना

उछाल, स्टेप तथा कूदने का प्रदर्शन

नीचे उतरना

श्रेणीकरण की योजना

12 मी. से ऊपर = A1

11.50 मी. से 11.99 मी. = A2

11.00 मी. से 11.49 मी. = B1

10.50 मी. से 10.99 मी. = B2

10.00 मी. से 10.49 मी. = C1

9.50 मी. से 9.99 मी. = C2

9.00 मी. से 9.49 मी. = D1

8.50 मी. से 8.99 मी. = D2

8.49 मी. से ऊपर = E

ऊँची कूद

आगे को दौड़ना

उछालना

उड़ना अवस्था (टांग फैलाकर)

नीचे उतरना

श्रेणीकरण की योजना

लड़के	लड़कियाँ
1.79 मी. और ऊपर = A1	1.50 मी. और ऊपर = A1
1.60 मी. से 1.69 मी. = A2	1.45 मी. से 1.49 मी. = A2
1.50 मी. से 1.59 मी. = B1	1.40 मी. से 1.44 मी. = B1
1.40 मी. से 1.49 मी. = B2	1.30 मी. से 1.39 मी. = B2
1.30 मी. से 1.39 मी. = C1	1.20 मी. से 1.29 मी. = C1
1.20 मी. से 1.29 मी. = C2	1.10 मी. से 1.19 मी. = C2
1.10 मी. से 1.19 मी. = D1	1.10 मी. से 1.09 मी. = D1
1.10 मी. से 1.09 मी. = D2	0.90 मी. से 0.99 मी. = D2
0.99 मी. से नीचे = E	0.89 मी. और नीचे = E

गोला फेंक (शॉट-पुट)

स्थिति/मुद्रा

सरकना/फिसलना

छोड़ना

पलटना

श्रेणीकरण की योजना

लड़के	लड़कियाँ
10 मी. और ऊपर = A1	8.50 मी. और ऊपर = A1
9 मी. से 9.99 मी. = A2	7.50 मी. से 8.49 मी. = A2
8 मी. से 8.99 मी. = B1	6.50 मी. से 7.49 मी. = B1
7 मी. से 7.99 मी. = B2	5.50 मी. से 6.49 मी. = B2
6 मी. से 6.99 मी. = C1	4.50 मी. से 5.49 मी. = C1
5 मी. से 5.99 मी. = C2	3.50 मी. से 4.49 मी. = C2

4 मी. से 4.99 मी. = D1	3.00 मी. से 3.39 मी. = D1
3 मी. से 3.99 मी. = D2	2.50 मी. से 2.99 मी. = D2
2 मी. और नीचे = E	2.49 मी. और नीचे = E

चक्का फेंक (डिसकस थ्रो)

स्थिति/मुद्रा

आरम्भिक झूलना

एक तथा डेढ़ घुमाव के साथ ेंकना

पलटना

श्रेणीकरण की योजना

लड़के	लड़कियाँ
25 मी. से ऊपर = A1	20 मी. और ऊपर = A1
22 मी. से 24.99 मी. = A2	17 मी. से 19.99 मी. = A2
19 मी. से 21.99 मी. = B1	14 मी. से 16.99 मी. = B1
16 मी. से 18.99 मी. = B2	11 मी. से 13.99 मी. = B2
13 मी. से 15.99 मी. = C1	8 मी. से 10.99 मी. = C1
10 मी. से 12.99 मी. = C2	5 मी. से 7.99 मी. = C2
7 मी. से 9.99 मी. = D1	4 मी. से 4.99 मी. = D1
4 मी. से 6.99 मी. = D2	3 मी. से 3.99 मी. = D2
3.99 मी. और नीचे = E	2.99 मी. और नीचे = E

भाला फेंक

पकड़

भाला ले जाना

आरम्भ से पांच कदम लयबद्धता से आगे बढ़ना

छोड़ना

पलटना

श्रेणीकरण की योजना

लड़के	लड़कियाँ
35 मी. से ऊपर = A1	22 मी. और ऊपर = A1
32 मी. से 34.99 मी. = A2	19 मी. से 21.99 मी. = A2

29 मी. से 31.99 मी. = B1	16 मी. से 18.99 मी. = B1
26 मी. से 28.99 मी. = B2	13 मी. से 15.99 मी. = B2
23 मी. से 25.99 मी. = C1	11 मी. से 12.99 मी. = C1
20 मी. से 22.99 मी. = C2	9 मी. से 10.99 मी. = C2
17 मी. से 19.99 मी. = D1	7 मी. से 8.99 मी. = D1
14 मी. से 16.99 मी. = D2	5 मी. से 6.99 मी. = D2
13.99 मी. और नीचे = E	4.99 मी. और नीचे = E

7. बैडमिन्टन

कौशल

1. स्ट्रोक्स

   (क) फोरहैण्ड और बैकहैण्ड ओवर हैंड स्ट्रोक्स

   (i) लॉब

   (ii) टॉस

   (iii) क्लियर (आक्रामक व रक्षात्मक)

   (iv) ड्राप

   (v) स्मैश

2. फोरहैण्ड तथा बैकहैण्ड साइड आर्म स्ट्रोक्स

   (क) ड्राइव

3. फोरहैण्ड व बैकहैण्ड अन्डर आर्म स्ट्रोक्स

   (क) नेट स्ट्रोक्स

4. फोरहैण्ड व बैकहैण्ड क्रॉस कोर्ट स्ट्रोक्स

5. दांव पेंच और युक्तियां

   (क) खेल का तन्त्र

   (i) एकल खेल

   (ii) खेल का युगल प्रतिरूप

   सामने और पीछे

   साईड बाई साईड

   रोटेशन

   (iii) मिश्रित युगल गेम

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक विद्यार्थी के वस्तुनिष्ठ परीक्षण 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानतः तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा दिए जाएँगे।

I. बेडमिन्टन के विभिन्न कौशलों को श्रेणीबद्ध करने हेतु एक नौ बिन्दुीय मापदण्ड उपयोग करना चाहिए।

विभिन्न प्रकार की सर्विस, स्ट्रोक्स की क्षमता तथा विभिन्न प्रकार की सर्विस और स्ट्रोक्स को प्राप्त करने की क्षमता के आधार पर श्रेणीकरण किया जाना चाहिए तथा इसकी योजना शिक्षक को स्वयं तैयार करनी चाहिए।

नोट सर्विस परीक्षण हेतेतु क्षेत्रों को कोर्ट पर चिन्हित करना चाहिए।

II. विभिन्न कौशलों में परीक्षण के अतिरिक्त, विद्यार्थियों को खेल परिस्थिति के लिए अलग से श्रेणीबद्ध किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों का श्रेणीकरण करते समय निम्न बिन्दुओं का ध्यान रखना चाहिए।

1. रक्षा
2. आक्रमण
3. फुटवर्क
4. मुद्रा
5. पूर्वानुमान

9. बॉस्केटबाल

1. बाल सम्भालना अंगुलियों द्वारा पकड़ने की स्थिति, शरीर, मुद्रा, बॉल के साथ खिलाड़ी के खड़े होने की स्थिति
2. बाल पकड़ना (रिसिविंग) प्राप्त करने के कौशल
3. पासिंग कौशल (जोड़ों में ड्रिल्स/व्यायाम)
   (क) दो हाथ से चेस्टपास
   (ख) दो हाथ से बाउंस पास
   (ग) दो हाथ से अन्डरहैण्ड पास (दाईं/बाईं तरु)
   (घ) दो हाथ से ओवर हेड पास
4. ड्रिबलिंग गति के साथ ऊंची ड्रिब्लिंग, वैकल्पिक हाथों का प्रयोग, नीची ड्रिब्ल
5. शूटिंग
   (क) दो हाथ से सैट शॉट
   (ख) दो हाथ से फी थ्रो
   (ग) दाएँ हाथ का प्रयोग करते हुए ले-अप शॉट (कंधे से ऊपर)
6. फुटवर्क खिलाड़ी के खड़े होने की स्थिति, पैरों की स्थिति, हाथों की स्थिति, प्रारंभिक शफलिंग व फिसलने की क्रिया (ड्रिल्स)

7. केन्द्र रुका हुआ केन्द्र

8. वैयक्तिक रक्षा खिलाड़ी के खड़े होने की स्थिति, हाथों की स्थिति, पैरों की स्थिति, रक्षक की बॉस्केट व प्रतिद्वन्द्वी के मध्य स्थिति।

9. टीम रक्षा व्यक्ति से व्यक्ति रक्षा

10. टीम दोष ग़स्ट ब्रेक दोष

11. मुख्य खेल/रिले

(क) कैप्टन बॉल

(ख) पिन बॉस्केट बॉल

(ग) 5 पास (फ्रन्ट कोर्ट)

(घ) ड्रिब्लिंग रिले

(ड) ड्रिब्लिंग और पासिंग रिले

(च) ले अप शूटिंग रिले

12. पढ़ाये गए रक्षात्मक व आक्रामक शैलियों का प्रयोग करते हुए पूरा कोर्ट व आधा कोर्ट की गेम परिस्थिति।

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक विद्यार्थी के वस्तुनिष्ठ परीक्षण व 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानत: तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा दिए जाएँगे।

वस्तुनिष्ठ निर्धारण

सैट शूटिंग	**(10 अवसर)**
1. रिंग से 20 दूर (दो प्रयासों में से सर्वोत्तम)	एक अंक प्रत्येक सफल अवसर के लिए। नोट जो विद्यार्थी सभी अवसर मिस करेगा उसे एक अंक मिलेगा।
2. केन्द्र बिन्दु शॉट (रुके हुए)	एक अंक प्रत्येक सफल अवसर पर। नोट जो विद्यार्थी बॉस्केट में एक भी बॉल नहीं डाल पाएगा उसे एक अंक मिलेगा।

थ्रो लाईन से (प्रत्येक साइड से 3) और

एक फ्री थ्रो लाइन से (दो प्रयासों में सर्वोत्तम)

3. बॉस्केट के दोनों तरफ से सतत् ले-अप शूटिंग (लैफ्ट, सेन्टर, राइट) पिछली सेन्टर लाइन से आरम्भिक बिन्दु से ड्रिब्ल करते हुए समापन करना। (टाइमिंग/शूटिंग महत्वपूर्ण हैं)

लड़के	दिये जाने वाले अंक
22 सैकन्डस और नीचे	10
22.1 से 22.5 सैकन्डस	9
22.6 से 23.0 सैकन्डस	8
23.1 से 23.5 सैंकड	7
23.6 से 24.0 सैकन्डस	6
24.1 से 24.5 सैकन्डस	5
24.1 से 25.0 सैकन्डस	4
24.6. से 25.5 सैकन्डस	3
25.6 से 26.0 सैकन्डस	2
26.1 से 26.5 सैकन्डस	1
लड़कियाँ	
24.0. सैकन्डस और नीचे	10
24.1. से 24.5 सैकन्डस	9
24.6. से 25.0 सैकन्डस	8
25.1. से 25.5 सैकन्डस	7
25.6. से 26.0 सैकन्डस	6
26.1. से 26.5 सैकन्डस	5
26.6. से 27.0 सैकन्डस	4
27.1. से 27.5 सैकन्डस	3
27.6. से 28.0 सैकन्डस	2
28.1. से 28.5 सैकन्डस	1

नोट एक तरफ से बॉस्केट में जब तक बॉल न डाली जाए, विद्यार्थी को दूसरी तरफ शूटिंग के लिए नहीं जाना चाहिए।

4. गिव एण्ड गो ले-अप (सेन्टर से) दस अवसर (प्रत्येक सफल प्रयास पर एक अंक)

(दो प्रयासों में से सर्वोत्तम)

नोट एक विद्यार्थी जो एक भी अंक प्राप्त नहीं करता उसे एक अंक मिलता है।

5. जिग-जैग ड्रिब्लस

(तल की चौड़ाई)

दिए जाने वाले अंक

लड़के		लड़कियाँ	
10.5 सैकन्डस और नीचे	10	11.0 सैकन्डस और नीचे	10
10.6 सैकन्डस से 10.5 सैकन्डस	9	11.1 सैकन्डस से 11.5 सैकन्डस	9
11.1 सैकन्डस से 11.5 सैकन्डस	8	11.6 सैकन्डस से 12.0 सैकन्डस	9
11.6 सैकन्डस से 12.0 सैकन्डस	7	12.1 सैकन्डस से 12.5 सैकन्डस	9
12.1 सैकन्डस से 12.5 सैकन्डस	6	12.6 सैकन्डस से 13.0 सैकन्डस	9
12.6 सैकन्डस से 13.0 सैकन्डस	5	13.1 सैकन्डस से 13.5 सैकन्डस	9
13.1 सैकन्डस से 13.5 सैकन्डस	4	13.6 सैकन्डस से 14.0 सैकन्डस	9
13.6 सैकन्डस से 14.0 सैकन्डस	3	14.1 सैकन्डस से 14.5 सैकन्डस	9
14.1 सैकन्डस से 14.5 सैकन्डस	2	14.6 सैकन्डस से 15.0 सैकन्डस	9
14.6 सैकन्डस से 15.0 सैकन्डस	1	15.1 सैकन्डस से 15.5 सैकन्डस	9

नोट 1. एक साइड लाईर्न में 1.50 मीटर दूरी पर 5 इण्डियन क्लब व्यवस्थित किए जाते हैं (प्रत्येक क्लब के मध्य)। खिलाड़ी एक साइड लाईन से जिग-जैग ड्रिब्लिंग करते हुए आरम्भ करता है और दूसरी साइड लाइन को जिग-जैग ड्रिब्लिंग करते हुए पार करता है तथा आरम्भिक बिन्दु पर समापन करता है। दूसरे हाथ का ड्रिब्लिंग के लिए उपयोग किया जा सकता है

2. पहला व अंतिम इंडियन क्लब संबंधित दो साईड-लाइन से चार मीटर दूर होता है।

5. फुटबाल

(केवल लड़कों के लिए)

कौशल

1. किकिंग

(क) किकिंग आधारभूत

(i) इनस्टेप किक

(ii) पैर के अन्दर की तरफ किक

(iii) पैर के बाहर की तरफ किक

(ख) किसी एक पाँव से लॉफ्टेड किक

(ग) इन स्विंग व आउट-स्विंग का अभ्यास

(घ) कार्नर किक का अभ्यास-लॉबिंग-क्लिप शॉटस, और पेनल्टी किक नए संशोधनों पर विशेष ध्यान देते हुए

2. पासिंग और इन्टर-पासिंग

(क) दो खिलाड़ियों के मध्य इंटरपासिंग

(ख) तीन खिलाड़ियों में इंटरपासिंग

(ग) तीन व्यक्ति बनावट (वीव)

(घ) विभिन्न क्षेत्रों में चार खिलाड़ियों में इंटरपासिंग

(ङ) संबंधित अभ्यास

3. सम्भालना/रोकना

(क) रोकना व जल्दबाजी में टैकलिंग

(ख) फिसलते हुए रोकना

(ग) संबंधित अभ्यास

4. हैडिंग

(क) हैडिंग से संबंधित अभ्यास

(ख) लीड अप ड्रिल्स

5. गेंद लुढ़काते हुए ले जाना

क्रियात्मक प्रशिक्षण से मेल खाती ड्रिबलिंग का अभ्यास

6. गोल-कीपिंग

(क) आधारभूत स्थिति से बॉल प्राप्त करना, चैलेन्जड पोजीशन, फ्री बॉल और चैलेन्जड परिस्थिति का पूर्वानुमान तथा प्रगामी/आगामी

(ख) ऊपर हवा में आई बाल की पंचिग और फिसटिंग

(ग) पेनल्टी किक से रक्षा एवं बचाव

7. मुख्य व अन्य खेल

(क) हैडिंग बालीबॉल

(ख) टू बॉल सॉकर

(ग) फाइव ए साइड फुटबाल

8. खेल परिस्थिति व मुद्रात्मक खेल के लिए अभ्यास

9. दांव, पेंच, कोचंग व खेल

खेल की युक्तियों के बारे में सामान्य कार्यक्रम

(क) मुद्रात्मक खेल व खेल के प्रारंभिक दांवपेंच

(ख) कंडीशनड खेल व समूह अभ्यास

(ग) आरम्भ व पुना:रम्भ

(घ) रक्षा एवं आक्रमण के तत्व

(ङ) टू बैक सिस्टम व थ्री बैक सिस्टम

(च) क्षेत्रीय रक्षा और मैन टू मैन रक्षा के सिद्धान्त

(छ) डब्लयू. एवं एम आक्रमण का विनिर्माण

(ज) फ्री किक, पेनल्टी किक और कार्नर किक से रक्षा और आक्रमण

(झ) प्रतिकूल दशाओं में रक्षा और आक्रमण के दांवपेंच

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक विद्यार्थी के वस्तुनिष्ठ परीक्षण व 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानत: तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा दिए जाएंगे।

2. रुकी हुई बॉल किक करना (लॉटेड किक) दायां व बायां पैर (सर्वोत्तम पैर)

45 मी. से ऊपर = A1

40 मी. से 44 मी. = A2

35 मी. से 44 मी. = B1

30 मी. से 34 मी. = B2

25 मी. से 29 मी. = C1

20 मी. से 24 मी. = C2

15 मी. से 19 मी. = D1

10 मी. से 14 मी. = D2

और 10 मी. से नीचे = E

3. ड्राप-शॉट (हॉफ वाली)

60 मी. से ऊपर = A1

50 मी. से 59 मी. = A2

40 मी. से 49 मी. = B1

30 मी. से 39 मी. = B2

20 मी. से 29 मी. = C1

15 मी. से 19 मी. = C2

10 मी. से 14 मी. = D1

4 मी. से 9 मी. = D2

और 4 मी. से नीचे = E

4. **टैपिगं 20 फीट की ऊंचाई से गिरती बॉल को ट्रैप करना (9 अवसर प्रत्येक सफल प्रयास पर एक अंक।)**

5. **दूरी के लिए हैडिंग**

21 मी. = A1

18 मी. = A2

15 मी. = B1

12 मी. = B2

9 मी. = C1

6 मी. = C2

3 मी. = D1

1 मी. = D2

1 मी. के नीचे = E

.6. **बॉल लुढ़काते हुए दौड़ना (ड्रिबलिंग) बॉल नियंत्रित करना, और सैन्टर सर्किल से शूटिंग व पेनेल्टी क्षेत्र से शूटिंग, गति एवं शुद्धता तथा गोल पोस्ट पर सटीक शॉट के माध्य व मानकों के आधार पर नियम बनाए जा सकते हैं।**

उच्च श्रेणी की कौशल पूर्ण ड्रिबल = A1

शुद्ध और तेज शॉट = A2

तेज व सटीक शॉट = B1

पर्याप्त रूप से तेज व सटीक शॉट = B2

धीमी परन्तु सटीक शॉट = C1

अति धीमी परन्तु सटीक शॉट = C2

धीमी पर लगभग मिस शॉट = D1

धीमी पर अनियन्त्रित शॉट = D2

लक्ष्य रहित शॉट = E

भाग-ग

समूह खेल

प्रत्येक वर्ग में निम्न में से कोई दो। प्रत्येक वर्ष विभिन्न खेल/क्रीड़ा लिए जाएँ।

कौशल

I. सीधे प्रहार (हिट) को रोकना

(क) उल्टा प्रहार और रोकना

(ख) गलत पैर पर प्रहार

II. सीधे धकेलना (पुश) और रोकना

(क) उल्टे धकेलना और रोकना

(ख) गलत पैर पर धकेलना

III. निकालना (स्कूप)

(क) धकेलकर निकालना

(ख) उठाना या ले जाना

IV. फ्लिक

(क) सीधा फ्लिक

(ख) उल्टा फ्लिक

V. लुढ़कते हुए गेंद आगे ले जाना

VI. पासिंग

(क) आगे पास

(ख) वापिस पास

(ग) मोड़कर पास

(घ) स्थान बदलना

VII. पैतरेबाजी

(क) विरोधी के बाएं ओर से पैतरेंबाजी

(ख) विरोधी के दाएं ओर से पैंतरेबाजी

(ग) डबल पैंतरेबाजी

VIII. विभिन्न तकनीक

(क) पेनल्टी कार्नर

(ख) कार्नर

(ग) पेनल्टी स्ट्रोक

(घ) पुश इन

(ड) गोलकीपिंग

IX. सम्भालना (Tackling)

(अ) झपटना

(ब) दांव-पेंच

X. आक्रमण में खेल-मुद्रा

XI रक्षा में खेल-मुद्रा

XII आक्रमण व रक्षा में सामान्य दांवपेंच व युक्तियाँ

XIII. नेतृत्व खेल, व्यायाम, आधारभूत कौशलों के सुधार के लिए छोटे-मोटे खेल और रिले।

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक वस्तुनिष्ठ परीक्षण के समय विद्यार्थी के निष्पादन के आधार पर दिए जाएंगे और 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के आधार पर अधिमानतः तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा दिए जाएंगे।

1. लुढ़काना और पैंतरेबाजी (Dodging)

एक रेखा पर 5 ध्वज एक दूसरे से 5 फुट की दूरी पर लगा दिए जाएंगे। खिलाड़ियों को ध्वजों के बीच में लाइन के निकट तक जिग-जेग गेंद लुढ़कानी व पैतरेंबाजी करनी होगी तथा उन्हें वापिस आना होगा। दो अवसर दिए जाएंगे।

2. धकेलना

लड़कों के लिए 30 यार्ड व लड़कियों के लिए 20 यार्ड की दूरी से गेंद को धकेलना (Pushing) होगा। नो 9 प्रयास। एक सफल प्रयास पर एक अंक।

3. दूरी के लिए प्रहार (Hitting)

गोल रेखा से गोल तक (दो परीक्षणों में अच्छं वाला)

लड़के	लड़कियाँ
80 मी. से ऊपर = A1	50 मी. से ऊपर = A1
70 मी. से 79 मी. = A2	45 मी. से 49 मी. = A2
60 मी. से 69 मी. = B1	40 मी. से 44 मी. = B1
50 मी. से 59 मी. = B2	35 मी. से 39 मी. = B2
40 मी. से 49 मी. = C1	30 मी. से 34 मी. = C1
30 मी. से 39 मी. = C2	25 मी. से 29 मी. = C2
20 मी. से 29 मी. = D1	20 मी. से 24 मी. = D1
10 मी. से 19 मी. = D2	10 मी. से 19 मी. = D2
10 मी. और नीचे = E	10 मी. और नीचे = E

4. **सम्भलने/रोकने (Tackling) का परीक्षण**

प्रदर्शन के आधार पर अंक दिए जाएंगे।

2. टेबल टेनिस

1. **सर्विस**

(क) चॉपड (Chopped) सर्विस

(ख) साईड स्पिन सर्विस

2. **प्रहार (Stroke)**

(क) रक्षात्मक प्रहार

(i) ब्लाक वापसी

(ii) लूप वापसी

(iii) टॉप स्पिन प्रहारों को काटना (बैकहैण्ड व फोर हैण्ड)

(iv) सीधी वापसी

(ख) आक्रमण प्रहार

(i) गेंद रोकना

(ii) लप टॉप स्पिन बॉल

(iii) साईड स्पिन गेंद

(iv) सीधा प्रहार (फोरहैण्ड व बैकहैण्ड)

(v) चॉप आक्रमण (फोरहैण्ड व बैकहैण्ड)

3. **प्राप्त करना (Receiving)**

(क) साइड स्पिन सर्विस प्राप्त करना

(i) फोरहैण्ड साईड स्पिन सर्विस

(ii) कंधे के स्तर तक फोरहैण्ड साईड स्पिन सर्विस

(iii) बैकहैण्ड साईड पुल सर्विस

(ख) विभिन्न प्रकार के प्रहारों (Strokes) को प्राप्त करना

(i) जितने भी अब तक पढ़ाए गए सभी आक्रामक प्रहारों से

(ii) जितने भी अब तक पढ़ाए गए सभी रक्षात्मक प्रहारों से

4. **दांव पेंच**

(क) मध्य-दूरी (आल-राउंडर) दांव-पेंच

(ख) परिवर्तित दांव-पेंच

(ग) पूर्वानुमान

(घ) खेल मुद्रा

(ड) फुटवर्क (पैरों की लयबद्धता)

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक वस्तुनिष्ठ परीक्षण के समय विद्यार्थी के प्रदर्शन के आधार पर व 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानत: तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा दिए जाएँगे।

टेबलटेनिस की विभिन्न तकनीकों को श्रेणीबद्ध करने हेतु एक नौ-बिन्दु मापक्रम को प्रयोग किया जाना चाहिए। वस्तुनिष्ठ अंकों हेतु एक से अधिक व्यक्तियों को विद्यार्थी को कोटिबद्ध/श्रेणीबद्ध करना चाहिए :

विभिन्न प्रकार की सर्विस प्रहार तथा विभिन्न सर्विसों तथा प्रहारों को प्राप्त करने की क्षमता को निम्न प्रकार से श्रेणीबद्ध किया जाता है

A1 = 9 अंक

A2 = 8 अंक

B1 = 7 अंक

B2 = 6 अंक

C1 = 5 अंक

C2 = 4 अंक

D1 = 3 अंक

D2 = 2 अंक

E = 1 अंक और नीचे।

2. विभिन्न तकनीकों में विद्यार्थी का परीक्षण करने के अतिरिक्त, उसे खेल परिस्थिति अनुसार अलग से श्रेणीबद्ध किया जाना चाहिए। श्रेणीकरण एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा किया जाना चाहिए। श्रेणीकरण करते समय निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिए।

(क) रक्षा

(ख) आक्रमण

(ग) फुटवर्क

(घ) मुद्रा

(ड) पूर्वानुमान

खो-खो

1. पीछा करने के कौशल-

फंसाना, झपटना, रुके हुए झपटना, दौड़ते हुए झपटना, किसी एक हाथ से पैर को छूना, क्रॉस रेखा के पोस्ट के साथ-साथ घसीटना।

2. दौड़ने के कौशल

शिकंजे से बचाव, दूर रहना, शिकंजा, पीछा करने वाले को लालच देकर थकाना।

3. दौड़ने की विधियाँ

रिंग खेल, फ्रंट रिंग, बैक रिंग, प्राथमिक व बाद की मुद्रा, विभिन्न कौशलों का बदल-बदल कर उपयोग करना।

4. तैयारी के लिए खेल

(i) आत्या-पात्या

(ii) थ्री डीप

(iii) संजीवनी (जीवनदान या विषअमश्त)

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक वस्तुनिष्ठ परीक्षण के समय विद्यार्थी के प्रदर्शन के आधार पर 50% अंक वस्तुनिष्ठ, खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानत: तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा दिए जाएंगे।

1. शारीरिक क्षमता परीक्षण और तेजी से दौड़ना	9 अंक
2. पीछा करने के कौशल का परीक्षण	9 अंक
3. दौड़ने के कौशल का परीक्षण	9 अंक
4. दौड़ने की विधियों का परीक्षण	9 अंक
5. सामान्य खेल क्षमताएँ और संयोजन	9 अंक

नोट 1. ऊपर दी गई मदसख्ंया 2, 3 व 4 की दशा में विद्यार्थी को किन्हीं दो कौशल का प्रदर्शन करने को कहा जा सकता है और उनकी शुद्धता व प्रभावशीलता के आधार पर अंक दिए जाएंगे।

2. विद्यार्थी को वास्तविक खेल की परिस्थिति में अपने कोशल प्रदर्शन के आधार पर श्रेणीबद्ध किया जाएगा।

तैराकी और गोताखोरी

कौशल

1. बैक स्ट्रोक

(क) बॉल या साथी की सहायता से रूकी हुई टांग की क्रिया

(ख) हाथों को जांघों के पास रखते हुए या खींचते हुए हिलाने के साथ टांग क्रिया।

(ग) साथी या सीढ़ी की सहायता से बाजू की क्रिया, बाजुओ को बारी-बारी से संचालन।

(घ) टांग व बाजू क्रिया का संयोजन। चूँकि जलस्तर से मुंह ऊपर रहता है, इसलिए साँस लेने में कोई कठिनाई नहीं होती।

(ड) एक बार क्रियाएं समन्वित हो जाती है तब गति सुधार के लिए प्रयास करना चाहिए।

2. बटरफ्लाई स्ट्रोक

(क) कम गहरे पानी पर खड़ी मुद्रा में बाजू क्रिया

(ख) समतल मुद्रा में हिलने पर बाजू क्रिया।

(ग) दीवार की सहायता/सहारे से खड़े हुए व समतल स्थिति में आरंभिक कूल्हों का संचालन। कूल्हों को बारी-बारी ऊपर और नीचे किया जाए।

(घ) साइड पर अथवा सामने बाजू के साथ डॉलफिन किक।

(ड) शरीर के साथ साइड पर डॉलफिन किक

(च) बाजू, टांग संचालन और सांस को समन्वित करने के लिए धीमे प्रयास के साथ फुल स्ट्रोक।

3. वेयक्तिक मेडली और फी स्टाइल रिले

4. स्टार्ट्स (आरम्भ) और टर्न (मुड़ना)

स्टांस

(i) पकड़ना

(ii) परम्परागत (चक्रीय बाजू झूलाना) (Circular Arm Swing)

(iii) बन्च स्टार्ट

(iv) ट्रैक स्टार्ट

मुड़ना

(i) चक्रीय मोड़

(ii) थ्रो टर्न

(iii) फ्लिप टर्न

5. गोता खोरी (डाइव)

(क) बैक डाइव

(ख) इनवर्ड डाइव

श्रेणीकरण की योजना

50% वस्तुनिष्ठ परीक्षण के समय विद्यार्थी के प्रदर्शन के आधार व 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानत: तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा दिए जाएँगे।

कूट/कोड	बेस्ट स्ट्रोक	फ्री स्टाइल	बैक स्ट्रोक	बटरफ्लाई स्ट्रोक
A1	0 मि. 40 सैकन्ड	0 मि. 30 सैकन्ड	0 मि. 35 सैकन्ड	0 मि. 50 सैकन्ड
A2	0 मि. 50 सैकन्ड	0 मि. 40 सैकन्ड	0 मि. 45 सैकन्ड	1 मि. 00 सैकन्ड
B1	1 मि. 00 सैकन्ड	0 मि. 50 सैकन्ड	0 मि. 55 सैकन्ड	1 मि. 10 सैकन्ड
B2	1 मि. 10 सैकन्ड	1 मि. 00 सैकन्ड	1 मि. 05 सैकन्ड	1 मि. 20 सैकन्ड
C1	1 मि. 20 सैकन्ड	1 मि. 10 सैकन्ड	1 मि. 15 सैकन्ड	1 मि. 30 सैकन्ड
C2	1 मि. 30 सैकन्ड	1 मि. 20 सैकन्ड	1 मि. 25 सैकन्ड	1 मि. 40 सैकन्ड
D1	1 मि. 40 सैकन्ड	1 मि. 30 सैकन्ड	1 मि. 35 सैकन्ड	1 मि. 50 सैकन्ड
D2	1 मि. 50 सैकन्ड	1 मि. 40 सैकन्ड	1 मि. 45 सैकन्ड	2 मि. 00 सैकन्ड
E	2 मि. 00 सैकन्ड	1 मि. 45 सैकन्ड	1 मि. 55 सैकन्ड	2 मि. 10 सैकन्ड

टेनिस

1. सर्विस के तरीके

1. चॉप और स्लाईस सर्विस (साईड स्पिन)
2. टॉप स्पिन सर्विस

2. स्ट्रोक्स में बदलाव

(i) क्रॉसकोर्ट ड्राइब्स फोरहैण्ड और बैक हैण्ड

(ii) डाउन द लाईन फोरहेण्ड और बैक हैण्ड

(iii) मध्य कोर्ट से फोरहैण्ड/बैकहैण्ड फुल वॉली

(iv) फोरहैण्ड/बैकहैण्ड हॉफ-वॉली

(v) ड्रॉप शॉटस, ड्रॉप वाली

(vi) लॉब स्ट्रोक्स

(vii) रनिंग एप्रोच शाूटस

3. तकनीकों के अतिरिक्त विद्यार्थी को खेल परिस्थितियों में अलग से श्रेणीबद्ध किया जाना चाहिए। ग्रेडिंग एक से अधिक व्यक्ति द्वारा दी जानी चाहिए। खेल परिस्थिति में विद्यार्थी को श्रेणीबद्ध करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए :

(i) रक्षा

(ii) आक्रमण

(iii) आधारभूत नियमों में पारंगता

(iv) फुटवर्क

(v) टीम वर्क

(vi) पूर्वानुमान

(vii) मुद्रा

(viii) दांव-पेंच व युक्तियाँ

क्रिकेट

कौशल

1. **बल्लेबाजी**

   फारवर्ड डिफेन्स, बैकवर्ड डिफेन्स, फारवर्ड स्ट्रोक, बैकवर्ड स्ट्रोक, कवर ड्राइव पुल, कट, हुक, ग्लान्स, हवा में उड़ती बाल को ड्राइव करने हेतु कदमों का उपयोग।

2. **गेंदबाजी**

   आउट-स्विंग, इन-स्विंग, ऑफ ब्रेक, लेग ब्रेक और गुगली

3. **क्षेत्ररक्षण**

   गेंद पकड़ना (कोचिंग) ऊंचा व स्लिप कैच, विभिन्न कोणों से गेंद को स्टम्प पर फेंकना।

4. **विकेट-कीपिंग**

5. **अन्य मुख्य क्रीड़ाएँ**

   (अ) बकेट क्रिकेट

   (ब) सॉफ्ट बॉल गेम

   (स) क्षेत्ररक्षण अभ्यास के लिए टारगेट हिटिंग

6. **दांवपेंच**

   (अ) विभिन्न प्रकार की बल्लेबाजी और गेंदबाजी के अनुसार क्षेत्ररक्षण जताना

   (ब) कप्तानी कप्तान के कर्तव्य, विभिन्न परिस्थितियों में जिम्मेदारियाँ

   (स) विकेट-कीपिंग

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक वस्तुनिष्ठ परीक्षण के समय विद्यार्थी के प्रदर्शन के आधार पर व 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानतः तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा दिए जाएँगे।

बल्लेबाजी

खिलाड़ी की बल्लेबाजी की क्षमता का परीक्षण नेट पर बॉल की वरीयता के अनुसार किया जाएगा तथा किस प्रकार से गेंद खेला गया है, उसी आधार पर निर्णय व श्रेणीबद्ध किया जाएगा। गेंदबाजी विभिन्न प्रकार के गेंदबाजी द्वारा कराई जाएगी। (तेज स्पिन, फिरकी) आदि खिलाड़ियों को 9 अंकों में से श्रेणीबद्ध किया जाएगा।

गेंदबाजी

गेंदबाजी का सामान्य रन अप से अपनी शैली का उपयोग करते हुए गेंद करने को कहा जाना चाहिए। मध्यम तेज गेंदबाजकी स्थिति में पॉपिंग क्रीज से 8 फीट की दूरी पर तथा धीमी गति के गेंदबाज की स्थिति में 4 फीट की दूरी पर विभिन्न चिन्ह लगाने चाहिए। प्रत्येक खिलाड़ी को 9 अवसर दिए जाने चाहिए।

(क) शैली, दिशा, लम्बाई और परिशुद्धता से परिपूर्ण A1 = 9 अंक

(ख) उचित शैली से स्टाम्प पर गेंदबाजी करना = A2 = 8 अंक

(ग) विकेट के दोनों तरफ एक फुट की दूरी तक सटीक गेंदबाजी करना = B1 = 7 अंक

(घ) ऑफ साइड पर एक फुट की दूरी तक सटीक गेंदबाजी करना = B2 = 6 अंक

(ड) लेग साइड पर एक फुट की दूरी तक सटीक गेंदबाजी करना = C1 = 5 अंक

(च) ऑफ साइड पर दूर गेंदबाजी करना = C2 = 4 अंक

(छ) लेग साइड से दूर गेंदबाजी करना = D1 = 3 अंक

(ज) खराब प्रदर्शन = D2 = 2 अंक

(झ) गेंदबाजी करने में पूर्णतः असक्षम = E = 1 अंक

क्षेत्ररक्षण

खिलाड़ियों को विकेट से 30 से 40 यार्ड्स दूर तक खड़े रहने को कहा जाता है।

(क) प्रशिक्षक या खिलाड़ी तेजी से ऊपर की ओर ऊंची कैच उछालता है। प्रत्येक खिलाड़ी को नौ कैच उछाली जाती है। प्रत्येक सफल प्रयास पर एक अंक दिया जाता है।

(ख) प्रशिक्षक विभिन्न कोणों में खिलाड़ियों की तरफ गेंद हिट करता है। उन्हें गेंद को पकड़ने और विकेट पर फेंकने के लिए दौड़ना पड़ता है। प्रत्येक सफल चरण पर खिलाड़ी एक अंक प्राप्त करता है। 9 अवसर दिए जाते हैं।

वॉलीवॉल

कौशल

1. सर्व करना

(क) सर के ऊपर से सर्विस (टेनिस)

(ख) बाँह घुमाकर सर्विस

(ग) फ्लोटिंग सर्विस (ओवर हैड तथा साइड आर्म)

2. पास

(क) ओवर हैड पास बैक रोलिंग के साथ दो हाथ से पास

(ख) साईड रोलिंग के साथ दो हाथ से पास

(ग) जम्प व पास

(घ) अन्डर आर्म पास

(ड) फारवर्ड डाइव व पास

(च) साईड रोलिंग के साथ वन आर्म पास

3. **सेट-अप**

(क) शीघ्र स्मैश के लिए सेटिंग-अप

(ख) मूव व सेट-अप (पिछले क्षेत्र से)

(ग) विभिन्न बदलती चक्राकारीय स्थितियों में विभिन्न क्षेत्रों में सेटिंग-अप

4. **नेट रिकवरी**

(क) रोलिंग व बिना रोलिंग के दो हाथों से ओवरहेड पास

(ख) रोलिंग व बिना रोलिंग के एक हाथ से अन्डर आर्म पास

5. **आक्रमण**

(क) शरीर घुमाते स्मैश

(ख) कलाई के साथ स्मैश

(ग) राउंड आर्म स्मैश

(घ) शॉर्ट पास पर स्मैश (असैन्डिंग बॉल)

(ड) सामान्य आक्रमण संयोजन

6. **ब्लॉक**

(क) विभिन्न प्रकार के आक्रमणों के विरुद्ध डबल ब्लॉक

(ख) निर्दिष्ट क्षेत्रों में डबल ब्लॉक

(ग) शीघ्र आक्रमण के विरुद्ध डबल ब्लॉक

(घ) प्रहार/आक्रमण संयोजन के विरुद्ध डबल ब्लॉक

(ड) क्षेत्र-3 से हुए आक्रमण के विरुद्ध ट्रिपल ब्लॉक

7. **तैयारी के लिए**

(क) बॉउस वॉलीबॉल

(ख) शोवर बॉल

(ग) डबल (दो के विरुद्ध दो)

(घ) तीन के विरुद्ध तीन

8. **खेल के प्रतिरूप**

4-2 सिस्टम

5-1 सिस्टम

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक वस्तुनिष्ठ परीक्षण के समय विद्यार्थी के प्रदर्शन के आधार पर व 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानतः तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा जाएँगे।

सर्विस

9 प्रयास अनुमत। प्रत्येक सफल प्रयास के लिए एक अंक। सफल प्रयास से तात्पर्य बॉल नेट को पार करके प्रतिस्पर्धी के कोर्ट में चिह्नित रेखा के अन्दर गिरे।

अन्डर हैण्ड पास

नौ प्रयास अनुमत। प्रत्येक सफल प्रयास पर एक अंक दिया जाता है। अण्डरहैण्ड पास को कोर्ट की दूसरी तरफ से सर्विस द्वारा साईड आर्म सर्विस द्वारा या राउंड आर्म सर्विस द्वारा निष्पादित किया जाता है। नेट के ऊपरी बैन्ड से ऊँची उठी सही बॉल को प्राप्त करना सफल प्रयास माना जाएगा। नेट को पार करती बॉल पर फॉल्ट होगा और इसलिए कोई लाभ न दिया जाएगा। इसी प्रकार हाथ से फिसलकर कोर्ट के बाहर गई बॉल पर कोई श्रेणी नहीं दी जाएगी :

बूटिंग (ऊपर उठाना)

नौ प्रयास अनुमत। प्रत्येक सफल प्रयास के लिए एक अंक। विद्यार्थी क्षेत्र नं. 3 में खड़ा रहता है और उसे क्षेत्र नं. 4 में बूस्ट करने के लिए बॉल दी जाती है। बॉल नेट के ऊपरी बैन्ड से ज्यादा ऊंची उठनी चाहिए। निम्नलिखित परिस्थितियों में कोई अंक नहीं दिया जाएगा :

(क) बॉल विरोधी के कोर्ट में पार हो जाए।

(ख) बॉल अपने कोर्ट के बाहर गिरे।

(ग) बॉल पास हो परन्तु आक्रमण क्षेत्र से दूर।

(घ) मिस पास

(ड) डबल टच परीक्षण के समय अन्य त्रुटियाँ।

स्पाईकिंग

नौ प्रयास अनुमत। प्रत्येक सफल प्रयास के लिए एक अंक। स्मैश क्षेत्र नं. 2 से किया जाना चाहिए। बॉल को क्षेत्र संख्या-6 से भेजा जाता है जो कि कोर्ट का सैन्टर है और पास को क्षेत्र संख्या-3 से उठाया जाता है। (स्मैशर की तरफ मुंह)

ब्लॉकिंग

नौ प्रयास अनुमत। प्रत्येक सफल प्रयास के लिए एक अंक। ब्लॉक विकल्पतः क्षेत्र नं 2 और 4 से निष्पादित किया जाता

है। विरोधी के क्षेत्र संख्या 4 व 3 से अच्छा स्मैश किया जाता है और उम्मीदवार ब्लॉक को समायोजित करता है।

(क) ब्लॉक के पश्चात् बॉल सीधी विरोधी के कोर्ट में जाती है तो इसे सफल प्रयास माना जाएगा व पूरा क्रेडिट दिया जाएगा।

(ख) अपने कोर्ट में गिरने वाली बॉल को अच्छा प्रयास माना जाएगा तथा फुल क्रेडिट दिया जाना चाहिए।

जिमनास्टिक

1. तलीय व्यायाम

(अ) फारवर्ड रोल से हैण्ड स्टैण्ड

(क) बैकवर्ड रोल से हैण्ड स्टैण्ड

(ख) फारवर्ड रोल से हैड स्प्रिंग

(ग) हैन्ड स्प्रिंग से डाइव रोल

(घ) राउंड आर्फ से बैक रोल से हैण्ड स्टेण्ड

(ड) राउंड आर्फ फ्लिक-फ्लैक

(च) एक टांग से हैन्ड स्प्रिंग

(छ) एक टांग से हैड स्प्रिंग

(ज) फारवर्ड रोल हैण्ड टर्न

(झ) सीधा टांगों से हैण्ड स्टैण्ड व फारवर्ड रोल

2. वालटिंग बॉक्स

(क) स्फ्लिट वॉल्ट

(ख) थ्रू वॉल्ट

(ग) कार्ट व्हील के साथ हैण्ड स्टैण्ड

(घ) हैण्ड स्प्रिंग

3. समांतर (Parrelld) बार

(क) अप स्टार्ट

(ख) फ्रन्ट अपराइज

(ग) हैण्ड स्टैण्ड

(ड) 180 डिग्री टर्न के साथ हैण्ड स्टैण्ड

(च) हैण्ड स्टैण्ड से कंधे पर फ्रन्ट टर्न

(छ) बैकवर्ड रोल

(ज) हैण्ड स्टैण्ड से कार्ट व्हील (डिसमाउंट)

4. समतल बार

(क) ओवर ग्रिप के साथ आरम्भ

(ख) अन्डर ग्रिप के साथ आरम्भ

(ग) शॉर्ट सर्किल

(घ) व्हील फूड के साथ एक टांग द्वारा सर्किल

(ड) हील फुट

(च) फ्रन्ट जाइन्ट सर्किल

(छ) थ्रू वॉल्ट के साथ स्विंग (डिस्माउंट)

लड़कियों के लिए

1. तलीय व्यायाम (Floor Excrcises)

(क) फारवर्ड रोल से हैंड स्टैण्ड

(ख) बैकवर्ड रोल से हैंड स्टैण्ड

(ग) राउंड ऑफ

(घ) स्लो बैक हैण्ड स्प्रिंग

(ड) स्लो बैक हैण्ड स्प्रिंग

(च) स्फ्लिट सिटिंग

(छ) स्लो हैण्ड स्प्रिंग

(ज) हैण्ड स्प्रिंग

(झ) हैड स्प्रिंग

2. बॉलटिंग बॉक्स

(क) अस्ट्राइड वॉल्ट अथवा स्फ्लिट वॉल्ट

(ख) थ्रू वॉल्ट

(ग) हैण्ड स्प्रिंग

3. बीम

(क) संतुलन के साथ तेज कदम

(ख) कैंची कूद

(ग) फारवर्ड रोल

(घ) बैकवर्ड रोल

(ड) कार्ट व्हील

(च) ब्रिज

(छ) संतुलन

(ज) स्प्लिट लेग के साथ कूदना

श्रेणीकरण की योजना

50% अंक वस्तुनिष्ठ परीक्षण के समय विद्यार्थी के प्रदर्शन के आधार पर व 50% अंक वास्तविक खेल की श्रेणी के प्रदर्शन के आधार पर अधिमानत: तीन शारीरिक शिक्षा के पेशेवर अध्यापकों द्वारा जाएँगे।

शीर्ष ग्रेड प्रदर्शन	A1 = 9 अंक
श्रेष्ठ प्रदर्शन	A2 = 8 अंक
संतोषजनक प्रदर्शन, बैंटनी अथवा अनप्वांइटेड टोज को छोड़कर	B1 = 7 अंक
औसत प्रदर्शन, नीचे एवं बेंट तथा टो केन्द्रित	B2 = 6 अंक
कोई आकार नहीं किया, स्टंट करने का ज्ञान	C1 = 5 अंक
स्टंट का कम ज्ञान और एकदम खराब आकृति के साथ स्टंट करने की क्षमता	C2 = 4 अंक
खराब प्रदर्शन	D1 = 3 अंक
सबसे खराब प्रदर्शन	D2 = 2 अंक
स्टंट करने में असक्षम	E = 1 अंक

योग

नोट : केवल वही क्रियाएँ शामिल की गई हैं जो प्रदर्शन में प्रवीणता के उचित स्तर का निकास करेंगी। तथापि अत्यधिक जटिल और कठिन क्रियाएँ जो कि योग के एक सच्चे साधक के लिए आवश्यक हैं, उन्हें सम्मिलित नहीं किया गया।

आसन

1. ताड़ासन (Heaventy stretch pose)
2. वश्क्षासन (Tree Pose)
3. त्रिकोणासन (Triangle Strecth pose)
4. गोमुखासन (Cow face pose)
5. पद्मासन (Lotus Pose)
6. वज्रासन (Thunderboalt pose)

7. मत्स्यासन (Fish pose)

8. भुजंगासन (Cobra pose)

9. सलभासन (Ocust pose)

10. चक्रासन (Wheel pose)

11. पश्चिमोत्तरासन (Back stretch pose)

12. अर्द्ध-मत्स्येन्द्रासन (Half sprinel twist pose)

13. सर्वांगासन (Shoulder Stand pose)

14. हलासन (Plough pose)

15. श्वासन (Corpose pose)

प्राणायाम

1. शीतली प्राणायाम् (The cooling bread)

2. शीतकारी प्राणायाम् (The hissing breadth)

3. कपालभाती प्राणायाम् (The frontal brain bread)

4. उज्जयी प्राणायाम् (The psychie breadth)

श्रेणीकरण योजना

एक नौ बिन्दु मापदण्ड का प्रयोग करते हुए श्रेणीकरण किया जाएगा। एक विद्यार्थी को प्रदर्शन के लिए पाँच आसन और दो प्राणायाम् चुनने चाहिए। निम्नलिखित सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए श्रेणीकरण किया जाना चाहिए।

1. आरम्भ से अंतिम मुद्रा तक लयबद्ध गति

2. अंतिम मुद्रा में पूर्णता की स्थिति/दशा

3. खिंचाव या चिन्ता का प्रमाण (नकारात्मक पहलू)

4. अंतिम मुद्रा में कुछ देर बने रहना, संतुलन क्रियाओं में अधिक बने रहना।

29. फैशन अध्ययन (कोड सं. 053)

प्रस्तावना

फैशन अत्यंत गतिशील एवम् सर्वदा परिवर्तनशील है। यह हमारे जीवन में सबसे प्रभावशाली शक्तियों में एक है। यह हमारी जीवन शैली के हर पहलू को समय विशेष पर प्रभावित करता है। उदाहरणत: वस्त्र जो हम पहनते हैं, संगीत जो हम सुनते हैं, खाना जो हम खाते हैं, अवकाश के लिए जहाँ जाते हैं या गाड़ी जो हम चलाते हैं।

फैशन एक बहुत बड़ा व्यवसाय है और यह अनेक उद्योगों का मुख्य आधार है। उनको चलाने के साधन हैं जैसे परिधान, उपसाधान, वस्त्र उद्योग व मोटर-गाड़ियां इत्यादि। 'फैशन अधययन' के पाठ्यक्रम का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को फैशन के मूलभूत सिद्धांतों, रूपरेखा और फैशन अभिकल्पना से परिचित करवाना है। फैशन अभिकल्पना एक पूर्ण व्यवसाय है, जिसमें अभिकल्पना की पूरी प्रक्रिया जैसे तंतु से धाागा और उससे पूर्ण परिधान बनाना सम्मिलित है। यह पाठ्य-क्रम फैशन अभिकल्पना के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाएगा। इससे फैशन व्यवसाय के मुख्य बिंदुओं जैसे अभिकल्पना के मूल तत्व, फैशन का इतिहास, वस्त्र, शारीरिक संरचना, पैटर्न का विकास और परिधान निर्माण पर प्रकाश डाला जाएगा।

कक्षा-**XI** (सिद्धांत)

इकाई I : फैशन अध्ययन : परिचय	10 अंक	30 पीरियड

पाठ्यक्रम का उद्देश्य :

- उपयुक्त फैशन शब्दावली सीखना।
- फैशन व्यवसाय को समझना।
- फैशन व्यवसाय के विभिन्न उद्योगों और सेवाओं के बीच परस्पर सम्बन्धा और उनकी कार्यप्रणाली की जानकारी प्राप्त करना।
- फैशन शब्दावली के सूक्ष्म भेदों को सराहना और उन्हें पहचानना।

शैक्षणिक निष्कर्ष:

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थी इस योग्य हो जाएं कि-

- फैशन की दुनिया में उपयुक्त फैशन शब्दावली का प्रयोग करें।
- फैशन व्यवसाय के पारस्परिक संबंधा को समझ पाने में समर्थ हों।
- फैशन का संक्षिप्त विवरण प्राप्त कर सकें।

पाठ्यक्रम शिक्षण बिंदु

- **फैशन**-फैशन की परिभाषा उसके सभी पहलुओं सहित
- **बनावट**-बनावट की परिभाषा और फैशन से भेद
- **प्रवृत्ति**-शब्द की परिभाषा, प्रवृत्ति और फैशन का प्रारंभ।
- अभिकल्पना, कला, हस्तकला के बीच समानता और भेद को समझना।
- फैशन व्यावसायिकों जैसे अभिकल्पक, व्यापारी, स्टाईलिस्ट व समन्वयकारी की कार्य पद्धति को जानना।
- फैशन चक्र, फैशन में अन्तरराष्ट्रीय व्यापार।

- फैशन व्यवसाय के विभिन्न पहलू-अभिकल्पना, उत्पादन, फुटकर व्यापार, दृश्य लेख का विवरण।

शैक्षणिक प्रणाली : सचित्र व सरकन (Slides) द्वारा सोदाहरण व्याख्यान

इकाई-II : वस्त्र परिचय **20 अंक** **50 पीरियड**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य

- विद्यार्थियों को वस्त्रों की दुनिया से परिचित करवाना
- विद्यार्थियों को प्राकृतिक, कृत्रिम तथा मानव निर्मित तंतुओं और वस्त्रों से अवगत करवाना।
- विद्यार्थियों को कताई, बुनाई और बांधने की कला से अवगत करवाना।
- विद्यार्थियों को वस्त्रों के स्वभाव, उनके उपयोग और क्रिया के सम्बन्ध में ज्ञान देना।
- परिसज्जित करने के विभिन्न तरीकों के बारे में संक्षिप्त रूप से बताना।

शैक्षणिक निष्कर्ष :

- पाठ्यचर्या की समाप्ति पर विद्यार्थी इस योग्य हों कि-
- तरह-तरह के वस्त्रों को पहचान सकें और उनमें भेद कर सकें।
- वस्त्र निर्माण की विभिन्न प्रक्रियाओं को समझ सकें।
- विभिन्न प्रकार की परिसज्जाओं को जो कि नैत्यक एवम् खास वस्त्रों की क्रिया व निष्पत्ति को सुरुचिपूर्ण बनाती है, को समझना।

पाठ्यक्रम बिन्दु :

- वस्त्र उपयोग-परिधानों के विभिन्न वर्गों के लिए
- प्राकृतिक, कृत्रिम व मानव निर्मित तंतुओं और मिश्रित वस्त्रों की विशिष्टताओं और लक्षणों से परिचित होना।
- तंतुओं का सूत में रूपांतरण, धागा और सूत में अंतर जानना।
- करघा और बुनाई मशीन के द्वारा सूत का वस्त्र में रूपांतरण और वास्तविक वस्त्रों के नमूनों द्वारा समझाना।
- विभिन्न नैत्यक वस्त्र परिसज्जाओं को समझना-अपरिष्कृत कपड़े से पूर्ण परिष्कृत कपड़ा बनाना।
- प्रयोग परिसज्जाएँ-वस्त्रों के गुणों को बढ़ाने वाली परिसज्जाएं जैसे सिकुड़न रहित, स्थायी छाप और अग्नि प्रतिरोक क्षमता वगैरह।
- सौन्दर्य परिसज्जाएं वस्त्रों की मूल्य वृद्धि या महत्व के लिए वस्त्र परिसज्जाएं जैसे छपाई, उभार और रंगाई वगैरह।
- उत्पाद चक्र और धागा-कपड़ा परिधान के बीच संबंध जानना

शैक्षणिक प्रणाली वास्तविक वस्त्रों के नमूनों द्वारा सचित्र व सोदाहरण व्याख्यान देना।

अध्यापक/अध्यापिका से अपेक्षा की जाती है कि वह वस्त्र पुस्तकालय/लाइब्रेरी बनाए और उसी में शिक्षण दे।

ईकाई-III : अभिकल्प तत्व **20 अंक (सिद्धांत)** **80 पीरियड**

15 अंक (व्यावहारिक)

उद्देश्य

- विद्यार्थियों का प्राथमिक अभिकल्प तत्वों से परिचय करवाना।
- आसपास की आकृतियों के संबंध में उनकी सूक्ष्म ग्राहिता उत्पन्न करना और उसमें निरंतर वृद्धि करना।
- अभिकल्प शब्दावली बनाना जो कि व्यावसायिक अभिकल्पकों के लिए एक जरूरी साधान है।
- बृहत प्रकार के तरीकों और वस्तुओं से सजीव दृश्य चित्र निर्मित करना जो अप्रत्याशित उत्तेजना और समाधान दे सकें।

शैक्षणिक निष्कर्ष :

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थी इस योग्य हों कि–

- अभिकल्प तत्वों के बारे में ग्राह्य सूक्ष्मग्राहिता और योग्यता का प्रदर्शन कर सकें।
- अपनी अतिरिक्त योग्यता से आसपास की वस्तुओं का सूक्ष्मता से निरीक्षण कर सकें।
- प्राथमिक अभिकल्प भाषा बना सकें।
- अभिकल्प प्रक्रिया को समझना ताकि विद्यार्थी इन अभिकल्प तत्वों को अपनी परियोजनाओं के निर्माण में प्रयोग कर सकें।

पाठ्यक्रम बिन्दु :

- अधिकल्प प्रत्यय को समझना
- संरचना के एक आवश्यक अंग रेखा को समझना जो कि परिधानों के संदर्भ में रोचक दृश्य की दिशा निर्धारित करती है।
- 2D और 3D आकृतियों को समझना
- रंग विशेषता, प्रगाढ़ता, दूसरे रंगों से सम्बन्ध, बनावटें, आकार आदि को समझना।
- बनावट और रूप-रंग के लिए वस्त्रों का चुनाव-तंतु, सूत, निर्माण प्रक्रिया, परिसज्जा और रंग
- अवस्था को पाने के लिए सामंजस्य जिसमें सभी अभिकल्प तत्वों का काम इकठ्ठे फलीभूत हो।
- संतुलन और अनुपात को समझना ताकि विद्यार्थियों में कुछ तत्वों के महत्व को कम करने और बढ़ाने की योग्यता विकसित हो सके।

शैक्षणिक प्रणाली :

सचित्र व सरकन द्वारा सोदाहरण व्याख्यान देना।

मूल्यांकन मापदण्ड:

- दिए गए नियत कार्य की समझ।

- प्रस्तुत किए गए कार्य की गुणवत्ता
- कार्य की प्रस्तुति के बाद प्रत्येक विद्यार्थी का प्रतिदिन मूल्यांकन किया जाएं।
- कार्य के सुधारात्मक स्तर के लिए अंक देना।
- 10 प्रतिशत अंक समयबद्धता नियमितता और ईमानदारी के लिए दिय जाएं।
- समय पर परियोजना के पूरा होने पर।

संदर्भ पुस्तकें

- ग्रैफ्किस द्वारा वाफगनघगेने
- रिपीट पैटर्न-पीटर फिलिप्स गिलियन वॉसे
- डिजाइन एलीमेंट 2 - रिचर्ड होरा

इकाई-IV : परिधान निर्माण के तत्व 20 अंक (सिद्धांत), 15 अंक (व्यावहारिक)} 80 पीरियड

उद्देश्य :

- विद्यार्थियों का परिधान बनाने से परिचय
- सिलाई मशीन और उसके पुर्जो से अवगत कराना।
- सिलाई साधनों के उपयोग से परिचित करवाना।
- प्राथमिक स्तर पर हाथ और मशीन के टांके सिखाना।
- मशीन का सरल संचालन सिखाना।

शैक्षणिक निष्कर्ष :

पाठ्यक्रम समाप्ति पर विद्यार्थी इस योग्य हों कि-

- सिलाई मशीन पर निपुणता से काम कर सकें।
- मशीन की सरल समस्याओं को सुधार सकें।
- मशीन पर भिन्न-भिन्न सीवन लगा सकें।
- किनारों को हाथों के टांकों से पूर्ण कर सकें।
- वस्त्र पर चुन्नटें और तह बनाना सीख सकें।

पाठ्यक्रम निष्पति/बिन्दु :

- सिलाई-मशीन, उसके पुर्जे और क्रियाओं के साथ सिलाई साधानों से परिचय।
- सिलाई-मशीन की सरल समस्याओं और उसके रख-रखाव को समझना।
- सीधी और गोल सिलाई में दक्षता प्राप्त करना।

- प्राथमिक हाथ के टांके-कच्चा, तुरपाई, उल्टा टांका (बेक स्टिच) रंनिग टांका आदि का उनके समाप्त प्रयोग के साथ।
- प्राथमिक मशीन सीवन जो परिधानों के विभिन्न भागों की सिलाई और परिसज्जा में प्रयुक्त की जाती है। जैसे सरल सीवन, फ्रैंच सीवन, चपटी और गिरी हुई सीवन, तह वाली सीवन (लैपड़)
- चुन्नटों और तहों के लिए वस्त्र का जोड़-तोड़ करना।

शैक्षणिक प्रणाली सचित्र दृश्यों एवम् प्रदर्शन के साथ सोदाहरण व्याख्यान।

संदर्भ पुस्तकें -

- इनसाइक्लोपीडिया आफ ड्रैस मैकिंग द्वारा मार्सेल कवेंनडिश
- रीडर डाइजिस्ट
- बुक आफ स्विंग
- इनसाइक्लोपीडिया आफ स्विंग

व्यावहारिक अभ्यास

- कला तत्व जैसे रेखा, आकृति, रंग, बनावट, जगह आदि का प्रयोग कर अभ्यास करना जिस में अभिकल्पना के नियमों का पालन हो।
- रंग-चक्र, रंग योजना, रंग प्रगाढ़ता चार्ट, रंग गुणताचार्ट आदि पर अभ्यास करना।
- हाथ के टांकों का अभ्यास-कच्चा, तुरपाई, उल्टा टांका और उसके प्रकार और सरल (रनिंग) टांका।
- सीवन, सरल, फ्रैंच, तह, चपटी, हॉग कोंग, ढीली और ऊपर से सिली।
- चुन्नट, प्लीटस और तहें (टक्स)

सत्र समाप्ति परियोजना

मौखिक परीक्षा व फाइल

समय-3 घण्टा	**कक्षा XII (सिद्धांत)**	**70 अंक**
इकाई-I : फैशन का इतिहास	**15 अंक**	**40 पीरियड**

पाठ्यक्रम का उद्देश्यः

- फैशन इतिहास का प्राचीन सभ्यता से लेकर वर्तमान तक का संक्षिप्त परिचय या विवरण देना।
- पहनावे और फैशन को प्रभावित करने वाले सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक घटकों का वर्णन करना जो कि फैशन जगत् में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

शैक्षणिक निष्कर्षः

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थी इस योग्य हों कि-

- वर्षो से चले आ रहे फैशन इतिहास को समझ सकें।
- विभिन्न प्रकार की प्रवृतियों की उत्पत्ति को समझ सकें

- विभिन्न संस्कृतियों के अलग-अलग परिधानों में अंतर कर सकें।
- ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाओं की सराहना कर सकें, जिन्होंने फैशन पर अमिट छाप छोड़ी है।

पाठ्यक्रम सारांश/बिन्दु :

पहनावे के सिद्धांत: अलंकरण, बचाव, पहचान और रीति-रिवाज

फैशन प्रत्यय

(i) शारीरिक अलंकरण, रंगाई, छिदाई

(ii) आच्छादन ग्रीक-रोमन, भारतीय और दूसरे महाद्वीप

(iii) सिले हुए परिधाान-युद्धा वेशभूषा, कवच

(iv) पूर्वी और पश्चिमी युद्ध वेशभूषा

- **फैशन पर विश्वयुद्धों का प्रभाव :** युद्धोतर फैशन अपने प्राचीन रूप से समाज के बड़े वर्गों के लिए सामान्य बना। समाज विभिन्न समूहों में उनकी आर्थिक सामाजिक और बौद्धिक विकास की भूमिका पर व्यवस्थित हुआ।
- **औद्योगिक क्रांति का प्रभाव :** बीसवीं सदी में औद्योगिक क्रांति एक नई परिस्थिति की साक्षी बनी। जो वस्त्र और कपड़े पारंपरिक तौर पर किसी खास तरीके से तैयार किए जाते थे अब उन्हीं का बहुमात्र उत्पादन होने लगा।
- कई सदियों में स्वचालन और विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी विकासों ने समाज को उत्कृष्ट वर्गहीन समाज में बांट दिया।
- वर्तमान सदी में फैशन का उद्भव।

शैक्षणिक विद्या/प्रणाली : सचित्र/सोदाहरण व्याख्यान

संदर्भित पुस्तके : केलिडिस्कोप आफ फैशन - लेखक - मेहर फैस्टीलिनो

एनसीएन्ट इण्डियन कस्टम - लेखक - रोशन अल्काजी

इकाई- II : प्राथमिक खाका (पैटर्न) विकास **20 अंक (सैद्धांतिक)** **(80 पीरियड)**

15 अंक (व्यावहारिक)

पाठ्यक्रम उद्देश्य :

- खाका विकास के द्वारा, विद्यार्थियों का ैशन अभिकल्पना की दुनिया से परिचय करवाना
- आवश्यक कलाओं का वर्णन जो एक अभिकल्प को इस योग्य बना सके कि वह अभिकल्पना खाके को तीन वित्तीय आकार में परिवर्तित कर सकें।
- चोली, आस्तीन और स्कर्ट के प्राथमिक खण्डों का विकास
- अनुरूपता परीक्षण के प्रत्यय को समझना और उसे कार्यान्वित करना और कागजी खाके को कपड़े में बदलना।

शैक्षणिक निष्कर्ष

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर, विद्यार्थी इस योग्य हों कि वे:

- खाका बनाने की प्राथमिक कलाओं को समझ सकेंगे।

- अनुरूपता और संतुलन के प्रत्यय को समझ सकेंगे और सराह सकें।
- माप लेखा से प्राथमिक खण्डों का विकास कर सकें।
- खाके का अनुरूपता परीक्षण सकें।
- प्राथमिक खण्डों से सरल अभिकल्पनाओं के खाके का विकास कर सकें।

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

- शरीर और ड्रैस : फार्म को मापने के तरीके।
- माप और आकार से सम्बन्ध।
- खाका बनाने के उपकरण।
- खाका विकास में प्रयुक्त होने वाले आम शब्द।
- महिला पोशाकों के लिए खाका विकास से परिचय। खाका कैसे बनाया जाए और कैसे विकसित किया जाए। अनुरूपता और संतुलन का महत्त्व व उसे पाने के तरीके।
- प्राथमिक चोली मानक माप चार्ट से विकसित किया गया और ड्रैस फार्म पर अनुरूप परीक्षण किया हुआ।
- आवश्यक चीजें जैसे डार्ट, सीवन की जगह, खांचा, तंतु रेखा आदि के निशान लगाना।
- परिधान के ब्योरों के निशान लगाना जैसे मोढ़ा, गल रेखा टए नए गोल, नाव और चाकोर।
- प्राथमिक बांह खंड का विकास और प्राथमिक चोली को मोढ़े में बिठाना।
- प्राथमिक एक यो दो डार्ट वाली प्राथमिक स्कर्ट (लहंगा) खण्ड का विकास।
- कालर विकास के मूल और प्राथमिक कालर जैसे पीटर-पेन और चाइनीज का खाका तैयार करना।
- डार्ट जोड़-तोड़ डार्ट को एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाने का तरीका और उसे काट और फैलाव तकनीक से सीवन में बदलना।

अंतिम उपलब्धि : विद्यार्थी प्राथमिक खडों से चोली आरै लहगों के सरल अभिकल्पना के खाके विकसित करना सीखेंगे।

शैक्षणिक प्रणाली प्रदशर्न, दृश्य, स्लाइर्डस के साथ सचित्र व्याख्यान।

इकाई-III : फैशन तत्व **15 अंक** **40 पीरियड**

उद्देश्य :

विद्यार्थियों का प्राथमिक फैशन तत्वों से परिचय कराना

विद्यार्थियों को फैशन की चाल, फैशन चक्र और पहनावे की किस्मों के बारे में ज्ञान करवाना

विद्यार्थियों को परिधानों के विभिन्न वर्गों के बारे में सुग्राहित कराना जैसे पुरुष परिधान, महिला परिधान और बच्चों के परिधान

विद्यार्थियों को उच्च और बहुमात्र फैशन में अन्तर सिखाना, तैयार वस्त्र और खास बने वस्त्रों में अंतर करना।

शैक्षणिक निष्कर्ष : पाठय् क्रम की समाप्ति पर, विद्यार्थी इस योग्य हों कि–

- फैशन तत्वों को समझ सकें।
- फैशन की चाल से अवगत हों।
- फैशन चक्र को समझें।
- पुरुष, महिला और बच्चों के परिधानों के विभिन्न वर्गों को जानें।

मूल्यांकन का रूप:

- दिए गए नियत कार्य को समझना
- किए गए कार्य की गुणवत्ता
- कक्षा में प्रत्येक विद्यार्थी की उपस्थिति के बाद दैनिक कार्य दिया जाए।
- कार्य की गुणवत्ता के सुधार के आधार पर अंक दिए जाएं।
- 10 प्रतिशत अंक समयबद्धत्ता, नियमित्ता तथा ईमानदारी के लिए दिए जाएं।

पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

- पुरुष, महिला और बच्चों के परिधान
- पुरुष परिधान–कमीज, पेन्ट, जाकेट सूट और खेल–सूट
- महिला परिधान–पोशाकें, कुरती, लंहगा, पेन्ट, कमीज, साड़ी और चोली
- बच्चों के परिधान–0–15 साल तक के बच्चों के परिधानों की किस्में और विभिन्न परिधान जैसे फ्रॉक, लहंगा, पेन्ट, कुरती, डन्गरीस जैकेट आदि। विभिन्न आयुवर्ग की जरूरतों को महत्व देते हुए ही अभिकल्पना करना।
- फैशन परिधानों के लिए प्रयुक्त सजाने के साधान (ट्रिम)
- उच्च फैशन खास और तैयार वस्त्र, उच्च फैशन ब्रांडस राष्ट्रीय और अर्न्तराष्ट्रीय
- बहुमात्र फैशन तैयार वस्त्र

शैक्षणिक विधा :

सचित्र/सोदाहरण व्याख्यान।

संदर्भित पुस्तकें:

- कनसैप्ट टूाकन्सूमर द्वारा–गिनी स्टीमन फ्रींग्स
- फैशन का इनसक्लिोपीडि़या

इकाई–IV : परिधान निर्माण के मूल **20 अंक (सैद्धांतिक)** **80 पीरियड**

15 अंक (व्यावहारिक)

उद्देश्य

- परिधान को बनाना

- विभिन्न प्रकार की सीवन के साथ चोली का निर्माण करना
- चोली के लिए बटन पट्टी बनाना।
- गोट और फेसिंग (facing) लगाकर गल रेखा समाप्त करना।
- मोढ़े में बांह बिठाना
- लहंगे में चुन्नटें डालना और कमर को कमर, बंध से समाप्त करना और चोली से जोड़ना।

शैक्षणिक निष्कर्ष :

पाठ्यक्रम की समाप्ति पर विद्यार्थी जान सकेंगे कि-

- परिधान के विभिन्न भागों को जोड़कर नये परिधान का निर्माण करना
- चोली को पूर्ण करना
- बांह जोड़ना
- लहंगा सिलना

पाठ्यक्रम की विषयवस्तुः

- वस्त्रों की किस्मों को समझना तथा भीतर, मध्य और बाहरी अस्तर की जानकारी प्राप्त करना
- निशान लगाने का तरीका सीखना और कपड़े को काटने के लिए तैयार करना।
- खाका बिछाना और खास कपड़ों को काटना
- चोली को विभिन्न सिलाइयों का उपयोग कर जोड़ना और एक तरफी सिलाइयों और कंधों की सिलाइयों से एक रूप से समाप्त करना।
- कटी और सिली हुई बटन पट्टी का प्रत्यय विभिन्न बटन पट्टियों और (fasterners) बंधनों को परिधान के विभिन्न भागों में लगाना या स्थापित करना।
- गल रेखा को गोट, तिरछी पट्टी, आकृतिक पट्टी से समाप्त करने का उपयुक्त तरीका अपनाना और Stay stitching (स्टे स्टीचिंग) को जानना अर्थात सिलाई ठहराने के महत्व को व उपयोग को जानना।
- बांह को मोढ़े में बिठाकर चोली से जोड़ना, लहंगा एकत्रित करना या जोड़ना, चुन्नटें और Pleats को कमरबंध से जोड़ना।

अंतिम उपलब्धिः खाके द्वारा स्कर्ट और चोली का निमार्ण

- सरकन, दृश्य चित्रों व व्याख्यान द्वारा स्पष्टीकरण। Evaluation Criteria (मूल्यांकन कसौटी)
- दी गई प्रश्नावली को समझना
- जमा करवाए गए कार्य का स्तर
- बच्चों द्वारा किए और दिखाए गए कार्य को प्रतिदिन जांचना।
- कार्य में निरन्तर विकास करने वाले बच्चों को अंक देना

प्रैक्टीकल/व्यावहारिक

- खाका तैयार करना और माप के अनुसार निम्नलिखित ड्रेस फार्म पर अनुरूप परीक्षण करना
- महिला परिधान का प्राथमिक खण्ड, बांह खण्ड, कॉलर चाईनीज और पीटर-पेन
- काट और फैलाव का उपयोग कर डार्ट-जोड़-तोड़ पर अभ्यास
- परिधान बनाना और समाप्त करना
- डार्ट
- कमरबंद
- जेबें
- बटन-पट्टी-कटी और सिली हुई
- गल रेखा समाप्ति
- बांह जोड़ना खाके के साथ
- परिधान निर्माण-स्कर्ट और चोली का निर्माण

सत्र समापन परियोजना

मौखिक परीक्षा और फाईल

प्रयोगशाला की जरूरत (30 विद्यार्थियों के लिए)

प्रयोगशाला का नाप 35 फुट × 20 फुट (कम से कम)

वातानुकुलित वातावरण

	वस्तुएं	संख्या
1.	औद्योगिक सिलाई मशीन (बिजली समेत)	30
2.	खाका बनाने की मेज, 5 फुट × 4 फुट (कॉर्क टॉप)	8 (4 विद्यार्थी/मेग)
3.	ड्रेस फॉर्म (आधी), कीमत 8000/- रू. (प्रत्येक)	30
4.	स्टीम आयरन / 1000/-रु.	4
5.	आयरनिंग बोर्ड / 500/- रु.	4
6.	साफ्ट बोर्ड	दीवारों पर हर तरफ
7.	स्टूल	30
8.	सफेद बोर्ड	1
	अनुमानित कीमत 5,00,000 रुपया	

विद्यालय को चुनने का मापदण्ड-

उनके पास उपयुक्त वातावरण, जगह, उपकरण, मशीनरी और रख-रखाव, प्रशिक्षित अध्यापक, पाठ्यक्रम के लिए खास पुस्तकालय, सुविधाओं और शिक्षकों की सख्या को बढ़ाने की इच्छा के साधान हों।

30. ललित कलाएं

विद्यार्थी निम्नलिखित पाठ्यक्रमों में से किसी एक का चयन कर सकता है :

(क) चित्रकला (कोड सं. 049)

अथवा

(ख) छापा-चित्रकला (कोड सं. 050)

अथवा

(ग) मूर्ति कला (कोड सं. 051)

अथवा

(घ) अनुप्रयुक्त कला (व्यावसायिक कला) (कोड सं. 051)

इन समस्त चार विषयों के लिए कला संबंधी निम्नलिखित पारिभाषिक शब्द केवल संदर्भ तथा सामान्य ज्ञान में वृद्धि करने के लिए निर्धारित किए गए हैं :

1. संयोजन के तत्व : बिन्दु, रेखा, रूपाकार, वर्ण (रंग) टोन, पोत (टेक्सचर) तथा अंतराल।

2. संयोजन के सिद्धान्त : एकता, सामंजस्य, संतुलन, लय, बल तथा अनुपात, अमूर्तिकरण तथा रीतिबद्धता।

3. चित्रकला

    (अ) पारिभाषिक शब्दावली-स्थितिजन्य-लघुता, परिप्रेक्ष्य, (दृष्टि त्रिज्या, छय-वृद्धि), अक्षिस्तर (नेत्र-तल/नेत्र-स्तर/दशष्टि-स्तर), स्थिर दृश्य-बिंदु, लोपीबिंदु, अनुपात-समानुपात, खाका बनाना (द्रुत रेखाचित्र) रेखांकन, प्रकाश-छाया, पेंटिंग, स्थिर वस्तु-चित्रण, भू-दृश्य, शरीर-रचना, उर्ध्वाधर (लम्बवत्), क्षैतिज, द्वि एवं त्रि-आयाम पारदर्शी एवं अपारदर्शी

    (ब) सामग्री-कागज, (कार्ट्रिज हाथ से बना) पेंसिल, पानी, एकेलिक रंग, टेम्परा रंग, पोस्टर रंग जलावरोधक स्याही, कैनवास तथा हार्डबोर्ड।

4. संयोजन-माध्यम : कोलाज, मोजाइक (पच्चीकारी चित्र), पेटिंग म्यूरल, फ्स्को (भित्तिचित्र), बाटिक, बंधेज।

5. मूर्तिकला : उभारदार और गोलाकार (सम्पूर्ण) मूर्तिशिल्प, मिट्टी से मूर्ति बनाना, मृण्मूर्ति (पकाई हुई मिट्टी की मूर्ति) काष्ठ एवं पाषाण तक्षण, कास्य की ढलाई तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस।

6. छापा चित्रकला : लिनो-कट, उभारदार-मुद्रण, गोदना (एचिंग), लिथो-मुद्रण, सिल्क स्क्रीन-मुद्रण, लेटर प्रेस तथा आर्फसेट मुद्रण।

7. अनुप्रयुक्त कला : पुस्तक आवरण-डिजाइन तथा घटना-चित्रण (इलस्टेशन), व्यंग्य-चित्रण पोस्टर, समाचार-पत्र तथा पत्रिकाओं आदि के लिए विज्ञापन, तथा कम्प्यूटर छापा चित्रण।

(क) चित्रकला (कोड सं. 049)

परिचय :

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर एक ऐच्छिक विषय के रूप में चित्रकला के पाठ्यक्रम का उद्देश्य यह है कि सिंधु घाटी काल से लेकर वर्तमान काल तक व्याप्त भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में समाहित दृश्यात्मक कला अभिव्यक्तियों के विभिन्न महत्त्वपूर्ण और जाने-माने पहलुओं की समझ-बूझ के द्वारा विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक बोध को विकसित किया जाए। इसकी परिधि में रेखांकन तथा रंग भरने के प्रायोगिक अभ्यास भी सम्मिलित किये गए हैं, जिससे विद्यार्थियों की अवलोकन, कल्पना तथा सृजन की मानसिक शक्तियों के विकस के साथ-साथ उनकी अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक भौतिकीय कौशलों का भी विकास किया जा सके।

उद्देश्य :

(क) सैद्धांतिक (भारतीय कला का इतिहास)

विद्यार्थियों के लिए भारतीय कला के इतिहास को शामिल करने का उद्देश्य यह है कि उन्हें भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित कला-अभिव्यक्तियों की विविध शैलियों तथा रूपों के प्रकारों (विधाओं) से परिचित कराया जाए। इनके अध्ययन से उनका दृष्टिकोण व्यापक होगा, वे प्रशंसा कर सकने के योग्य बन सकेंगे तथा उनमें सौन्दर्यात्मक संवदेनशीलता विकसित होगी जिससे वे प्रकृति तथा जीवन के सौंदर्य का आनन्द ले सकें। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को ऐसा अवलोकन तथा अध्ययन करने के अवसर भी प्राप्त होंगे कि विभिन्न कला शैलियों के पारस्परिक सम्मिलन से शैलियों में किस प्रकार परिवर्तन आते हैं तथा एक सर्वथा नवीन कला शैली का उद्‌भव (जन्म) होता है। विद्यार्थियों को कला की जानकारी मानवीय-अनुभवों के रूप में दी जानी चाहिए। अध्यापकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों को विभिन्न कलात्मक अभिव्यक्तियों, माध्यमों और प्रयोगों में आने वाले उपकरणों की अधिक से अधिक जानकारी प्रदान करें।

भारतीय कला का एक लंबा इतिहास है अत: विद्यार्थियों को भारतीय दृश्यात्मक कला में हुए विकास की संक्षिप्त झलकियों से परिचित कराया जाएगा जो अवधारणा निर्माण के लिए आवश्यक है। पाठ्यक्रम में सम्मिलित उदाहरणों का चयन उनके सौंदर्यात्मक गुणों को ध्यान में रखकर और केवल दिशा-निर्देश के लिए किया गया है।

(ख) प्रायोगिक

चित्रकला में प्रायोगिक अभ्यासों को शामिल करने का उद्देश्य विद्यार्थियों की सहायता करना तथा उन्हें इस योग्य बनाना है :

चित्रकला में प्रयुक्त सामग्री (सतह, उपकरण तथा साज-सामान आदि) को प्रभावकारी ढंग से इस्तेमाल करने की दक्षता विकसित करना।

जीवन तथा प्रकृति में मिलने वाली सामान्य वस्तुओं और अनेकानेक ज्यामितीय और अज्यामितीय रूपाकारों के अध्ययन द्वारा उनके अवलोकन-कौशल को तीक्ष्ण (पैना) करना

इन अवलोकनों के रेखांकन तथा रग भरने की दक्षता विकसित करना

चित्र-संयोजन की समझ (चित्र-संयोजन के तत्वों और सिद्धान्तों का प्रयोग) को विकसित करना

विभिन्न रूपों और रंग योजनाओं को पहले कल्पित रूप में सृजित करने और फ़िर उन्हें प्रभावकारी ढंग से रेखांकन

और रंगों में अभिव्यक्त करने की क्षमता पैदा करना।

जीवन तथा प्रकृति के विभिन्न मनोभावों, मन:स्थितियों तथा विभिन्न रूपों को रेखाओं, आकारों एवं रंगों में अभिव्यक्त करना।

पाठ्यक्रम की संरचना

कक्षा-11 (सैद्धांतिक)

72 पीरियड

एक सैद्धंतिक पत्र **समय : 2 घंटा**	**पूर्णांक : 40**
इकाईयां :	**अंक**
भारतीय कला का इतिहास	
1. पूर्व एतिहासिक पाषाण कला अथवा सिंधु घाटी की कला	10
2. बौद्ध, जैन तथा हिन्दू कला	15
3. मंदिर मूर्तिकला कांस्य मूर्तियां तथा भारतीय-इस्लामिक स्थापत्य के कलात्मक पक्ष	15
	कुल 40

इकाई-**I** : **पूर्व एतिहासिक पाषाण कला अथवा सिंधु घाटी की कला** **12 पीरियड**

(हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो)

(2500 ई.पू. से 1500 ई.पू.)

1A पूर्व एतिहासिक पाषाण कला

परिचय

(1) समय और स्थान

(2) पूर्व एतिहासिक चित्रकला ज्ञान

(3) घूमते हुए पशु भीमबेथाका

(4) लोक नृत्य भीमबेथाका

1B परिचय

(i) काल तथा अवस्थिति

(ii) विस्तार : लगभग 1500 मील में

(क) हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो (जो अब पाकिस्तान में है)

(ख) रोपड़, लोथल, रंगपुर, आलमगीरपुर, काली बंगान, बनवाली तथा धौला वीरा (भारत में)

(2) निम्नलिखित मूर्तियां एवं पक्की मिट्टी की मूर्तियों का अध्ययन

(i) नर्तकी (मोहनजोदड़ो)

कांस्य, 10.5 × 5 × 2.5 से.मी.

लगभग 2500 ई. पू.

(संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

(ii) पुरुष धड़ (हड़प्पा)

चूने का पत्थर 9.2 × 5.8 × 3 से.मी

लगभग 2500 ई. पू.

(संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

(iii) मातृदेवी (मोहनजोदड़ो)

पक्की मिट्टी 22 × 8 × 5 से.मी

लगभग 2500 ई. पू.

(संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

(3) निम्नलिखित मोहर का अध्ययन :

(i) वृषभ (मोहन जोदड़ो)

पत्थर सेलखड़ी 2.5 × 2.5 × 1.4 से.मी. लगभग 2500 ई. पू.

(संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

(4) निम्नलिखित मृदृभांड (मिट्टी के बर्तनों) पर अलंकरण का अध्ययन :

(i) चित्रित मृद्भांड (जार) (मोहनजोदड़ो)

(संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय : नई दिल्ली)

इकाई-2. बौद्ध, जैन तथा हिन्दू कला **24 पीरियड**

(तीसरी शताब्दी ई. पू. से 8वीं शताब्दी ई. तक)

(1) मौर्य, शुंग, कुषाण (गांधार एवं मथुरा) तथा गुप्त कालीन कला का सामान्य परिचय :

(2) निम्नलिखित मूर्तियों का अध्ययन :

(i) सारनाथ का सिंह शीर्ष (मौर्य काल)

पालिशदार बलुआ पत्थर

लगभग तीसरी शताब्दी ई. पू.

(संग्रह : सारनाथ संग्रहालय, उत्तर-प्रदेश)

(ii) दीदार गंज से प्राप्त चंवर धारिणी (यक्षी) (मौर्य काल)

पालिशदार बलुआ पत्थर

लगभग तीसरी शताब्दी ई. पू.

(संग्रह : पटना संग्रहालय, बिहार)।

(iii) तक्षशिला से प्राप्त बोधिसत्व शीर्ष (कुषाण काल गांधार शैली)

पत्थर, 27.5 × 20 × 15 से.मी

लगभग द्वितीय शताब्दी ई.

(संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)।

(iv) कटरा टीला से प्राप्त आसनस्थ बुद्ध (कुषाण काल मथुरा शैली)

चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर

लगभग तीसरी शताब्दी ई. पू.

(संग्रह : राजकीय संग्रहालय, मथुरा)।

(v) सारनाथ से प्राप्त आसनस्थ बुद्ध (गुप्तकाल)

पत्थर

लगभग 5वीं शताब्दी ई.

(संग्रह : सारनाथ संग्रहालय, उत्तरप्रदेश)।

(vi) जैन तीर्थंकर (गुप्तकाल)

चित्तीदार लाल बलुआ पत्थर

लगभग 5वीं शताब्दी ई.

(संग्रह : राज्य संग्रहालय, लखनऊ, उ.प्र.)।

(3) अजन्ता का परिचय :

अवस्थिति, काल, गुफाओं की संख्या, चैत्य तथा विहार, चित्र एवं मूर्तियां, विषय-वस्तु तथा तकनीक आदि।

(4) निम्नलिखित चित्र तथा मूर्ति का अध्ययन :

(i) पद्मपाणि बोधिसत्त्व (अजन्ता गुफा सं. 1, महाराष्ट्र)

म्युरल (चित्र)

लगभग 5वीं शताब्दी ई.

(ii) मार विजय (अजन्ता गुफा सं. 26, महाराष्ट्र)

पत्थर में उत्कीर्ण मूर्ति

लगभग 5वीं शताब्दी ई.

इकाई- 3. मंदिर-मूर्तिकला, कास्य मूर्तियां तथा भारतीय-इस्लामी स्थापत्य के कलात्मक पक्ष (36 पीरियड)

(अ) मंदिर-मूर्तिकला :

(6वीं शताब्दी ई. से 13वीं शताब्दी ई.)

1. मंदिर-मूर्तिकला का परिचय

2. निम्नलिखित मंदिर-मूर्तियों का अध्ययन :

(i) गंगा-अवतरण (पल्लव काल, महाबलीपुरम, तमिलनाडु)

ग्रेनाइट शिला (पत्थर)

लगभग 7वीं शताब्दी ई.।

(ii) रावण कैलाश पर्वत को हिलाते हुए (राष्ट्रकूट, एलोरा, महाराष्ट्र)

पत्थर

लगभग 8वीं शताब्दी ई.

(iii) त्रिमूर्ति (एलिफेन्टा, महाराष्ट्र)

पत्थर

लगभग 9वीं शताब्दी ई.

(iv) लक्ष्मीनारायण, कंदरीय महादेव मंदिर (चंदेल काल, खजुराहो, म.प्र.)

पत्थर

लगभग 10वीं शताब्दी ई.

(v) झांझ (मंजीरा) वादिका, सूर्य मंदिर (गंगा राजवंश, कोणार्क, उड़ीसा)

पत्थर

लगभग 13वीं शताब्दी ई

(vi) मां और बच्चा, विमलशाह मंदिर (सोलंकी राजवंश, दिलवाड़ा, माउंट आबू , राजस्थान)

सफेद संगमरमर

लगभग 13वीं शताब्दी ई.

(ब) कांस्य मूर्तियां :

1. भारतीय कांस्य कला का परिचय

2. ढालने की पद्धति (ठोस तथा खोखली)

3. निम्नलिखित दक्षिण भारतीय कांस्य मूर्तियों का अध्ययन :

   (i) नटराज (चोल काल, तंजावुर जिला, तमिलनाडु)

   12वीं शताब्दी ई.

   (संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

   (ii) देवी (उमा) चोल काल

   11वीं शताब्दी ई.

   (संग्रह : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

(स) भारतीय-इस्लामी स्थापत्य के कलात्मक पक्ष :

1. परिचय

2. निम्नलिखित स्थापत्यों का अध्ययन :

(i) कुतुब मीनार, दिल्ली

(ii) ताजमहल, आगरा

(iii) गोल गुंबज, बीजापुर

कक्षा 11 (प्रायोगिक)

एक प्रायोगिक प्रश्न पत्र	**समय: 6 घंटे (3+3)**	**पूर्णांक : 60**
इकाई के अनुसार अंकों का भार/वितरण :		
इकाईयां		**अंक**
1. प्रकृति और वस्तु का अध्ययन		20
2. चित्र-संयोजन		20
3. सत्र कार्य		20
	कुल	60

इकाई-1. प्रकृति और वस्तु का अध्ययन **60 पीरियड**

एक स्थिर बिन्दु से दो या तीन प्राकृतिक और ज्यामितीय रूपाकारों का पेंसिल माध्यम में प्रकाश और छाया सहित अध्ययन। पौधों, सब्जियों, फलों तथा फूलों आदि जैसे प्राकृतिक रूपाकारों का प्रयोग किया जाए। घनों, शंकुओं, समपाश्वों (प्रिज्मों), बेलनाकारों तथा गोलाकारों जैसे ज्यामितीय रूपाकारों अथवा वस्तुओं का प्रयोग किया जाना चाहिए।

इकाई-2 : चित्र संयोजन **60 पीरियड**

(i) प्राथमिक तथा द्वितीयक रंगों में ज्यामितीय और लयात्मक आकृतियों की रेखायी-विभिन्नताओं में आधारभूत आलेखन (बेसिक डिजाइन) के सरल अभ्यास करना ताकि आलेखन एक संगठित दृश्यात्मक व्यवस्था के रूप में समझा जा सके।

10 अंक (36 पीरियड)

25 अंक

(ii) जीवन तथा प्रकृति के दृश्यों के द्रुत रेखाचित्र 10 अंक (24 पीरियड)

3. सत्र-कार्य **48 पीरियड**

एक पोर्टफोलियो प्रस्तुत करना जिसमें निम्नलिखित रचनाएं शामिल हों :

(क) सत्र के दौरान तैयार किये गए किसी भी माध्यम में प्रकृति तथा वस्तु अध्ययन के पांच चयन किये गए चित्रों को प्रस्तुत करना जिनमें से कम से कम दो स्थिर-जीवन वस्तुओं के अभ्यास हों — 10 अंक (24 पीरियड)

(ख) वर्ष के दौरान तैयार किए गए चित्रों में से दो चयन की गई कृतियां। — 10 अंक (24 पीरियड)

(क) तथा (ख) कुल : 26 अंक

पाठ्यक्रम के दौरान परीक्षार्थियों द्वारा निर्मित तथा चयन की गई ये कृतियाँ विद्यालय के प्राधिकारियों द्वारा प्रमाणित कराके कि इन्हें विद्यालय में ही निर्मित किया गया है, मूल्यांकन के लिए परीक्षक के सम्मुख प्रस्तुत की जायेंगी।

टिप्पणी समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो पीरियड तक निरंतर कार्य करने का अवसर मिल सके।

पाठ्यक्रम की संरचना

कक्षा 12 (सैद्धान्तिक)

एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र	समय : 2 घंटे	पूर्णांक 40	72 पीरियड
इकाईयां			**अंक**
भारतीय कला का इतिहास			
1. राजस्थानी एवं पहाड़ी लघु-चित्र शैलियां			10
2. मुगल एवं दक्खिनी लघुचित्र शैलियां			10
3. बंगाल चित्र शैली और			10
4. भारतीय कला में आधुनिक प्रवशत्तियां			10
		कुल	**40**

इकाई-1 : राजस्थानी तथा पहाड़ी लघु-चित्र शैलियां **24 पीरियड**

(16वीं शताब्दी ई. से 19वीं शताब्दी ई. तक)

(i) भारतीय लघु-चित्र शैलियों के नाम : पश्चिमी-भारतीय, पाल, राजस्थानी, मुगल, मध्य-भारतीय, दक्खिनी तथा पहाड़ी।

(अ) राजस्थानी शैली :

1. उद्भव एवं विकास
2. उप-शैलियां-मेवाड़, बूंदी, जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़ तथा जयपुर।
3. राजस्थानी शैली की मुख्य विशेषताएं
4. निम्नलिखित राजस्थानी चित्रों का अध्ययन :

शीर्षक	**चित्रकार**	**उप-शैली**
मारू-रागिनी	साहिबदीन	मेवाड़
राजा अनिरूद्ध सिंह हाड़ा	उत्कल राम	बूंदी
चौगान के खिलाड़ी	दाना	जोधपुर
कृष्ण झूले पर	नूरूद्दीन	बीकानेर
राधा (बाणी-ठणी)	निहालचन्द	किशनगढ़
चित्रकूट में भरत का राम से मिलाप	गुमान	जयपुर

(ब) पहाड़ी शैली :

1. उद्भव एवं विकास
2. उपशैलियां बसोहली तथा कांगड़ा
3. पहाड़ी शैली की मुख्य विशेषताएं
4. निम्नलिखित पहाड़ी चित्रों का अधययन

(i) कृष्ण गोपियों के संग	बसौली
(ii) रागमेघ	कांगड़ा

इकाई-2 : मुगल तथा दक्खिनी लघु-चित्र शैलियां **24 पीरियड**

(16वीं शताब्दी ई. से 19 शताब्दी ई. तक)

(अ) मुगल शैली :

1. उद्भव एवं विकास
2. मुग़ल शैली की मुख्य विशेषताएं

3. निम्नलिखित मुगल चित्रों का अध्ययन :

शीर्षक	**चित्रकार**	**उप-शैली**
गोवर्धनधारी कृष्ण	मिस्कीन	अकबर
बाबर सोन नदी पार करते हुए	जगनाथ	अकबर
मरियम का चित्र लिए हुए जहांगीर	अबुल हसन	जहांगीर
पक्षी-विश्राम (अड्डे) पर बाज़	उस्ताद मन्सूर	जहांगीर
कबीर और रैदास	उस्ताद फकीरूल्लाह खां	शाहजहां
द्वारा शिकोह की बारात	हाज़ी मदनी	प्रांतीय मुग़ल (अवध)

(ब) दक्खिनी शैली :

1. उद्भव एवं विकास

2. दक्खिनी शैली की मुख्य विशेषताएं

3. निम्नलिखित दक्खिनी चित्रों का अध्ययन :

शीर्षक	**पशैली**
नर्तकियां	हैदराबाद
चांद बीबी पोलो (चौगान) खेलते हुए	गोलकुण्डा

इकाई-3 : बंगाल चित्र शैली और भारतीय कला में आधुनिक प्रवृत्तियां **24 पीरियड**

(लगभग 19वीं शताब्दी के मध्य तथा उससे आगे)

(अ) 1. (अ)भारतीय कला में नवीन युग-एक परिचय

(ब) निम्नलिखित चित्रों का अध्ययन :

(i) समुद्र का मान-मदर्न करते हुए राम-राजा रवि वर्मा

2. भारत के राष्ट्रीय ध्वज का विकास (प्रथम चरण 1906, मध्य चरण 1921 तथा अंतिम चरण 1947) रूप (आकार) तथा रंग योजना का अध्ययन

(ब) 1. बंगाल चित्र शैली का परिचय

(i) बंगाली शैली का उद्भव एवं विकास

(ii) बंगाल शैली की मुख्य विशेषताएं

2. राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय कलाकारों का योगदान

3. बंगाल शैली के निम्नलिखित चित्रों का अध्ययन :

   (i) यात्रा का अंत अवनीन्द्र नाथ ठाकुर

   (ii) पार्थसारथी नंद लाल वसु

   (iii) राधिका मो. अब्दुर्रहमान चुगतई

इकाई (4) भारतीय कला में आधुनिक प्रवृत्तियां

1. निम्नलिखित चित्रों का अध्ययन :

   (i) जादूगर-गगनेन्द्र नाथ टैगोर

   (ii) मां और बच्चा-यामिनी राय

   (iii) औरत की मुखाकृति रवीन्द्र नाथ टैगोर

   (iv) तीन लड़कियां अमश्ता शेर-गिल

2. निम्नलिखित मूर्ति-शिल्पों का अध्ययन :

   (i) श्रम की विजय देवी प्रसाद राय चौधरी

   (ii) संथाल परिवार-रामकिंकर वैज

3. निम्नलिखित समकालीन भारतीय कलाकृतियों का अध्ययन :

   (अ) चित्र

   (i) मदर टेरेसा मकबूल फिदा हुसैन

   (ii) कविता का जन्म कृष्ण कट्टि हेब्बार

   (iii) गपशप-नारायण श्रीधर बेन्द्रे

   (iv) शीर्षक विहीन-गुलाम रसूल संतोष

   (v) विकर्ण (तिरछा)-तैयब मेहता

   (ब) छापा चित्र :

   (i) भंवर कृष्ण रेड्डी

   (ii) बच्चे सोमनाथ होर

(iii) देवी ज्योति भट्ट

(iv) दीवारों से सरोकार अनुपम सूद

(i) पुरुष, स्त्री एवं वश्क्ष के लक्ष्मा गौड

(स) मूर्ति-शिल्प :

(i) खड़ी हुई औरत-धनराज भगत

(ii) अनसुनी चीखें-अमरनाथ सहगल

(iii) गणेश-पी.वी. जानकीराम

(iv) आकृति शंखो चौधरी

(v) चतुर्मुखी एक्का यादगिरी राव

टिप्पणी : उपर्यक्त कलाकारों के नाम तथा उनकी कलाकृतियों के शीर्षक केवल सझ्ााव के रूप में हैं और किसी भी रूप में सम्पूर्ण नहीं हैं। अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को अपने साधनों के अनुसार इसको विस्तश्त करना चाहिए, परन्तु प्रश्न-पत्र केवल उपर्युक्त कलाकृतियों में से ही तैयार किया जायेगा।

कक्षा-12 (प्रायोगिक)

एक प्रयोगिक प्रश्न पत्र	**समय: 6 घंटे (3+3)**	**पूर्णांक : 60**
इकाईयां		**अंक**
1. प्रकृति तथा वस्तु-अध्ययन		20
2. चित्र संयोजन		20
3. सत्र कार्य		20
	कुल	**60**

इकाई-1 : प्रकृति तथा वस्तु-अध्ययन : **60 पीरियड**

कक्षा 11 में दिये गए अभ्यासों के आधार पर तथा साथ में परदे की पृष्ठभूमि में दो या तीन वस्तुओं का एक निश्चित बिन्दु से पेंसिल माध्यम में प्रकाश व छाया सहित तथा सम्पूर्ण रंगों में अभ्यास।

इकाई-2 : चित्र संयोजन : **60 पीरियड**

जीवन और/या प्रकृति के विषयों पर आधारित काल्पनिक चित्रों का जल-रंगों अथवा पोस्टर-रंगों में, वर्ण-मान संहित निर्माण।

इकाई-3 : सत्र कार्य : **48 पीरियड**

एक पोर्टफोलियो प्रस्तुत करना, जिसमें निम्नलिखित रचनाएं शामिल हों :

(क) सत्र के दौरान तैयार किये गए तथा किसी भी माध्यम में प्रकृति तथा वस्तु-अध्ययन के पांच चयन किये गए अभ्यास जिनमें कम से कम दो स्थिर-जीवन वस्तुओं के अभ्यास हों। 10

(ख) वर्ष के दौरान परीक्षार्थी द्वारा तैयार किये चित्र/संयोजनों में से चयन किये गए दो चित्र संयोजन।

परीक्षार्थी द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान निर्मित तथा इन चयन की गई कृतियों को विद्यालय के प्राधिकारियों द्वारा यह प्रमाणित कराके कि इन्हें विद्यालय में ही निर्मित किया गया है, मूल्यांकन के लिए परीक्षकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए।

टिप्पणी : समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो पीरियड तक एक साथ निरंतर कार्य करने का अवसर मिल सके।

प्रायोगिक परीक्षा के मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश

1. **अंक योजना :**

भाग I : प्रकृति तथा वस्तु अध्ययन

(i) रेखांकन (संयोजन)	10	20 अंक
(ii) माध्यम/रंगों का प्रयोग	05	
(iii) समग्र प्रभाव	5	

भाग II : चित्र संयोजन

(i) संयोजन-व्यवस्था, विषय पर बल सहित	10	20 अंक
(ii) माध्यम (रंगों) का प्रयोग	05	
(iii) मौलिकता और समग्र प्रभाव	5	

भाग III : सत्र कार्य

(i) किसी भी माध्यम में प्रकृति तथा वस्तु-अध्ययन के पांच चयन किये हुए अभ्यास जिनमें कम से कम दो स्थिर जीवन वस्तुओं के अभ्यास हों।	10	20 अंक
(ii) जीवन और प्रकृति पर आधारित तैयार किये गये दो चयनित चित्र संयोजन	10	

टिप्पणी : सत्र कार्यों का मूल्यांकन भी इसी आधार पर किया जाएगा

2. **प्रश्नों का प्रारूप**

भाग-I : प्रकृति तथा वस्तु-अध्ययन :

अपने सामने एक ड्राइंग बोर्ड पर व्यवस्थित एक वस्तु-समूह के स्थिर जीवन का रेखांकन और चित्रण एक स्थिर बिन्दु (जो आपको दिया गया है) से अर्ध-इम्पीरियल आकार वाले एक ड्राइंग-कागज पर पेंसिल अथवा रंगों में कीजिए। आपका चित्र कागज के अनुपातनुसार होना चाहिए। वस्तुओं को प्रकाश-छाया तथा प्रतिच्छाया (परछाई) सहित यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया जाना चाहिए। इस अध्ययन में ड्राइंग बोर्ड को शामिल नहीं करना है।

टिप्पणी : वस्तुओं के समूह का चयन बाह्य और आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से निर्देशानुसार परामर्श करके करना है। प्रकृति तथा वस्तु-अध्ययन की वस्तुओं को परीक्षार्थियों के सम्मुख व्यवस्थित किया जाए।

भाग-II चित्र संयोजन :

आधे इम्पीरियल आकार वाले ड्राइंग-कागज पर क्षैतिज अथवा ऊर्ध्वाधर दिशा में अपनी पसंद के किसी माध्यम (जल/पेस्टल/टेम्परा एकैलिक रंगों) में निम्नलिखित पांच विषयों में से किसी एक पर चित्र संयोजन कीजिए। आपका संयोजन मौलिक तथा प्रभावकारी होना चाहिए। सुव्यवस्थित रेखांकन, माध्यम (रंग आदि) के प्रभावोत्पादक प्रयोग, विषय वस्तु पर यथोचित बल तथा सम्पूर्ण स्थान के सदुपयोग करने को अधिक अंक दिये जाएंगे।

टिप्पणी : चित्र संयोजन के लिए किन्हीं पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण बाह्य तथा आंतरिक परीक्षक निर्देशानुसार संयुक्त रूप से करेंगे और भाग II की परीक्षा के आरंभ होने से ठीक पहले यहां उनका उल्लेख करेंगे।

3. (अ) प्रकृति तथा वस्तु अध्ययन के लिए वस्तुओं का चयन करने के बारे में अनुदेश

1. परीक्षक ऐसी दो या तीन उपयुक्त वस्तुओं का इस ढंग से चयन/निर्धारण करें कि वस्तुओं के इस समूह में प्राकृतिक तथा ज्यामितीय रूपाकार शामिल हो जाएं :

   (i) प्राकृतिक रूप-बड़े आकार के बेलबूटे तथा फूल, फल एवं वनस्पतियां आदि।

   (ii) लकड़ी/प्लास्टि/कागज/धातु/मिट्टी आदि से बने ज्यामितीय रूप, जैसे घन, शंकु, समपार्श्व, बेलनाकार और वर्तुलाकार वस्तुएं।

   (iii) अज्यामितीय रूप, जैसे-घरेलू बर्तन एवं दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएं आदि।

2. सामान्यत: बड़े (उपयुक्त) आकार की वस्तुओं का चयन किया जाना चाहिए।

3. परीक्षा केन्द्र के स्थल ऋतु के अनुसार प्रकृति से संबंधित एक पदार्थ अवश्य शामिल किया जाएं। प्राकृतिक वस्तुओं की खरीद/व्यवस्था परीक्षा वाले दिन ही की जाए ताकि उनकी ताजगी बरकरार रहे।

4. चयन की गई वस्तुओं के रंगों तथा उनकी टोन के अनुरूप पृष्ठभूमि तथा अग्रभूमि के लिए अलग-अलग रंगों के दो कपड़ों को (एक गहरी रंगत में और दूसरा हल्की रंगत में) भी शामिल किया जाए।

(ब) चित्र संयोजन के विषय-निर्धारण के लिए अनुदेश

1. परीक्षकों को चित्र-संयोजन के लिए पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण करना है।

2. प्रत्येक विषय इस प्रकार बनाया जाये कि परीक्षार्थियों को विषय का स्पष्ट बोध हो जाए और वे उनके निर्माण में अपनी कल्पना शक्ति का खुलकर प्रयोग कर सकें, क्योंकि क्या काम किया जा रहा है, यह उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है पर उसे किस प्रकार सम्पन्न किया जा रहा है, यह अधिक महत्त्वपूर्ण है।

3. विषयों का चयन/निर्धारण करने के लिए परीक्षक स्वतंत्र हैं परन्तु ये विषय कक्षा बारहवीं के स्तर और विद्यालय/परीक्षार्थियों के वातावरण के अनुसार होने चाहिए। चित्र-संयोजन के विषयों के कुछ पहचान क्षेत्रों का उल्लेख नीचे किया गया है इनमें आवश्यकतानुसार कुछ अन्य क्षेत्रों का समावेश भी किया जा सकता है :

   (i) परिवार, मित्रों तथा दैनिक जीवन के कार्यकलाप

   (ii) पारिवारिक व्यावसायियों के कार्यकलाप

   (iii) खेल-कूद के कार्यकलाप

   (iv) प्रकृति

   (v) काल्पनिकता

   (vi) राष्ट्रीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाएं एवं समारोह

4. परीक्षकों के लिए सामान्य अनुदेश :

1. परीक्षार्थियों को परीक्षा के प्रथम तीन घंटों के बाद एक घंटे का अवकाश दिया जाएं।
2. भाग I, II तथा III के लिए परीक्षार्थियों के कार्यों का मूल्यांकन बाह्य और आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से परीक्षा स्थल पर ही किया जाना है।
3. भाग I, II तथा III के प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन हो जाने के उपरांत उस पर 'मूल्यांकित' लिखकर बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा विधिवत् हस्ताक्षर करने हैं।

अध्यापकों के लिए प्रस्ताविक कुछ संदर्भ पुस्तकें (प्रायोगिक भाग के लिए) :

1. 'पेन्ट स्टिल लाइफ', क्लोरेट्टा व्हाइट, (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
2. 'आर्ट आर्फ ड्राइंग' ग्रुम्बाचेर लायब्रेरी बुक (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
3. 'ऑन टेक्नीक्स', लिओन फ्रैंक, (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
4. 'मोर ट्रीज', फ्रेड्रिक गार्डनर, (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
5. 'हाउ टु ड्रा एण्ड पेंट टैक्सचर्ज आफ ऐनिमल्ज', वाल्टर जे विल्वेडिंग (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
6. 'हाउ टु ड्रा एण्ड पेंट ऐनिमल्ज', एक्सप्रेश वाल्टर जे विल्वेडिंग (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
7. 'आर्ट आर्फ दि पेन्सिल', बोरो जॉनसन, (सर आइजक पिटमैन एण्ड संज लि. नई दिल्ली)।
8. 'डिजाइन फॉर यू', एथेल जैन बीटलेर, (जॉन विलारी एण्ड सन्ज लि. नई दिल्ली)
9. 'कम्पलीट बुक ऑफ आर्टिस्ट्स टेक्नीक्स', डॉ. कुर्ट हर्बर्ज (थॉमसन एण्ड हड्सन, लंदन)।

(ख) छापा-चित्रकला (कोड सं. 050)

परिचय :

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर एक ऐच्छिक विषय के रूप में छापा-चित्रकला के पाठ्यक्रम का उद्देश्य यह है कि सिंधु घाटी से लेकर वर्तमान काल तक व्याप्त भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में समाहित दृश्यात्मक कला में अभिव्यक्तियों के विभिन्न महत्त्वपूर्ण और जाने-पहचाने पहलुओं तथा रूपों की समझ-बूझ के द्वारा विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक बोध का विकास करना है। इसकी परिधि में छापा-चित्रों के निर्माण के अभ्यास भी शामिल किये गए हैं, जिससे उनकी अवलोकन, कल्पना तथा सृजन की मानसिक शक्तियों के विकास के साथ-साथ उनकी अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक भौतिक तथा तकनीकी कौशलों का भी विकास किया जा सके।

उद्देश्य :

(क) सैद्धान्तिक (भारतीय कला का इतिहास)

टिप्पणी : क्योंकि छापा-चित्रकला (सैद्धान्तिक) का पाठय् क्रम वही है जो चित्रकला (सैद्धान्तिक) का है, अत: इसके उद्देश्य भी वही हैं।

(ख) प्रयोगिक

छापा चित्रकला में प्रायोगिक अभ्यासों को रखने का उद्देश्य विद्यार्थियों की सहायता करना तथा उन्हें इस योग्य बनाना है, जिससे वे प्रिंट-निर्माण तकनीकों की अनेक विधियों तथा यथेष्ट परिणाम लाने के लिए विशिष्ट रूप से निर्धारित सामग्री के प्रयोग द्वारा एक-रंगीय तथा अनेक रंगीय सरल संयाजनों की रचना कर सकें। विद्यार्थियों को छापा-निर्माण की विविध तकनीकों के संक्षिप्त इतिहास से परिचित करवाते हुए विषय से अवगत कराना चाहिए। उन्हें ऐसे अभ्यास दिए जाने चाहिए जिससे वे विभिन्न प्रक्रियाओं में काम आने वाले उपकरणों तथा साज-समान का सम्मान करना सीखें और ठीक प्रकार से उनका प्रयोग तथा रख-रखाव कर सकें।

पाठ्यक्रम की संरचना

कक्षा 11 (सैद्धान्तिक)

एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र	**समय : 2 घंटा**	**पूर्णांक : 40 72 पीरियड**
इकाईयां		**अंक**
भारतीय कला का इतिहास		
1. पूर्व एतिहासिक पाषण कला अथवा सिंधु घाटी की कला		10
2. बौद्ध जैन तथा हिंदू कला		15
3. मंदिर-मूर्तिकला, कांस्य मूर्तियां तथा भारतीय इस्लामिक स्थापत्य के कलात्मक पक्ष		15
	कुल	40

टिप्पणी : ग्यारहवीं कक्षा के छापा-चित्रकला (सैद्धान्तिक) का पाठ्य् क्रम वही है जो कक्षा ग्यारहवीं के चित्रकला (सैद्धान्तिक) के लिए पहले ही दिया जा चुका है।

कक्षा 11 (प्रायोगिक)

प्रायोगिक प्रश्न पत्र	**समयः 6 घंटे (3+3)**	**पूर्णांक : 60**
एक इकाईर्ययां		**अंक**
1. लिनोकट/वुडकट/पेपर कार्डबोर्ड के माध्यम से उभरदार छपाई (रिलीफ प्रिन्टिंग)		40
2. सत्र कार्य		20
	कुल	**60**

इकाई-1 : किसी दिए हुए विषय पर 1/4 इम्पीरियल शीट पर (लिनोकट/वुड कट पेपर कार्ड-बोर्ड से छापा-चित्र (प्रिन्ट) बनाना 120 पीरियड उभारदार छपाई (रिलीफ प्रिटिंग) (लिनोकट/वुडकट/पेपर-कार्ड बोर्ड छापे) का पाठ्यक्रम

1. छापा (प्रिन्ट) बनाने के इतिहास का परिचय।
2. छपाई (प्रिटिंग) की विधियां तथा सामग्री।
3. छपाई में प्रयुक्त (प्रिटिंग) की स्याहियों, उनके घोलकों तथा रंजकों (डायर्स) की विशेषताएं।
4. रजिस्ट्रेशन की विधियां।
5. सरल, रंगीन छपाई की तकनीक
6. छापा-चित्र (प्रिंट) का परिष्करण (फिनीशिंग) तथा उसकी मढ़ाई।

इकाई-2 : सत्र कार्य **(48 पीरियड)**

परीक्षार्थी द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान बनाए गए तथा चयन किये गए इन छापा-चित्रों (लिनोकट/वुडकट/पेपर कार्ड-बोर्ड छापों में से) को विद्यालय के प्राधिकारियों द्वारा यह प्रमाणित करके कि इन्हें विद्यालय में ही बनाया गया है, मूल्यांकन हेतु परीक्षक के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।

टिप्पणी समय सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो पीरियड तक निरंतर कार्य करने का अवसर मिल सके।

पाठ्यक्रम की संरचना

कक्षा-12 (सैद्धान्तिक)

एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र	समय : 2 घंटे	पूर्णांक : 40	72 पीरियड
इकाईयां			**अंक**
भारतीय कला का इतिहास			
1. राजस्थानी एवं पहाड़ी लघुचित्र शैलियां			10
2. मुगल एवं दक्खिनी लघुचित्र शैलियां			10
3. बंगाल चित्रशैली तथा			10
3. भारतीय कला में आधुनिक प्रवशत्तियां			10
		कुल	**40**

टिप्पणी : कक्षा 12 के छापा-चित्रकला (सैद्धान्तिक) का पाठय् क्रम वही है जो कक्षा 12 चित्रकला (सैद्धान्तिक) के लिए पहले ही दिया जा चुका है।

कक्षा-12 (प्रायोगिक)

एक (प्रायोगिक) प्रश्न पत्र	समय : 6 घंटे (3+3)	पूर्णांक 60
इकाईयां		**अंक**
1. सेरिग्राफी/लिथोग्राफी/अम्लांकन तथा उत्कीर्णन (एचिंग) तथा एनग्रेविंग) (इंटेग्लियो प्रविधि) तकनीकों द्वारा छापा-चित्र बनाना		40
2. सत्र कार्य		20
	कुल	**60**

इकाई-1 : विद्यार्थी अपने विद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं के आधार पर निम्नलिखित माध्यमों में से कोई एक को चुनेंगे।।

(क) सेरिग्राफी **(120 पीरियड)**

1. स्टेंसिलों तथा सिल्क स्क्रीन का इतिहास।
2. प्रविधियां तथा सामग्री।
3. रबड़-बेलनों (स्क्वीजी) का प्रयोग तथा रख-रखाव।
4. सीलिंग (Sealing) रंग कार्य करने के लिए रजिस्ट्रेशन, कार्य और छपाई के लिए तैयारी।

5. सफाई के लिए घोलक, छपाई का स्याहियों को प्रयोग तथा उनकी विशेषताएं।

6. छापा-चित्र (प्रिंट) का परिष्करण (फिनीशिंग) तथा उसकी मढ़ाई।

अथवा

(ख) लिथोग्राफी

1. परिचय : संक्षिप्त इतिहास तथा लिथोग्राफीय-प्रिंट (छापा) बनाने में प्रयुक्त प्रविधियां और सामग्री।

2. लिथो पत्थर/जिंक प्लेट्स का प्रयोग तथा उनकी विशेषताएं

3. लिथोग्राफीय-चाकों तथा स्याही (टस्क) का प्रयोग।

4. छपाई के लिए तैयारी करना और विभिन्न रासायनिक स्याहियों का प्रयोग, स्याही लगाना तथा फ्रू लेना।

5. लिथोग्राफी में प्रयुक्त कागज और अंतिम छापा-चित्र (फाइनल प्रिन्ट) निकालना।

6. छापा-चित्र (प्रिंट) का परिष्करण (फिनीशिंग) तथा उसकी मढ़ाई।

अथवा

(ग) अम्लांकन तथा उत्कीर्णन (एचिंग तथा एनग्रेविंग) (इंटेग्लिया प्रविधि)

1. इंटेग्लियो तकनीक का परिचय, संक्षिप्त इतिहास, विधियां तथा सामग्री, अम्लांकन (एचिंग) प्रैस।

2. प्लेट तैयार करना और भूमि-बंधन करना (रजिस्ट) तथा स्याही देना (इंकिंग)।

3. विभिन्न प्रकार के पृष्ठों/सतहों (ग्राउण्डस) की विशेषताएं।

4. विभिन्न अम्लों की विशेषताएं तथा उनके प्रयोग।

5. रंग-अम्लांकन (कलर एचिंग) स्टेन्सिलों तथा मार्कों का प्रयोग।

6. छापा-चित्र (प्रिंट) का परिष्करण (फिनीशिंग) तथा उसकी मढ़ाई।

इकाई-2 : सत्र कार्य **48 पीरियड**

परीक्षार्थी द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान बनाए गए एवं चयनित तीन छापा-चित्रों (प्रिंटों) को विद्यालय के प्राधिकारियों द्वारा प्रमाणित करके कि इन्हें विद्यालय में ही बनाया गया है, परीक्षकों के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत किया जाए।

टिप्पणी : समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो पीरियड तक निरतंर कार्य करने का अवसर मिल सकें।

प्रायोगिक मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश

1. **अंक योजना :**

भाग-I : ग्राफिक-संयोजन (प्रिंट बनाना)

(i) विषय पर बल	10	
(ii) प्रिंट बनाने की सामग्री तथा तकनीक का प्रयोग	10	40 अंक
(iii) प्रिंट तथा संयोजन की गुणवत्ता	20	

भाग-II : सत्र कार्य

तीन चयन किये गए छापा-चित्र (प्रिंट्स) (7+7+6 अंक, तीन प्रिंटों के लिए) 20 अंक

टिप्पणी : सत्र कार्य का मूल्यांकन भी इसी प्रकार किया जाएगा।

2. **प्रश्नों का प्रारूप :**

भाग-I : ग्राफिक-संयोजन (प्रिंट बनाना)

(i) प्रिंट बनाने का एक माध्यम चुनें जो आपके विद्यालय में उपलब्ध हो और सिखाया गया हो, यथा सेरिग्राफी, लिथोग्रफी, अम्लांकन एवं उत्कीर्णन (एचिंग तथा एनग्रेविंग)।

(ii) माध्यम की संभाव्यता तथा उपयुक्तता के अनुसार निम्नलिखित पांच विषयों में से किसी एक पर ग्राफिक-संयोजन का निर्माण करें

टिप्पणी : ग्राफिक-संयोजन (प्रिंट बनाने) के लिए किन्हीं पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण बाह्यय तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से परामर्श करके और निर्देशानुसार यहां करना है।

ग्राफिक-संयोजन प्रत्यक्षीकरण के लिए माध्यम का पूरी तरह से उपयोग करते हुए रेखा, टोन तथा टैक्सचर का प्रयोग करें। अपने संयोजन को एक या दो रंगों में छापें।

छापा-चित्र (प्रिंट) की गुणवत्ता तथा स्वच्छता पर विशेष ध्यान दीजिए। अंतिम प्रस्तुति के रूप में अपने सभी कच्चे खाकों सहित एक जैसे दो छापा-चित्र (प्रिंटस) प्रस्तुत करें।

प्लेट का आकार

(i) सेरिग्राफी	:	30 से.मी. × 20 से.मी.
(ii) लिथोग्राफी	:	30 से.मी. × 20 से.मी.
(iii) अम्बलांकन (एचिंग एवं एनग्रेविंग) एवं उत्कीर्णन	:	30 से.मी. × 20 से.मी.

3. **ग्राफिक-संयोजन (प्रिंट बनाने) के विषय-निर्धारण के लिए अनुदेश :**

1. ग्राफिक-संयोजन (प्रिंट बनाने) के लिए उपयुक्त पांच विषयों का निर्धारण बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों को संयुक्त रूप से करना है।

2. प्रत्येक विषय की रचना इस प्रकार की जाए कि परीक्षार्थी को विषय का स्पष्ट बोध हो जाए। तथापि कोई भी परीक्षार्थी विषय को अपने दृष्टिकोण से देख/समझ सकता/सकती है किंतु संयोजन में ग्राफीय गुणवत्ता का निर्वाह अवश्य किया जाना चाहिए।

3. परीक्षक विषयों का चयन/निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र हैं किंतु ये कक्षा बारहवीं के स्तर और विद्यालय/परीक्षार्थियों के वातावरण के अनुसार होने चाहिए।

   ग्राफिक संयोजन (प्रिंट बनाने) के लिए विषयों के कुछ पहचान क्षेत्रों का उल्लेख नीचे किया गया है इनमें आवश्यकतानुसार कुछ अन्य क्षेत्रों का समावेश भी किया जा सकता है :

   (i) परिवार, मित्रों तथा दैनिक जीवन के कार्य

   (ii) व्यवसायिकों के कार्य

   (iii) खेल-कूद के कार्यकलाप

   (iv) प्रकृति

   (v) काल्पनिकता

   (vi) राष्ट्रीय, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक घटनाएं एवं समारोह

   (vii) विचार-निजी, सामाजिक, स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय

4. परीक्षकों के लिए अनुदेश :

1. परीक्षार्थियों, को परीक्षा के प्रथम तीन घंटे के बाद एक घंटे का अवकाश दिया जाए।
2. भाग I और II के लिए परीक्षार्थियों के कार्यों का मूल्यांकन बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से परीक्षा स्थल पर ही किया जाना है।
3. भाग I तथा II के प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन हो जाने के उपरांत उस पर 'मूल्यांकित' लिखकर बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा विधिवत् हस्ताक्षर करने हैं।

अध्यापकों के लिए प्रस्तावित कुछ संदर्भ पुस्तकें (प्रायोगिक भाग के लिए)

1. 'द टैक्नीक ऑफ ग्राफिक आर्ट' एच.वान, क्रुइहिन्जेन।
2. 'प्रिंट मेकिंग', हार्वे डेनियल्ज (हैमलीम)।
3. 'आर्ट मेनुअल फॉर सिल्क स्क्रीन प्रिंट मेंकिंग' हैवी शॉक्लेर।
4. 'प्रिंट मेंकिंग टु डे' ज्यूलेस हेल्लेस।
5. 'सिल्क स्क्रीन टैक्नीक्स' जे. आई. बीज लीसन, डॉवर पब्लिकेशन, न्यूयार्क।

6. ‘इन्ट्रोड्यूसिंग स्क्रीन प्रिंटिग’, एन्थोनी किन्जे वालसन ग्रुपलिल, न्यूयार्क।

7. ‘दि आर्ट एण्ड काफ्ट ऑफ स्क्रीन प्रोसेस प्रिंटिग’ कॉसलॉफ, ऑल द ब्रूस पब्लिशिंग कं. न्यूयार्क।

8. ‘प्रेक्टिकल स्क्रीन प्रिंटिंग, स्टीफेंस रस स्टूडियों विस्टा, वालसन ऑप्टिल न्यूयार्क।

9. ‘आर्टिस्ट्स मेनुअल फॉर सिल्क स्क्रीन प्रिंट मेकिंग’ हैरी शेक्लेर, अमेरिकन आर्टिस्ट्स ग्रुप, न्यूयार्क।

10. ‘लिथोग्राफी’, वाउ नास्ट्राव, रीनोल्ड।

11. ‘लिथोग्रफी फार आर्टिस्ट्स’, स्टैंडले लोउएस, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

12. ‘लिनोकट्स एण्ड वुडकट्स’, माइकेल रोथेम्स्टीन, स्टूडियो विस्टा, लंदन।

13. रिलीफ प्रिंटिंग, माइकेल रोथेन्स्टीन, स्टूडियों विस्टा, लंदन।

14. ‘एचिंग, एन्ग्रेविंग एण्ड इन्टैग्लियो प्रिंटिंग’, ऐन्थोनी ग्रॉस, ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।

15. ‘दि आर्ट ऑफ एचिंग’, ई.एस. सुमादेन, गाउसलेबल, लन्दन।

(ग) मूर्तिकला (कोड सं. 051)

परिचय :

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर एक ऐच्छिक विषय के रूप में मूर्तिकला के पाठ्यक्रम का उद्देश्य यह है कि सिंधु-घाटी के काल से लेकर वर्तमान काल तक व्याप्त भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में समाहित दृश्यात्मक कला-अभिव्यक्तियों के विभिन्न महत्त्वपूर्ण और जाने-माने पहलुओं तथा रूपों के प्रकारों (विधाओं) की समझ-बूझ के द्वारा विद्यार्थियों के सौन्दर्यात्मक बोध को विकसित किया जाए। इसकी परिधि में मूर्ति-शिल्पों के निर्माण के विभिन्न प्रकार के प्रयोगात्मक अभ्यास भी शामिल किये गए हैं जिससे विद्यार्थियों की अवलोकन, कल्पना तथा सृजन की मानसिक शक्तियों के विकास के साथ-साथ उनकी अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक भौतिक और तकनीकी कौशलों का भी विकास किया जा सके।

उद्देश्य :

(क) सैद्धान्तिक (भारतीय कला का इतिहास)

टिप्पणी : क्योंकि मूर्तिकला (सैद्धान्तिक) का पाठय् क्रम वही है जो चित्रकला (सैद्धान्तिक) का है अत: इसको उद्देश्य भी वही हैं।

(ख) प्रयोगिक

मूर्तिकला में प्रायोगिक अभ्यास शामिल करने का उद्देश्य विद्यार्थियों की सहायता करना तथा उन्हें इस योग्य बनाना है, जिससे वे मूर्ति-शिल्पों का निर्माण कर सकें। उनको बनाने के लिए जो काम दिए जाएं, वे इस प्रकार के हों कि उन्हें चपटे तथा द्वि-आयामी धरातल पर बनाने के साथ-साथ (स्थान) के आयतन, भार बनी हुई जगह में आकारों आदि की समस्याओं की समझ आ सके। उपलब्ध सुविधाओं के अनुसार पर्याप्त तकनीकी कुशलताएं उसे उपलब्ध कराई जाएं।

पाठ्यक्रम की संरचना

कक्षा 11 (सैद्धान्तिक)

एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र	समय: 2 घंटे	पूर्णांक 40	72 पीरियड
इकाईयां			**अंक**
भारतीय कला का इतिहास			
1. पूर्व एतिहासिक पाषाण कला अथवा सिंधु घाटी की कला			10
2. बोद्ध, जैन तथा हिंदू, कला			15
3. मंदिर-मूर्ति कला, कांस्य मूर्तियां तथा भारतीय इस्लामिक स्थापत्य के कलात्मक पक्ष			15
		कुल	40

टिप्पणी : कक्षा 11 के लिए मूर्तिकला (सैद्धान्तिक) का पाठयक्रम वही है जो कक्षा 11वीं चित्रकला (सैद्धान्तिक) के लिए पहले ही दिया जा चुका है।

कक्षा-11 (प्रायोगिक)

एक प्रायोगिक प्रश्न पत्र समय : 6 घंटे (3+3)	पूर्णांक : 60
इकाईयां	**अंक**
1. उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण (मॉडलिंग इन रिलीफ), मिट्टी तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस में	20
2. सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण (मॉडलिंग इन राउण्ड) मिट्टी तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस में	20
3. सत्र कार्य	20
कुल	**60**

इकाई-1 : जीवन तथा प्रकृति के विषयों पर उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण (रिलीफ मैं) **60 पीरियड**

इकाई-2 : जीवन तथा प्रकृति के विषयों पर सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण (राउण्ड में) **60 पीरियड**

मिट्टी का प्रबन्ध/संचालन तथा इसे प्रयोग में लाने की विभिन्न तकनीकें-खुरचना, बत्तियां बनाना (कॉयलिंग) तथा लपेटना (रोलिंग) आदि।

इकाई-3 : सत्र कार्य **48 पीरियड**

परीक्षार्थी द्वारा पाठ्यक्रम के दौरान निर्मित कृतियों में से चयनित कृतियों को, विद्यालय के प्राधिकारियों द्वारा यह प्रमाणित करके कि उन्हें विद्यालय में ही बनाया गया है, परीक्षकों के समक्ष मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत किया जाए।

टिप्पणी : समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो पीरियड निरंतर कार्य करने का अवसर मिल सके।

पाठ्यक्रम की संरचना

कक्षा 12 (सैद्धान्तिक)

एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र	समय : 2 घंटे	पूर्णांक : 40	72 पीरियड
इकाईयां			**अंक**
भारतीय कला का इतिहास			
1. राजस्थानी एवं पहाड़ी लघुचित्र शैलियां			10
2. मुगल एवं दक्खिनी लघुचित्र शैलियां			10
3. बंगाल चित्रशैली			10
4. भारतीय कला में आधुनिक प्रवशत्तियां			10
		कुल	**40**

टिप्पणी : कक्षा XII के मूर्तिकला (सैद्धान्तिक) का पाठय् क्रम वही है जो कक्षा 12वीं के चित्रकला (सैद्धान्तिक)के लिए पहले ही दिया जा चुका है।

कक्षा 12 (प्रायोगिक)

एक प्रायोगिक प्रश्न पत्र	समय : 6 घंटे (3+3)	पूर्णांक : 60
इकाईयां		**अंक**
1. उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण (मॉडलिंग इन रिलीफ) मिट्टी तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस में		20
2. सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण (मॉडलिंग इन राउण्ड) मिट्टी तथा प्लास्टर ऑफ पेरिस में		20
3. सत्र कार्य		20
	कुल	**60**

इकाई-1 : उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण — **60 पीरियड**

इकाई-2 : सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण — **60 पीरियड**

इकाई-3 : सत्र कार्य — **48 पीरयिड**

पाठ्यक्रम के दौरान परीक्षार्थी द्वारा निर्मित कृतियों में से चयन की गई चार कृतियों को विद्यालय के प्राधिकारियों द्वारा प्रमाणित करके कि इन्हें विद्यालय में ही निर्मित किया गया है, मूल्यांकन के लिए परीक्षकों के समक्ष प्रस्तुत किया जाए।

- भट्टी में पकाने के लिए मिट्टी के खोखले संयोजनों का प्रयोग
- उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण तथा सम्पूर्ण (गोलकार) मूर्ति-प्रतिरूपण में मानवों, पक्षियों, पशुओं तथा पौधों की सरल आकृतियां तैयार करना।
- घन, शंकु, बेलन आदि ज्यामितीय आकारों और उनके उभारदार-संयोजनों की टैक्सचर में आलेखन अध्ययन के अभ्यास के रूप में रचना करना। प्लास्टर ऑफ पेरिस का प्रयोग।

टिप्पणी : समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो पीरियड निरतंर कार्य करने का अवसर मिल सके।

प्रायोगिक मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश

1. **अंक योजना :**

भाग-I : उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण

(i) विषय पर बल सहित मूर्ति-संयोजन	10	20 अंक
(ii) माध्यम का प्रयोग	05	
(iii) सृजनात्मक दृष्टिकोण तथा समग्र प्रभाव	5	

भाग-II : सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण

(i) विषय पर बल सहित मूर्ति-संयोजन	10	20 अंक
(ii) माध्यम का प्रयोग	05	
(iii) सृजनात्मक दृष्टिकोण तथा समग्र प्रभाव	5	

भाग-III : सत्र कार्य

मूर्तिकल की निम्नलिखित चार कृतियां, जिनमें से :

(क) (i) एक उभारदार मूर्ति (उच्च उभारदार)	5	20 अंक
(ii) एक उभारदार मूर्ति (कम निम्न)	5	
(ख) दो सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्तियां	10	

टिप्पणी : सत्र कार्य का मूल्याकंन भी इसी प्रकार किया जाएगा।

2. **प्रश्नों का प्रारूप**

भाग-I : उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण (मॉडलिंग इन रिलीफ) :

निम्नलिखित पांच विषयों में से किसी एक पर एक उभारदार (उच्च/निम्न) मूर्ति-शिल्प बनाइए। इसका आकार 25 से 30 से.मी. (क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर) के भीतर हो तथा मोटाई बोर्ड से लगभग 4 से.मी. होनी चाहिए।

टिप्पणी : 'उभारदार मूर्त प्रतिरूपण' के लिए किन्हीं पांच उपयक्त विषयों का निर्धारण बाह्य तथा आतंरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से परामर्श करके और निर्देशानुसार करना है और उनका उल्लेख यहां करना है।

भाग-II : सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण (मॉडलिंग इन राउण्ड) :

निम्नलिखित पांच विषयों में से किसी एक पर मिट्टी-माध्यम में एक सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-शिल्प बनाएं। क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर ऊंचाई 25 से 30 से.मी. के भीतर हो।

टिप्पणी : 'सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण' के लिए किन्हीं पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण/

निर्देशानुसार संयुक्त रूप से बाह्य तथा आंतरिक परीक्षक करेंगे, और भाग-II के लिए परीक्षा आरंभ होने से ठीक पहले यहां उनका उल्लेख करेंगे।

3. उभारदार तथा सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण के विषयों का निर्धारण करने के संबंध में अनुदेश :

1. दोनों परीक्षकों को 'उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण' के लिए पांच उपयुक्त विषयों का और 'सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण' के लिए पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण करना है। 'सम्पूर्ण (गोलाकार) मूर्ति-प्रतिरूपण' के लिए विषयों की सूचना परीक्षार्थियों को भाग-II की परीक्षा आरंभ होने से ठीक पहले ही दी जाए।

2. प्रत्येक विषय की रचना इस प्रकार की जाए कि परीक्षार्थी को विषय का स्पष्ट बोध हो जाए। तथापि कोई भी परीक्षार्थी विषय को अपने दश्ष्टिकोण से देख/समझ सकता/सकती है। मानव/पशु के रूपों में विरूपण (डिस्टॉर्शन)/लचीलापन लाने की अनुमति दी जाए।

3. उच्च या निम्न उभारदार मूर्तिप्रतिरूपण का विकल्प परीक्षार्थियों के लिए खुला छोड़ दिया जाए।

4. परीक्षक विषयों का निर्धारण करने के लिए स्वतंत्र हैं किंतु ये कक्षा 12वीं के स्तर और विद्यालय/परीक्षार्थियों के वातावरण के अनुसार होने चाहिए।

   उभारदार मूर्ति-प्रतिरूपण (मॉडलिंग इन रिलीफ) के लिए विषयों के कुछ पहचान क्षेत्रों का उल्लेख नीचे किया गया है, इनमें आवश्यकतानुसार कुछ अन्य क्षेत्रों का समावेश भी किया जा सकता है :

   (i) प्रकृति अध्ययन

   (ii) आलेखन (डिजाइन) प्राकृतिक, अलंकारिक, शैलीकृत तथा ज्यामितीय

   (iii) परिवार, मित्र तथा दैनिक जीवन

   (iv) पशु तथा पक्षी,

   (vi) खेल-कूद के कार्यकलाप,

   (vi) धार्मिक, सामाजिक तथा निजी गतिविधियां,

   (vii) सांस्कशतिक कार्यकलाप,

   (viii) विचार-निजी, सामाजिक, स्थानीय, प्रांतीय, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय।

4. परीक्षकों के लिए सामान्य अनुदेश :

1. परीक्षार्थियों को परीक्षा के पहले तीन घंटे के बाद एक घंटे का अवकाश दिया जाए।
2. भाग-I, II तथा III के लिए परीक्षार्थियों के कार्यों का मूल्यांकन बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से परीक्षा-स्थल पर ही किया जाना है।
3. भाग I, II तथा III के प्रत्येक कार्य का मूल्यांकन हो जाने के उपरांत उस पर 'मूल्यांकित' लिख कर बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से विधिवत् हस्ताक्षर करने हैं।

अध्यापकों के लिए प्रस्तावित कुछ संदर्भ पुस्तकें (प्रायोगिक भाग के लिए)

1. 'इंडियन स्कल्पचर' चिन्तामणि कार।
2. 'ऐक्सप्लोरिंग स्कल्पचर', जॉन एमडेल, मिल्स एण्ड बून, लंदन।
3. 'द टैक्नीक आर्फ स्कल्पचर', जॉन डब्ल्यू, मिल्स, पी.टी0 पैट्सफोर्ड लि. लंदन।
4. 'स्कल्पचर ऑफ द वर्ल्ड ए हिस्टॅरी शेल्डेन सीनीय, थेम्स एण्ड हडसन, लंदन।
5. 'फॉर्म एण्ड स्पेस', एडवर्ड थेयर, थेम्स एण्ड हडसन, लंदन।
6. 'स्कल्पचर एण्ड आइडियाज', माइकेल एफ ऐंड्रयूज।
7. 'मॉडर्न स्कल्पचर', जीन शेल्ज, हीनमेन, लंदन।
8. 'क्रिएटिव कार्विंग' (मैटीरियल टैक्नीक्स ऐप्रिसिएशन), डोन्स जेड, मेइलाख, प्रीतम पब्लिशिंग।

(घ) अनुप्रयुक्त कला (व्यावसायिक कला) (कोड सं. 052)

परिचय :

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर एक ऐच्छिक विषय के रूप में अनुप्रयुक्त कला (व्यावसायिक कला) के पाठ्यक्रम का उद्देश्य यह है कि सिंधु घाटी के काल से लेकर वर्तमान काल तक व्याप्त भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में समाहित दृश्यात्मक कला अभिव्यक्तियों के विभिन्न महत्त्वपूर्ण और जाने-माने पहलुओं तथा रूपों के प्रकारों (विधाओं) की समझ-बूझ द्वारा विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक बोध को विकसित किया जाए। इसकी परिधि में व्यावसायिक कला के विभिन्न प्रकार के प्रयोगात्मक अभ्यास भी शामिल किये गए हैं, जिससे विद्यार्थियों की अवलोकन, कल्पना तथा सृजन की मानसिक शक्तियों के विकास के साथ-साथ उनकी अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक भौतिक और तकनीकी कौशलों का भी विकास किया जा सकें।

उद्देश्य :

(क) सैद्धान्तिक (भारतीय कला का इतिहास)

टिप्पणी : अनुप्रयुक्त कला (व्यावसायिक कला) सैद्धान्तिक का पाठय् क्रम वही है जो चित्रकला (सैद्धान्तिक) का है, अत: इसके उद्देश्य भी वही हैं।

(ख) प्रायोगिक

अनुप्रयुक्त कला (व्यावसायिक कला) में प्रायोगिक अभ्यास शामिल करने का उद्देश्य विद्यार्थियों की सहायता करना तथा उन्हें इस योग्य बनाना है कि वे वस्तु-चित्रण, अक्षरांकन, खाकाचित्र, चित्रांकन (इलस्ट्रेशन) तैयार करने तथा पोस्टर बनाने में व्यावसायिक क्षमता का विकास कर सकें जिससे वे अपने जीवन को उत्पादकता के साथ जोड़ सकें।

पाठ्यक्रम की संरचना

कक्षा 11 (सैद्धान्तिक)

एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र	समय: 2 घंटा	पूर्णांक : 40	72 पीरियड
इकाइयां			**अंक**
भारतीय कला का इतिहास			
1. सिंधु घाटी की कला			10
2. बौद्ध, जैन तथा हिंदू कला			15
3. मंदिर मूर्ति कला, कांस्य मूर्तियां तथा भारतीय- इस्लामिक स्थापत्य के कलात्मक पक्ष			15
		कुल	**40**

टिप्पणी : कक्षा 11वीं के लिए अनुपयुक्ता कला (व्यावसायिक कला) (सैद्धान्तिक) का पाठय् क्रम वही है जो कक्षा 11वीं चित्रकला (सैद्धान्तिक) के लिए पहले ही दिया जा चुका है।

कक्षा 11 (प्रायोगिक)

एक प्रायोगिक प्रश्न पत्र	**समय : 6 घंटे (3+3)**	**पूर्णांक : 60**
इकाईयां		**अंक**
1. रेखांकन		20
2. अक्षरांकन तथा खाका (लेआउट) बनाना		20
3. सत्र कार्य		20
	कुल	**60**

इकाई-1 : रेखांकन **60 पीरियड**

स्थिर जीवन तथा प्रकृति से रेखांकन (माध्यम पेंसिल, एक-रंगीय/बहु-रंगीय)

इकाई-2 : (क) अक्षरांकन

(i) रोमन तथा देवनागरी लिपियों के अक्षरांकन का अध्ययन

(ii) कुछ टाइप-फैसों और उनके आकारों की पहचान।

(ख) खाका (लेआउट) बनाना

मुख्य घटक के रूप में अक्षरांकन को लेकर खाके बनाना।

इकाई-3 : **सत्र कार्य**

एक पोर्टफोलियों प्रस्तुत करना जिसमें निम्नलिखित रचनाएं शामिल हों : 48 पीरियड

(क) वर्ष के दौरान किसी भी माध्यम में बनाये गए रेखांकनों चित्रों में से पांच चयन किये रेखांकन जिसमें कम से कम तीन सजीव वस्तुओं के हों। 10

(ख) वर्ष के दौरान चुने हुए विषयों पर तैयार की गई कलाकृतियों में से दो उत्कृष्ट कृतियां। 10

टिप्पणी : समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो पीरियड तक निरतंर कार्य करने का अवसर मिल सके।

पाठ्यक्रम की संरचना

कक्षा 12 (सैद्धान्तिक)

एक सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र	समयः 2 घंटा	पूर्णांक : 40	72 पीरियड
इकाईयां			**अंक**
भारतीय कला का इतिहास			
1. राजस्थानी एवं पहाड़ी लघुचित्र शैलियां			10
2. मुगल एवं दक्खिनी लघुचित्र शैलियां			10
3. बंगाल चित्रशैली तथा			10
4. भारतीय कला में आधुनिक प्रवशत्तियां			10
		कुल	**40**

टिप्पणी : कक्षा 12 के अनुप्रयुक्ता कला (व्यावसायिक कला) (सैद्धान्तिक) का पाठयक्रम वही है जो कक्षा 12वी के पेंटिंग (सैद्धान्तिक) के लिए पहले ही दिया जा चुका है।

कक्षा XII

एक प्रायोगिक प्रश्न पत्र	समयः 6 घंटे (3+3)		पूर्णांक : 60
इकाईयां			**अंक**
1. चित्रांकन (इलस्ट्रेशन)		20	
2. पोस्टर			20
3. सत्र कार्य			20
		कुल	**60**

इकाई-1 : चित्रांकन **60 पीरियड**

दिए हुए विषयों पर और सामान्य स्थितियों पर चित्रांकन (इलस्ट्रेशन) की तकनीकों का अध्ययन जो जीवन तथा घर से बाहर किये गए रेखांकनों पर आधारित हों। ये छपाई के लिए उपयुक्त विभिन्न माध्यमों में तैयार किये गए हों।

इकाई-2 : पोस्टर **60 पीरियड**

किसी दिए हुए विषय पर विनिर्दिष्ट आंकड़ों/जानकारी तथा नारे (प्रचार-वाक्य) के साथ दो या चार रंगों में पोस्टर बनाना।

इकाई-3 : सत्र कार्य **48 पीरियड**

एक पोर्टफोलियो प्रस्तुत करना जिसमें निम्नलिखित रचनाएं शामिल हों :

(i)	किसी भी माध्यम में किए गए पांच चयन किये गए रेखांकन चित्र जिनमें कम से कम दो चित्रांकन (इलस्ट्रेशन) हों	10	20 अंक
(ii)	चुने हुए विषयों पर दो चयन किये गए पोस्टर	10	

टिप्पणी : समय-सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो पीरियड तक निरतंर कार्य करने का अवसर मिल सके।

प्रायोगिक परीक्षा के मूल्यांकन के लिए दिशानिर्देश

1. अंक योजना

भाग-I : चित्राकंन (इलस्ट्रेशन)

(i) संयोजन, रेखांकन की गुणवत्ता सहित	10	20 अंक
(ii) किसी विशिष्ट स्थिति के साथ विषय पर बल	05	
(iii) आवश्यक गुणवत्ता तथा समग्र प्रभाव	5	

भाग-II : पोस्टर

(i) खाका (ले आउट) तथा अक्षरांकन	10	20 अंक
(ii) विषय पर बल	05	
(iii) उपयुक्त रंग-योजना तथा समग्र प्रभाव	05	

भाग-III : सत्र कार्य

(i) किसी भी माध्यम में पांच चयन किये गए रेखांकन, चित्र जिनमें कम से कम दो चित्रांकन हों।	10	20 अंक
(ii) चुने हुए विषयों पर दो चयन किये गए पोस्टर	10	

टिप्पणी : सत्र कार्य का मूल्यांकन भी इसी प्रकार किया जाएगा।

2. **प्रश्नों का प्रारूप**

भाग-I : चित्रांकन (इलस्ट्रेशन)

विशिष्ट स्थिति के साथ निम्नलिखित पांच विषयों में से किसी एक पर किसी भी रंग-माध्यम में एक श्वेत-श्याम (सफेद-काला) चित्रांकन (इलस्ट्रेशन) कीजिए। आकार : 30 सेमी. × 22 सेमीटिप्पणी : 'चित्राकंन' के लिए किन्हीं पांच उपयकुत विषयों का चयन/निर्धारण बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से परामर्श करके और निर्देशानुसार करना है और उनका उल्लेख यहां करना है।

भाग-I : पोस्टर

निम्नलिखित पांच विषयों में से किसी एक पर अंग्रेजी/हिन्दी भाषा में विशिष्ट आंकड़ों (जानकारी) तथा नारे के साथ एक पोस्टर-आलेखन तीन सपाट रंगों में बनाइए। पोस्टर के आलेखन में टाइपोग्रफी तथा चित्रांकन (इलस्ट्रेशन) का संतुलित प्रयोग किया जाए।

पोस्टर-आलेखन का आकार : अर्द्ध-इम्पीरियल

टिप्पणी : पोस्टर-आलेखन के लिए उपयुक्त पांच विषयों का चयन/निर्धारण बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से मिलकर निर्देशानुसार किया जाए और भाग-II की परीक्षा शुरू होने से ठीक पहले उनका उल्लेख यहां कर दिया जाए।

3. **(क) चित्रांकन (इलस्ट्रेशन) के लिए विषयों के निर्धारण के लिए अनुदेश**

1. परीक्षकों को पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण करना है।

2. प्रत्येक विषय के साथ एक विशिष्ट स्थिति दी जाए, जो कि चित्रांकन (इलस्ट्रेशन) की मुख्य विशेषता होती है।

3. प्रत्येक विषय की रचना इस प्रकार की जाए कि परीक्षार्थियों को विषय का स्पष्ट बोध हो जाए और वह दिए हुए विषय क्षेत्र पर आधारित विशिष्ट स्थिति का चित्रांकन कर सके।

4. परीक्षक विषयों का निर्णय करने के लिए स्वतंत्र हैं, किंतु वे कक्षा 12वीं के स्तर और विद्यालय/परीक्षार्थियों के वातावरण के अनुरूप हों। चित्रांकन के लिए विषयों के कुछ प्रस्तावित क्षेत्र नीचे दिए गए हैं आवश्यकतानुसार इनमें कुछ अन्य क्षेत्रों को भी शामिल किया जा सकता है।

   विशिष्ट स्थिति के साथ विषय :

   (i) परिवार, मित्र तथा दैनिक जीवन

   (ii) व्यवसायिक

   (iii) खेल कूद के कार्यकलाप

   (iv) प्रकृति

   (v) राष्ट्रीय घटनाएं तथा समारोह

(vi) धार्मिक घटनाएं तथा त्यौहार

(vii) संस्कृति-नृत्य नाटक, संगीत तथा कला

(ख) पोस्टर-आलेखन के लिए विषयों का चयन/निर्धारण करने के लिए अनुदेश

1. परीक्षकों को पोस्टर-आलेखन के लिए पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण करना है।
2. प्रत्येक विषय के लिए विशिष्ट आंकड़े (जानकारी) तथा एक नारा/प्रचार वाक्य दिया जाए।
3. जानकारी तथा नारे/प्रचार वाक्य की रचना इस प्रकार की जाए जिससे परीक्षार्थियों को विषय का स्पष्ट बोध हो जाए।
4. परीक्षक विषयों की जानकारी तथा नारा कक्षा 12वीं के स्तर और विद्यालय/परीक्षार्थियों के वातावरण के अनुरूप ही दें।

पोस्टर-आलेखन के लिए कुछ प्रस्तावित क्षेत्र नीचे दिए गए हैं इनमें कुछ अन्य क्षेत्र/विषय शामिल किए जा सकते हैं :

विज्ञापन के लिए विषय-क्षेत्र :

(i) भ्रमण/पर्यटन

(ii) सांस्कृतिक कार्यकलाप

(iii) समुदाय तथा प्रकृति का विकास

(iv) विचार-सामाजिक, राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय

(v) व्यावसायिक वस्तुएं

4. परीक्षकों के लिए अनुदेश

1. परीक्षार्थियों को पहले तीन घंटे के बाद एक घंटे का अवकाश दिया जाये।
2. भाग I, II तथा III के लिए परीक्षार्थियों के कार्यों का मूल्यांकन बाह्य तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से परीक्षा-स्थल पर ही किया जाए।
3. भाग I, II तथा III के प्रत्येक कार्य के मूल्यांकन के उपरांत उस पर 'मूल्यांकित' लिख दिया जाए और बाह्य? तथा आंतरिक परीक्षकों द्वारा विधिवत् हस्ताक्षर कर दिए जाएं।

अध्यापकों के लिए प्रस्तावित कुछ संदर्भ पुस्तकें (प्रायोगिक भाग के लिए) :

1. टाइपोलोग जी.एम. रेग, मुंबई
2. कलात्मक लिखाई', डी.ए.वी.पी. नई दिल्ली।
3. 'फिंगर पेंटिंग इन वाटर कलर', चार्ल्स रीडवाटसन गुप्टिल पब्लिकेशन।

4. 'ऑब्जेक्टिव ड्राइंग', वाल्टर टी. फॉस्टर।

5. 'ह्यूमन फिगर', वाल्टर टी. फॉस्टर।

6. 'हैड स्टडी', वाल्टर टी. फॉस्टर।

7. 'ऐनिमल स्टडी' वाल्टर टी. फॉस्टर।

8. 'लैंडस्कैप' वाल्टर टी. फॉस्टर।

9. 'ऐप्लाइड आर्ट हैंडबुक', जी.एम. रेग, मुंबई।

चित्रकला छापा-चित्रकला, मूर्तिकला तथा अनुप्रयुक्त कला के सैद्धान्तिक भाग के लिए कुछ संदर्भ पुस्तकें :

1. **भारत की चित्रकला**, रायकृष्णदास, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद (उ.प्र.)

2. **नवीन भारतीय चित्रकला शिक्षण पद्धति,** प्रो. रामचन्द्र शकुल, किताब महल (प्रा.) लि., इलाहाबाद, (उ.प्र.)

3. **भारतीय चित्रांकन,** डॉ. रामकुमार विश्वकर्मा बिशनलाल भागर्व एण्ड संज, कटरा, इलाहाबाद (उ.प्र.)

4. **भारतीय चित्रकला का इतिहास**, डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, (उ.प्र.)

5. **भारतीय कला और कलाकार**, ई. कमुारिल स्वामी, प्रकाशन विभाग, सचूना और प्रसारण मत्रांलय, भारत सरकार, नई दिल्ली

6. **भारतीय चित्रकला का बृहद इतिहास**, वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा सस्कृत प्रतिष्ठान, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली 110 007

7. **रूपप्रद कला के मूलाधार**, डॉ. शिवकुमार शर्मा एवं डॉ. रामावतार अग्रवाल, लायॅल बुक डिपो, निकट गवर्नमेंट इण्टर कालिज, मेरठ (उ.प्र.)

8. **कला विलास (भारतीय कला का विकास)**, डॉ. आर.ए. अग्रवाल, लॉयल बुक डिपो, निकट गवर्नमेंट इण्टर कालिज, मेरठ (उ.प्र.)

9. **भारतीय चित्रकला**, डॉ. एस.एन. सक्सेना, मनोरमा प्रकाशन, 299, मीरपुर कैंट, कानपरु (उ.प्र.)208 004।

10. **भारतीय चित्रकला का विकास**, डॉ. चिरंजीलाल झा, लक्ष्मी कला कुटीर, नयागंज, गाजियाबाद (उ.प्र.) 201001

11. **कला के मूल तत्व,** डॉ. चिरंजीलाल झा, लक्ष्मी कला कुटीर, नया गंज , गाजियाबाद (उ.प्र.) 1010001

12. **शिल्प कथा**, नंद लाल वसु, साहित्य भवन लि. इलाहाबाद (उ.प्र.)

13. **भारत का मूर्ति शिल्प**, डॉ. चार्ल्स एल. फाबरी, राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली 110 006

14. **कला और कलम (भारतीय चित्रकला का आलोचनात्मक इतिहास)**, डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल, ललित कला प्रकाशन, 27-ए साकेत कालोनी, अलीगढ़ (उ.प्र.) 202001

15. **भारतीय मूर्तिकला परिचय,** डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल, ललित कला प्रकाशन, 27-ए साकेत कालोनी, अलीगढ़ (उ.प्र.) 202001

16. **आधुनिक भारतीय चित्रकला**, डॉ. गिर्राज किशोर अग्रवाल, ललित कला प्रकाशन, 27-ए साकेत कालोनी, अलीगढ़ (उ.प्र.) 202001

17. **भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास**, डॉ. लोकेशचंद शर्मा, गोयल पब्लिशिंग हाउस, सुभाष बाजार, मेरठ (उ.प्र.)

18. **रवि वर्मा, अमृता शेरगिल, रामकिंकर, हुसेन, हेब्बर, यामिनी राय, देवी प्रसाद रामचौधरी पर विनिबन्ध (लघु-पुस्तिकाएं, मोनोग्राफ) तथा समकालीन भारतीय कला (पत्रिका)**, ललित कला अकादेमी, रवीन्द्र भवन, कॉपरनिकस मार्ग, (निकट मंडी हाउस), नई दिल्ली-110 001 तथा ल.क.अ. के क्षेत्रीय कार्यालयों पर भी उपलब्ध

19. **भारतीय कला**, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृथ्वी प्रकाशन, वाराणसी (उ.प्र.) 221 005

20. **भारत की समकालीन कला**, प्राणनाथ मागो, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, ए-ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016

21. **हिन्दुस्तानी मसवरी**, डॉ. अनीस फारूकी

22. **द हैरिटेज आर्फ इंडियन आर्ट,** डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

23. **स्टडीज इन इंडियन आर्ट,** डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, काशी हिंदू विश्वविद्यालय पब्लिकेशन, वाराणसी (उ.प्र.)

24. **इंडियन पेंटिंग,** परसी ब्राउन, वाई.एम.सी.ए. पब्लिशिंग हाउस, मैसी हाल, जयसिंह रोड, (निकट पार्लियामेंट स्ट्रीट), नई दिल्ली 110 001

25. **हिस्ट्री ऑफ इंडियन एण्ड इंडोनेशियन आर्ट**, ए.के. कुमार स्वामी, डॉवर पब्लिकेशन, इन्क, न्यूयार्क।

26. **साउथ इंडियन ब्रोन्जेज**, सी. शिवराममूर्ति, ललितकला अकादमी, रवीन्द्र भवन, कॉपरनिक्स मार्ग, (निकट मंडी हाउस), नई दिल्ली 110 001

27. **डिस्कवरिंग इंडियन स्कल्पचर**, **ए ब्रीफ हिस्ट्री,** डॉ. चार्ल्स एल. फाबरी, एफिलिएटिड ईस्ट वैस्ट प्रैस प्रा. लि. सी-57, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110 024

28. **स्टोरी ऑफ इंडियन आर्ट**, एस.के. भट्टाचार्य, आत्माराम एण्ड संज, कश्मीरी गेट, दिल्ली 110 006

29. **पैनोरामा ऑफ इंडियन पेंटिंग**, प्रकाशन विभाग, सुचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, तिलक मार्ग, नई दिल्ली-110 001 (देश भर में प्रकाशन विभाग के बिक्री काउंटर पर भी उपलब्ध)।

30. **ग्लोरी ऑफ इंडियन मिनिएचर**, डॉ. दलजीत, महिन्द्रा पब्लिकेशन्स, आर-5/11, न्यू राजनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.) 201 002

31. **इंडियन पेंटिंग,** सी. शिवराममूर्ति, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, ए-म ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-1100 16

32. **इंडियन आर्टिस्ट थ्रू दि एजेज**-आर.के. चौपड़ा, आर.के.सी. पब्लिकेशन्स, एच-49 रघु नगर, पंखा रोड, नई दिल्ली-110045

33. **कन्टेमपरेरी इंडियन आर्टिस्ट्स,** गीता कपूर, विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

34. **मोनोग्राफस ऑन अमरनाथ सहगल**, अमश्ता शेरगिल, अवनीन्द्र नाथ टैगोर, डी.पी. रायचौधुरी, धनराज 347 ललित कला कन्टेम्परेरी (पत्रिका), ललित कला अकादमी, रवीन्द्र भवन, कोपरनिक्स मार्ग, (निकट मंडी हाउस), नई दिल्ली-110 001

35. पाठ्यक्रम में शामिल समकालीन/आधुनिक चित्रों तथा मूर्तियों के मोनोग्राफस, पोर्टफोलियो तथा छापे राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (संस्कृति विभाग, भारत सरकार) जयपुर हाउस, (निकट इंडिया गेट) नई दिल्ली-110003

36. **पाठ्यक्रम में शामिल चित्रों तथा मूर्तियों के मोनोग्रफस**, पोर्टफोलियों पुस्तकें तथा छापे राष्ट्रीय संग्रहालय, संस्कृति विभाग जनपथ नई दिल्ली-110 011

37. **कंटेम्परेरी आर्ट इन इंडिया-ए पर्सपोक्टिव**, प्राणनाथ मागो, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, ए-म ग्रीन पार्क, नई दिल्ली 10 016

31. संगीत

(कोड सं. 31 से 36)

इस विषय में पाठ्यक्रम अलग से मुद्रित कराया गया है। निवेदन प्राप्त होने पर इसकी प्रति विद्यालयों को दी जाएगी।

32 . नृत्य

(कोड सं. 56 से 62)

इस विषय में पाठ्यक्रम अलग से मुद्रित कराया गया है। निवेदन प्राप्त होने पर इसकी प्रति विद्यालयों को दी जाएगी।

33. शिल्प विरासत

(कोड नंबर 070)

लक्ष्य एवं उद्देश्य

अपनी सांस्कृतिक संपदा, परंपराओं एवं मूल्यों को बनाए रखते हुए भारतीय युवा वर्ग को विश्व स्तर की चुनौतियों का सामना करने तथा तेजी से बदलते विश्व के साथ सामंजस्य बनाने योग्य तैयार करने के उद्देश्य से सर्वोन्मुखी और समग्र शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूली शिक्षा में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर इस नए विषय को आरंभ किया गया है, जिसके निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

- भारतीय समाज में शिल्प समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका तथा उसके अभिन्न संबंधों को समझना।
- विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र, संस्कृति और सौंदर्यशास्त्र के बीच संबंध को समझने के योग्य बनाना।
- विद्यार्थियों को क्षेत्र अध्ययन के माध्यम से पर्यावरण, शिल्प परंपरा और समाज के बीच सह संबंध को ज्ञात करने में सक्षम बनाना।
- भारतीय शिल्प परंपरा की विविधता के प्रति सम्मान और शिल्पकारों की कठिनाइयों को समझते हुए समाज मे उनके लिए सम्मानजनक स्थान बनाना।
- शिल्प के माध्यम से भारतीय संस्कृति से परिचित कराना, ताकि स्कूल के विद्यार्थी भारतीय कलाकारों की अभिव्यक्ति और कौशल की विविधता का सम्मान कर सकें।
- विद्यार्थियों को भारत की अनूठी दृष्ट एवं भौतिक संस्कृति का रचनात्मक सौंदर्य बोध कराना तथा देश के पर्यावरण, विरासत तथा संसाधनों के संरक्षण, सुरक्षा के लिए मूल्यों को विकसित करना।
- परंपरागत और समकालीन रुझानों, प्रकार एवं क्रियान्वयन, निर्माता और उपभोक्ता के बीच संबंध को समझने में विद्यार्थियों को सक्षम बनाना।
- शिल्प की किसी वस्तु के निर्माण की प्रक्रिया को शुरू से अंत तक समझना।
- व्यावहारिक शिल्प के माध्यम से शिल्प परंपरा को विस्तृत क्षेत्र में बढ़ाने के लिए विद्यार्थियों को उपकरण प्रदान करना।

पाठ्यक्रम रूपरेखा - पारंपरिक शिल्प

कक्षा 11

1. लिखित

लिखित परीक्षा	**70 अंक**	**3 घण्टे**
खंड क	**40 अंक**	**50 कालखण्ड**
इकाई 1 - शिल्प परम्पराओं से परिचय		**5 कालखण्ड**

क) शिल्प के बारे में सीखना | 4 अंक

ख) शिल्प परम्परा का इतिहास

ग) शिल्प और संस्थाएं

इकाई 2 - शिल्प सामग्री **15 कालखण्ड**

2.2 मिट्टी के शिल्प **12 अंक**

क) मिट्टी और मिट्टी के बर्तन

ख) मृणमूर्तियाँ (टेराकोटा)

ग) ऐतिहासिक कालों में मिट्टी

2.3 पत्थर

क) प्रस्तर शिल्प

ख) मूर्तिकला का इतिहास

ग) पत्थरों पर कार्य

घ) पत्थरों पर कार्य और समकालीन वास्तुकला में इसका उपयोग

2.4 धातु शिल्प

क) धातु का कार्य और लुहारी

ख) मोम की लुप्त प्रक्रिया

ग) तांबे की ढलाई

इकाई 3 - शिल्प प्रक्रिया

3.5 आभूषण **20 कालखण्ड**

क) शरीर के विभिन्न हिस्सों के लिए आभूषण **16 अंक**

ख) आभूषणों के क्षेत्रीय प्रकार - इसकी प्रक्रिया

ग) ऐतिहासिक आभूषण

3.6 प्राकृतिक रेशे (फ़ाइबर)

क) प्राकृतिक रेशों के प्रकार

ख) प्राकृतिक रेशों के उपयोग

ग) बांस और बांस की दस्तकारी प्रक्रिया

3.7 कागज़ शिल्प

क) कागज़ एवं कागज़ शिल्प

ख) कागज के खिलौने

ग) पेपर मैशे

3.8 वस्त्र

क) वस्त्रों की बुनाई

ख) वस्त्रों के लिए सामग्री

ग) वस्त्रों की तकनीक

घ) भारत में कढ़ाई की परम्पराएं

इकाई 4 - सम्मिश्रित शिल्प

4.9 चित्रकारी **10 कालखण्ड**

क) सतह पर चित्रकारी की तकनीकें और सामग्रियां **8 अंक**

ख) भित्ति चित्र परम्परा

ग) भारत के विभिन्न भागों में चित्रकारी की शैलियां

4.10 रंगमंच शिल्प कला

क) कथा सुनाना

ख) मुखौटे

ग) संगीत वाद्य

खंड ख **20 अंक**

क्षेत्र अध्ययन- शिल्पों का प्रलेखन एवं अनुसंधान

- उपाख्यानात्मक अनुभवमूलक प्रश्न
- प्रकरण अध्ययन पर आधारित प्रश्न

खंड ग **10 अंक**

अभ्यास एवं नवीनीकरण के लिए, व्यक्तिगत आधार पर चुने गए शिल्प (मिट्टी / पत्थर / धातु / आभूषण / फ़ाइबर / कपड़े / चित्रकारी / रंगमंच / कागज़) पर आधारित प्रश्न।

नोट- ऊपर वर्ग 'ख' और 'ग' के प्रश्न पाठ्यक्रम के प्रायोगिक भागों पर आधारित होंगे। इसलिए अलग से समय का आवंटन नहीं किया गया है।

2. **प्रायोगिक** **30 अंक**

(क) क्षेत्र अध्ययन- शिल्पों के दस्तावेजीकरण / तलाश **180 कालखण्ड**

- दो छोटी परियोजनाएं
- एक बड़ी परियोजना

(ख) व्यावहारिक शिल्प **4 कालखण्ड**

- शिल्प सीखना
- डिज़ाइन और प्रक्रियाओं में नवीनीकरण

कक्षा 12

1. **लिखित** **70 अंक** **3 घण्टे**

लिखित परीक्षा **40 अंक**

खंड क **50 कालखण्ड**

इकाई - । पिछले दो सौ वर्ष **20 अवधि**

15 अंक

1.1 उपनिवेश नियम और हस्तशिल्प

1.2 गांधी और आत्म निर्भरता

1.3 हथकरघा और हस्तशिल्प को पुनः जीवित करना

1.4 हस्तशिल्प और दस्तकारों को मान्यता देना

इकाई - ॥ हस्तशिल्प पुनः जीवित करना **30 अवधि**

25 अंक

2.5 हस्तशिल्प और जेंडर समानता

2.6 हस्तशिल्प और उत्तरजीविता

2.7 हस्तशिल्प और संसाधान प्रबंधान

2.8 हस्तशिल्प और व्यापार

2.9 वितरण और विपणन - दुकानें, मेले, हाट

2.10 हमें आज क्या जरुरत है ?

खंड ख

क्षेत्र अध्ययन- शिल्पों के **20 अंक**

- उपाख्यानात्मक अनुभवमूलक प्रश्न
- प्रकरण अध्ययन पर आधारित प्रश्न

खंड ग **10 अंक**

अभ्यास और नवीनीकरण के लिए, व्यक्तिगत आधार पर चुने गए शिल्प (मिट्टी/ पत्थर/ धातु/ आभूषण/ फ़ाइबर/ कपड़े/ चित्रकारी/ रंगमंच/ काग़ज) पर आधारित प्रश्न।

नोट- ऊपर वर्ग ख और ग के प्रश्न पाठ्यक्रम के प्रायोगिक भागों पर आधारित होंगे। इसलिए अलग से समय का आबंटन नहीं किया गया है।

2. प्रायोगिक **30 अंक**

(क) क्षेत्र अध्ययन- शिल्पों के प्रलेखन एवं अनुसंधान **180 कालखण्ड**

- दो छोटी परियोजनाएं
- एक बड़ी परियोजना

(ख) व्यावहारिक शिल्प **40 अंक**

- शिल्प सीखना
- डिज़ाइन और प्रक्रियाओं में नवीनीकरण

(खंड 'ख' और 'ग' तथा प्रयोग के लिए दिशा निर्देश कार्य पुस्तिका में दिए गए हैं- भारत शिल्प परंपरा की तलाश, एनसीईआरटी द्वारा ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षाओं के लिए तैयार)

खंड-वार महत्व- कक्षा ग्यारहवीं-बारहवीं

अध्ययन क्षेत्र		**अंक**
लिखित		**70**
खंड क (रीडर)	**40**	
भारतीय हस्तकला की परम्पराएँ		

खंड ख	**20**
क्षेत्र अध्ययन	
खंड ग	**10**
चुने हुए शिल्प (मिट्टी/ पत्थर/ धातु/ आभूषण/ फ़ाइबर/ कपड़े/ चित्रकारी/ रंगमंच/ कागज)के आधार पर निजी प्रतिक्रिया के प्रश्न	**70**
प्रायोगिक	
क्षेत्र अध्ययन- शिल्प की खोज	**10**
व्यावहारिक शिल्प	**20**
• शिल्प सीखना	
• डिज़ाइन एवं प्रक्रियाओं में नवीनीकरण	30
	कुल 100

परीक्षा :

	लिखित- एक पेपर	**3 घंटे**	**70 अंक**
	खंड क		**40 अंक**
1.	**लघु प्रश्न:**		**12 अंक**

पाठ्यपुस्तक पर आधारित पाँच में से चार प्रश्न (80-100 शब्दों में)।

तीन अंकों वाले चार प्रश्न (4x37)

2. दीर्घ प्रश्न: **15 अंक**

पाठ्यपुस्तक पर आधारित चार में से तीन प्रश्न (100-120 शब्दों में)।

पाँच अंकों वाले तीन प्रश्न (3x5)

3. परिभाषाएँ: **05 अंक**

पाठ्यपुस्तक पर आधारित छः में से पाँच परिभाषाएँ, तीन से पाँच वाक्यों में दें। एक अंक की पाँच परिभाषाएँ (1x5)

4. निबंध: **08 अंक**

पाठ्यपुस्तक पर आधारित दो में से एक निबंध (150-200 शब्दों में)।

खंड ख **20 अंक**

5. विद्यार्थी के शिक्षण के एक भाग के रूप में क्षेत्र अध्ययन पर आधारित एक प्रश्न। विवरणात्मक और वर्णात्मक शैली में उपाख्यानात्मक प्रलेखन। 10 अंक

6. दिए गए प्रकरण अध्ययन के आधार पर शिल्प के दो या दो से अधिक प्रकारों की तुलना या व्यतिरेक। 10 अंक

खंड ग 10 अंक

चुने हुए शिल्प (मिट्‌टी/ पत्थर/ धातु/ आभूषण/ फ़ाइबर/ कपड़े/ चित्रकारी/ रंगमंच/ कागज) के आधार पर निजी प्रतिक्रिया के प्रश्न ।

प्रायोगिक **3 घंटे** **30 अंक**

क्षेत्र अध्ययन- शिल्प की खोज **10 अंक**

1. क्षेत्र अध्ययन परियोजना कार्य **05 अंक**

पाठ्‌यक्रम के इस भाग में कक्षा ग्यारहवीं और बारहवीं दोनों में विद्यार्थियो को दो छोटी और एक विस्तृत परियोजना करने की आवश्यकता होगी। ये परियोजनाएँ अनिवार्य रूप से अनुभवात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकार की होती हैं।

प्रत्येक विद्यार्थी तैयार करेंगे :

दो छोटे कार्य (प्रत्येक 10 पेज)

आरंभ में विद्यार्थी अपने आसपास का अध्ययन करेंगे और अपने दैनिक जीवन में नित्य प्रति के शिल्प के बारे में सीखेंगे। वे अपने घर, शहर/गांव में पाए जाने वाले शिल्प, और अपने इलाके में रहने वाले शिल्पकारों एवं शिल्प समुदायों पर एक कार्य तैयार करेंगे।

कार्य शुरू करने से पहले अध्यापक निम्नलिखित पैराग्राफ़ में वर्णित क्षेत्रों और विषयों से संबंधित विषयों पर चर्चा कर सकते हैं, और वे किसी शिल्पकार या शिल्प-समुदाय से किसी ऐसे व्यक्ति को, जो बच्चों से बात करने में सहज महसूस करें और अपने प्रदेश की विशेष कला में अच्छी तरह से निपुण हो, बुला सकते हैं। विद्यार्थी उत्पादकों और उपभोक्ताओं दोनों से बात करके उत्पादन और विपणन के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं या स्मारकों की संरचना का अध्ययन कर सकते हैं, संग्रहालय जा सकते हैं, वेशभूषा, आभूषण, जीवन शैली पर किए गए कार्यों एवं कलात्मकता (मूर्तिकला, चित्रकारी और शिल्प) आदि का अध्ययन कर सकते हैं। इस कार्य में आरेखण, चित्रण, तस्वीरें, मानचित्र आदि हो सकते हैं। विद्यार्थी इस छोटी परियोजना के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों में से किन्हीं दो विषयों को चुन सकते हैं-

- अपने क्षेत्र/ घर/ राज्य के शिल्प से छात्र अपने दैनिक जीवन में शिल्प परंपरा की डिज़ाइन और कार्य को समझने में सक्षम होते हैं।
- संग्रहालय/ स्मारकों/ धार्मिक-धर्मनिरपेक्ष संरचनाओं में पायी जाने वाली स्थानीय धरोहर के माध्यम से विभिन्न ऐतिहासिक वास्तुकला/ निर्माण/ मूर्तिकला/ चित्रकला में शामिल शिल्प कौशल को समझने सकते हैं।
- समकालीन घरों एवं अन्य इमारती संरचनाओं में स्थानीय वास्तुकला के शिल्प कौशल की विविधता का

अध्ययन करने के लिए।

- बाज़ार/ दुकान/ मेले/ हाट बाज़ार को समझने के लिए।

नोट– शिक्षक 05 अंकों वाले दो कार्यो में से प्रत्येक का मूल्यांकन करें तथा दोनों में से बेहतर कार्य को अंतिम मूल्यांकन के लिए चुनें।

2. शिल्प की खोज-परियोजना कार्य **05 अंक**

शिल्प की खोज पर एक दीर्घकालिक परियोजना

यह परियोजना आवश्यक रूप से किसी क्षेत्र में प्रचलित एक विशेष शिल्प परंपरा का वैज्ञानिक, व्यवस्थित प्रलेखन है (पहले वर्ष यानी कक्षा ग्यारहवीं के लिए), जिसकी पृष्ठभूमि में वे मुख्य मुद्दे होंगे, जिनका अध्ययन छात्र लिखित (सैद्धांतिक) में पहले से कर चुके हैं;

- शिल्प परंपरा
- दर्शन और सौंदर्यशास्त्र
- सामग्री, प्रक्रिया और तकनीक
- पर्यावरण और संसाधन प्रबंधन
- सामाजिक संरचनाएँ
- अर्थव्यवस्था और विपणन
- अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण

इस विषय में ली गई परियोजनाओं में विभिन्न चरणों की योजना, निष्पादन और प्रस्तुति हो सकती है। 4 से 6 छात्रों के समूह मिलकर इस परियोजना को कर सकते हैं जहाँ वे एक विशेष शिल्प परंपरा पर कार्य कर सकते हैं। कक्षा ग्यारहवीं के छात्र अपने ही क्षेत्रों के शिल्पकारों से मिल सकते हैं, जबकि अगर स्कूल और छात्रों के लिए सुविधाजनक हो तो कक्षा बारहवीं के छात्र किसी और क्षेत्र के शिल्प समूहों को ले सकते हैं।

प्रारंभिक चरण में, शिक्षकों के साथ विद्यार्थी अपने क्षेत्र में व्यवहृत विभिन्न शिल्प परंपराओं, उनके इतिहास, वितरण आदि के बारे में चर्चा कर सकते हैं, पुस्तकालय, इंटरनेट और संसाधन व्यक्तियों सहित विभिन्न स्रोतों के माध्यम से उपलब्ध सभी जानकारी एकत्र कर सकते हैं। शिल्प के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी एक साक्षात्कार अनुसूची विकसित कर सकते हैं और साक्षात्कार के लिए शिल्पकारों की संख्या, स्थानों आदि पर निर्णय ले सकते हैं। शिल्पकारों एवं अन्य व्यक्तियों से बातचीत करने के लिए अध्यापक को विद्यार्थी को तैयार करना होगा, कि उनको किस तरह की भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए, और उनकी सामग्री आदि संभालते समय उन लोगों के साथ कैसे विनम्र हों। विद्यार्थी शिल्पकारों से कुछ वस्तुओं को खरीद सकते हैं, उनकी अनुमति लेकर उनकी फ़ोटो ले सकते हैं, चित्र आदि बना सकते हैं, जिसका उपयोग बाद में प्रस्तुति या परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने में कर सकते हैं।

प्रलेखन के पूरा होने पर, विद्यार्थी स्कूल की प्रार्थना सभा या कक्षा में या अभिवावक -शिक्षकों की बैठक में उसे सृजनात्मकता के साथ प्रस्तुत कर सकते हैं।

व्यावहारिक शिल्प **20 अंक**

इस घटक में बहु-विधाओं के साथ रचनात्मक कार्यों को स्वयं करने का अनुभव शामिल होगा :

1. शिल्प सीखना **10 अंक**

विद्यार्थी किसी स्थानीय शिल्पकार से अपने चुने हुए शिल्प, जैसे मिट्टी के बर्तन/ बुनाई/ चित्रकारी तथा इनकी तकनीकों, सामग्रियों एवं उपकरणों को संभालना, रंग, प्रकार, रंगत, तारतम्य, संतुलन आदि के बारे में मूल जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वे उनके साथ प्रयोग कर सकते हैं, उस शिल्प के पारंपरिक प्रचलनों, उनकी प्रतीकात्मकता तथा उनसे जुड़ी विभिन्न विचारधाराओं के बारे में जान सकते हैं। स्कूल में किसी शिल्प में प्रयुक्त सभी प्रक्रियाओं तथा सुविधाएँ, सामग्रियों तथा उपकरणों की सुविधा होनी चाहिए। संभव है कि स्कूल में कोई ऐसे अध्यापक न हों जो इन सभी शिल्पों में पारंगत हों, ऐसी स्थिति में समुदाय से ऐसे व्यक्तियों/ शिल्पकारों से संपर्क करना चाहिए जो स्कूल में आकर बच्चों के सामने प्रदर्शन कर सके तथा विद्यार्थी उनसे मिलने भी जा सकें।

ट्राइफ़ेड, स्पिक-मैके, सीसीआरटी तथा अन्य ऐसी संगठनों से सहायता ली जा सकती है, जो भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखने के प्रयास कर रहे हैं।

2. डिज़ाइन और प्रक्रियाओं में अभिनव **10 अंक**

इस चरण में, विद्यार्थी अपनी रचनात्मक, नवीकृत कौशल विकसित करेंगे। वे विकास के एक विषय चुनेंगे और सिद्धांतों को अभ्यास में लागू करेंगे।

उदाहरणार्थ, रुचियों तथा क्षेत्रीय आवश्यकताओं पर आधारित, जैसे मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, उड़ीसा आदि के कुछ भागों में पत्थर पर शिल्प, जहाँ आसानी से पत्थर उपलब्ध हैं।

- **सामग्री, प्रक्रिया तथा तकनीक**
  विभिन्न शिल्पों की पर्यावरण के अनुकूल पैकिंग

- **पर्यावरण तथा संसाधन प्रबन्धन**
  सामग्रियों को रीसाइकिल करना
  जोखिम को घटाना

- **अर्थव्यवस्था एवं विपणन**
  शिल्पकार को लागत एवं मूल्यों के समुचित तरीकों को समझाना,

उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं/ व्यवहार को समझना तथा शिल्पकारों को बदलते चलन आदि की जानकारी देना।

- **अंतर्राष्ट्रीय उदाहरण**
  भारत एवं विदेशों में शिल्पकारी का रचनात्मक समकालीन उपयोग

- सौन्दर्यपूर्ण पर्यावरण तैयार करना

अंततः यह महत्वपूर्ण है कि इस पाठ्यक्रम को करने वाले छात्रों के पास इनका उपयोग करके अपने दैनिक जीवन का स्तर बढ़ाने के अवसर होते हैं। विद्यार्थियों को प्रायोगिक रूप से दर्शाना होगा कि वे अपने घर, स्कूल तथा समुदाय को सौन्दर्यपूर्ण ढंग से कैसे सुसज्जित करेंगे। सीखे हुए शिल्प के माध्यम से वे अपनी कक्षा को पुनः सुसज्जित कर

सकते हैं, अथवा प्राध्यापक के कक्ष को सजा सकते हैं। अपने कार्यों को दर्शाने एवं समालोचना के लिए समय-समय पर प्रदर्शनियाँ लगा सकते हैं। वे यह भी सीख सकते हैं कि उनके उत्पादों का उपयोग किस प्रकार से उनके जीवन तथा समुदायों में किया जा सकता है।

पाठ्यपुस्तक

भारतीय शिल्प के इस विषय में **कक्षा ग्यारह एवं बारह के लिए तीन पाठ्यपुस्तकें** होंगी। प्रत्येक वर्ष एक पाठ्यपुस्तक सैद्धांतिक अध्ययन के लिए होगी, तथा एक पुस्तक में प्रायोगिक घटकों के लिए स्कूलों, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लिए दिशानिर्देश / संबोधन होंगे।

कक्षा ग्यारह एवं बारह के लिए सैद्धांतिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तक पूर्णत: चित्रित पुस्तक होगी, जिसमें तस्वीरें, रेखाचित्र, मानचित्र, समय-अवधि, प्रकरण अध्ययन आदि शामिल होंगे। कक्षा ग्यारह की पाठ्यपुस्तक में बच्चों को भारतीय शिल्प की विविध परंपररा से परिचित कराया जाएगा। जबकि कक्षा बारह की पाठ्यपुस्तक में शिल्प परंपरा के छह घटकों का वर्णन होगा- (क) दर्शन और सौंदर्यशास्त्र, (ख) सामग्री, प्रक्रिया और तकनीक, (ग) पर्यावरण और संसाधन प्रबंधन, (घ) सामाजिक संरचनाएँ, (च) अर्थव्यवस्था और विपणन, (छ) अंतरराष्ट्रीय उदाहरण। इन घटकों का अध्ययन कक्षा ग्यारह में पढ़ाई गई शिल्प परंपरा के परिपेक्ष्य में किया जाएगा।

विभिन्न क्रियाकलापों पर प्रयोग करवाने के लिए विद्यार्थियों तथा शिक्षकों एवं स्कूलों के लिए एक कार्यपुस्तिका भी होगी, जिसमें क्षेत्र अध्ययन तथा व्यावहारिक शिल्प से प्रलेखन की विधियों / फॉर्मेट के कुछ नमूने प्राप्त होंगे, जिनके आधार पर विद्यार्थी स्वयं भी विकसित कर सकते हैं। यह पुस्तक कक्षा ग्प एवं ग्प्प दोनों के लिए होगी। इसमें यह निर्देश भी होंगे कि इन क्रियाकलापों आदि के लिए स्कूलों को क्या सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए।

शिक्षकों की योग्यताएँ :

क. कला के किसी भी विषय पर स्नातकोत्तर, फ़ाइन आर्ट्स में स्नातकोत्तर (एम.एफ़.ए.) अथवा चित्रकारी या पेंटिंग में स्नातकोत्तर।
कम से कम एक शिल्प से परिचय, चाहे असंगठित क्षेत्र से हो।

ख. यदि शिक्षक के पास उपरोक्त योग्यता न हो तो एक शपथ प्राप्त की जाए, ताकि सीसीआरटी अथवा संस्कृति अथवा शिल्प संग्रहालय अथवा एनसीईआरटी आदि के साथ 10 दिनों का प्रशिक्षण किया जा सके।

संरचना :

शिल्प के लिए आवश्यक स्थान और भट्टा, कुम्हार के चाक तथा अन्य उपकरण।

संस्तुत पाठ्यपुस्तकें :

1. रीडर : भारतीय हस्तकला की परम्पराएँ - कक्षा 11 के लिए पाठ्यपुस्तक (एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित)

2. रीडर : भारतीय हस्तकला की परम्पराएँ : भूत, वर्तमान और भविष्य - कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक (एनसीईआरटी द्वारा प्रकाशित)

3. रीडर : भारतीय हस्तकला परम्पराओं की खोज - कक्षा ग्प एवं ग्प्प के लिए क्षेत्र कार्य और शिल्प के व्यावहारिक प्रयोग हेतु पाठ्यपुस्तक

34. ग्राफ़िक डिज़ाइन

(कोड नं. 071)

परिचय

ग्राफ़िक डिज़ाइन दृष्टव्य संचार की रचनात्मक योजना और निष्पादन है। सीखने वाला व्यक्ति आकारों और रूपों, शब्दों और चित्रों का संयोजन सीखता है ताकि वह किसी चपटे माध्यम (द्विआयामी - कागज, कार्ड बोर्ड, कपड़ा, प्लास्टिक, वीडियो, कम्प्यूटर या प्रक्षेपण पर्दा, पोस्टर, बिल बोर्ड या अन्य किसी साइनेज पर) या त्रिआयामी रूप (निर्मित या विनिर्मित) में इनका पुन: उत्पादन कर सकें ताकि लक्षित दर्शकों को वह जानकारी दी जा सके। सभी ग्राफिक डिज़ाइन का एक प्रयोजन होता है। आम तौर पर इसका प्रयोजन वाणिज्यिक रूप से सौंदर्य बोध सहित अपने दर्शकों के विचारों और कार्यों में इनकी अभिव्यक्ति, सूचना और प्रभाव को समझाना है।

यह विषय विद्यार्थी को सूचना और विज्ञापन के संप्रेषण हेतु आशयित कला का परिचय देता है। यह ग्राफिक डिज़ाइन के क्षेत्र में प्रयुक्त रूपरेखा और डिज़ाइन संकल्पनाओं के उपयोग और अध्ययन पर केन्द्रित है। इसके विद्यार्थी एनालॉग मीडिया (कागज और पेंसिल से चित्रकारी आदि) और डिजिटल मीडिया - आधुनिकतम कम्प्यूटर साध नों का उपयोग (ग्राफिक हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर - ड्रॉइंग, चित्रकारी, रूपरेखा, टाइपोग्राफ़ी, स्कैनिंग और फोटोग्राफ़ी) करते हुए रोज़गार प्राप्त कर सकते हैं।

1. कलात्मक सृजन : विद्यार्थी कला के मूल या व्याख्यात्मक कार्यों में इसके विषयों, तकनीकों और प्रक्रियाओं को जान सकेंगे और उसका उपयोग कर सकेंगे।
2. कलात्मक संदर्भ : विद्यार्थी कला की दृष्टव्य विशेषताओं, सामग्री, प्रयोजन तथा शब्दों के संदेश को प्रभावित करने वाले समय और स्थान के तत्वों का प्रदर्शन कर सकेंगे।
3. कलात्मक पूछताछ : विद्यार्थी प्रदर्शित कर सकेंगे कि कला से किस प्रकार सार्वभौमिक संकल्पनाएं और विषय वस्तुएं प्रकट होती हैं। विद्यार्थी अपने कार्य और अन्य लोगों के कार्य की विशेषताओं तथा गुणों पर चर्चा तथा उनका आकलन कर सकेंगे।

वरिष्ठ माध्यमिक कक्षा में ग्राफिक डिज़ाइन एक चुना गया विषय है। जबकि इस विषय के लिए विद्यार्थी में किसी पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं है फिर भी उनके अंदर कला और डिज़ाइन के क्षेत्र में मूलभूत कौशल तथा दिलचस्पी होनी चाहिए।

औचित्य

डिज़ाइन चयन की एक प्रक्रिया है जहां दृष्टव्य तत्व जैसे प्रिंट, रेखा, आकार, आयतन, टोन, टेक्स्चर, रंग, रूप, प्रारूप, स्थान और संरचनाओं का उपयोग विद्यार्थी द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करने में किया जाता है। डिज़ाइन तत्वों की दृष्टव्य संवेदनशीलता और कार्य करने का ज्ञान अनेक प्रकार के प्रश्नों को सुलझा कर तथा अनेक प्रकार के मीडिया और सामग्री के इस्तेमाल द्वारा विकसित किया जाएगा। पाठ्यचर्या क्षेत्र का लक्ष्य विद्यार्थी को पर्यवेक्षण, कल्पना करने और सृजन तथा कौशलों की मानसिक क्षमताओं का विकास करने और एक प्रभावी दृष्टव्य संचार के लिए दृष्टव्य तत्वों के उपयोग के प्रति संवेदनशील बनाना है।

डिज़ाइन समाज और जन कल्याण के लिए समस्या सुलझाने की एक गतिविधि है। आज सूचना और संचार के क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति को अनेक प्रकार की संचार प्रणालियों के जरिए लोगों के विभिन्न समूहों से संपर्क करना तथा संपर्क

प्राप्त करना होता है।

ग्राफिक डिज़ाइन पाठ्यक्रम में प्रिंट मीडिया जैसे पुस्तकों, पत्रिकाओं और समाचार पत्रों की जटिल प्रक्रिया के संचार हेतु रचनात्मक समाधान प्रदान करने में अपार संभाव्यता निहित है, जिसे पिक्टोग्राफ़िक निरुपण या संकल्पना को दृष्टव्य रूप में बनाने के नाम से जाना जाता है। इसे पारंपरिक रूप से टाइपोग्राफी, व्यंग्यचित्रों (सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक) तथा पोस्टर, पुस्तक के आवरण, लैटर हैड, समाचार पत्रों, विवरणिकाओं, प्रतीक लोगो, कपड़ों के छापे और यहां तक कि आभूषणों की डिज़ाइन में इस्तेमाल किया जाता है। व्यक्तिगत कम्प्यूटरों और डिज़ाइन सॉफ्टवेयर के आविष्कार से ग्राफिक डिज़ाइन का उपयोग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में किया जा रहा है जिसे आम तौर पर अंत:क्रियात्मक डिज़ाइन कहते हैं, जिसके विज्ञापनों की रचना प्रकिया में असीमित उपयोग हैं। आगे चलकर विद्यार्थी प्रिंट उत्पादन (समाचार पत्रिका, पोस्टर, विवरणिका आदि) में ग्राफिक डिज़ाइनर के तौर पर कार्य कर सकते हैं। ग्राफिक डिज़ाइनर एक संदेश देने, एक उत्पाद या सेवा की बिक्री, सूचना देने या मनोरंजन के लिए लिखित सामग्री और चित्रों को मिलाकर एक डिज़ाइन तैयार कर सकते हैं।

ग्राफिक डिज़ाइन पाठ्यचर्या बौद्धिक और सशक्त दृष्टव्य संचार की रचना पर केन्द्रित है। विद्यार्थी को डिजा़इन तकनीक, दृष्टव्य विचार, संकल्पना विकास, रंग, संगठन और टाइपोग्राफी को प्रकरण अध्ययनों के जरिए तथा अभ्यासों को हल करते हुए सीख कर एक ग्राफिक डिज़ाइनर के कैरियर की एक मजबूत नींव तैयार करनी चाहिए। अध्ययन के दौरान समस्याओं को सुलझाने वाली ऐसी परियोजनाओं को शामिल किया जाएगा जो दृष्टव्य संचार से संबंधित हैं। इस पाठ्यक्रम में दृष्टव्य संदेशों के सृजन, रूपांतरण और प्रस्तुतीकरण के लिए एक साधन के तौर पर कम्प्यूटर का परिचय शामिल किया जाए।

ग्राफ़िक डिज़ाइन को वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर एक चुने हुए विषय के रूप में लेकर विद्यार्थी के पास ग्राफिक डिज़ाइन में आगे उन्नत अध्ययन करने अथवा अपने कैरियर के लिए संबंधित पाठ्यचर्या / व्यावसायिक क्षेत्रों के साथ अपने ज्ञान को समेकित करने के विभिन्न विकल्प होंगे।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

ग्राफिक डिज़ाइन के अध्ययन से विद्यार्थी को कला के क्षेत्र में एक व्यापक संभावना होगी और वे ये कार्य कर सकेंगे –

- विभिन्न प्रकार की छवियों / छवि के रूप में पाठ के निष्पादन द्वारा कलात्मक वृद्धि, पारंपरिक और समकालीन तकनीकों का प्रदर्शन जो रचनात्मक विचार तथा वैश्लेषिक कौशलों का इस्तेमाल करते हुए जटिल डिज़ाइन संबंधी समस्याओं को सुलझाती हैं।
- दृष्टव्य डिज़ाइन के तत्वों और सिद्धांतों के कौशलपूर्ण उपयोग तथा समझ का विकास तथा प्रदर्शन (1. संकल्पनात्मक तत्व, 2. दृष्टव्य तत्व, 3. संबंध दर्शाने वाला तत्व और 4. प्रायोगिक या कार्यात्मक तत्व)
- डिजिटल साधनों का उपयोग, सृजन, रूपांतरण और प्रस्तुतीकरण हेतु संचार के सशक्त माध्यमों के रूप में उपयोग करने का कौशल अर्जित करना।
- समकालीन कलाकारों, डिज़ाइनरों तथा क्षेत्र के उत्कृष्ट कर्मियों के कार्यों का अध्ययन तथा डिज़ाइन की शब्दावली को समृद्ध बनाने के लिए चर्चा।
- अपने कार्यों में सौंदर्य बोध की समझ लाने के तरीके सीखना और औपचारिक सैद्धांतिक अनुप्रयोगों के साथ प्रायोगिक कार्यों के बीच संतुलन के मार्ग खोजना।

ग्राफ़िक डिज़ाइन के लिए पाठ्यक्रम योजना

विद्यार्थी यह सीखेंगे :

- ग्राफिक डिज़ाइन का इतिहास
- एक रूपरेखा क्या है और इसे प्रभावी कैसे बनाया जा सकता है।
- अक्षरों / फोंट तथा उनके प्रभाव के विषय में।
- एक लोगो क्या है और इसे कैसे बनाया जाता है।
- द्विआयामी डिज़ाइन की मूलभूत बातों सहित कला के तत्व और सिद्धांत।
- रंगों का सिद्धांत और ग्राफिक डिज़ाइन में इसके महत्व।
- कला की आलोचना को प्रभावी रूप से कैसे इस्तेमाल करें।
- ग्राफिक डिज़ाइन को एक कैरियर के रूप में अपनाने के विषय में।
- उनके डिजाइ़न कौशलों तथा तकनीकों में सुधार के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों को अपनाना।

विद्यार्थी हाथ से और कम्प्यूटर ग्राफिक डिज़ाइन प्रोग्रामों की सहायता से अनेक प्रकार की परियोजनाओं की डिज़ाइन तैयार करेंगे और उनकी रचना करेंगे। वे स्टुडियो का अच्छा आयोजन करेंगे तथा अध्यापकों की अपेक्षाओं के अनुसार साधनों का उपयोग करेंगे। इनसे अपेक्षा है कि वे एक उपयुक्त कार्य परिवेश में सुविधाओं का रखरखाव करेंगे।

कक्षा 11 : ग्राफ़िक डिज़ाइन

क:	**सिद्धांत पत्र एक3 घंटे**	**70 अंक**	**180 कालखण्ड**
यूनिट 1	ग्राफिक डिज़ाइन का मूलभूत आधार	20 अंक	40 कालखण्ड
यूनिट 2	ग्राफ़िक डिज़ाइन और समाज	25 अंक	70 कालखण्ड
यूनिट 3	ग्राफ़िकीय संचार की तकनीक	25 अंक	70 कालखण्ड
ख :	**प्रायोगिक**	**20 अंक**	**60 कालखण्ड**

1. रेखाचित्र और चित्रकारी 10 अंक
2. मूलभूत डिज़ाइन : डिजाइ़न के प्रति सौंदर्य की दृष्टि से संवेदनशीलता का विकास 10 अंक

ग :	**पोर्टफोलियो**	**10 अंक**	**कक्षा XI एवं XII**

कक्षा 11 : ग्राफ़िक डिज़ाइन

कः सिद्धांत पत्र एक		**3 घंटे**	**70 अंक**
अनुभाग क : रीडर पर आधारित प्रश्न			
अनुभाग ख : डिज़ाइन के अनुप्रयोगों पर आधारित प्रश्न			
इकाई - 1 : ग्राफिक डिज़ाइन का मूलभूत आधार			20 अंक
क. ग्राफिक डिज़ाइन का परिचय ख. ग्राफिक कला, डिज़ाइन और ग्राफिक डिज़ाइन ग. ग्राफिक डिज़ाइन के तत्व और सिद्धांत			
यूनिट - 2 : ग्राफिक डिज़ाइन और समाज			25 अंक
क. स्वदेशी ग्राफिक डिज़ाइन और संस्कृति ख. ग्राफिक डिज़ाइन की स्वदेशी परंपराएँ			
यूनिट 3 : ग्राफिक संचार तकनीकें			25 अंक
क. लिपि का विकास ख. प्रतिलिपिमुद्रण के विकास की अवस्थाएँ ग. धातु की चल टाइप से डिजिटल इमेजिंग तक			
ख : प्रायोगिक			**20 अंक**
1. रेखाचित्रण और चित्रकारी क. प्राकृतिक एवं मानव निर्मित वस्तुओं और पर्यावरण के रेखाचित्रण ख. निर्माण चित्रकारी ग. अभिव्यक्ति या चित्रण संबधी चित्रकारी घ. सरलीकरण चित्रकारी			10 अंक
2. **मूलभूत डिज़ाइन :** डिज़ाइन के प्रति सौन्दर्यबोध संवेदनशीलता का विकास			
क. डिज़ाइन के दो-आयाम तत्व i. रेखा ii. आकृति			

iii. रूप iv. रंग v. पुनरावृत्ति vi. बनावट vii. समरूपता viii. श्रेणीकरण ix. विकिरण x. असंगति xi. कंट्रास्ट xii. घनापन xiii. बनावट ivx. अंतरिक्ष,	
ख) सुलेख और मुद्रण कला i. शरीर-रचना ii. परिवार के प्रकार iii. फ़ोंट का चयन iv. शैली और स्वरूपण v. छवि के रूप में टेक्स्ट	10 अंक
ग. पोर्टफोलियो 1. रेखाचित्रण और चित्रकारी - 100 रेखा चित्रों की एक पूरी रेखा चित्र पुस्तिका	10 अंक
2. डिज़ाइन के द्विआयामी तत्व	
2 मोनोग्राम डिज़ाइनें क) एक आमंत्रण पत्र और एक लैटर हैड ख) दिए गए विषयों पर दो पोस्टर	

	ग)	दिए गए विषयों पर दो साइनेज
	घ)	पारंपरिक मोटिफ पर आधारित दो व्याख्यात्मक डिजाइन (दो भिन्न माध्यमों में)
3.	**सुलेख और मुद्रण कला**	
	क)	किसी भी भाषा के चुने गए टाइपफेस में एक सूक्ति
	ख)	किसी भी भाषा के चुने गए टाइपफेस में एक संदेश
	ग)	1. मुद्रण के लिए उपयुक्त रूप में पत्र के विपरीत सृजित एक नाम के आद्याक्षर की एक डिज़ाइन।
		2. यही डिज़ाइन रिलीफ मुद्रण में उत्पादित करना।
4.	**परियोजना : -**	
	1.	एक दौरे पर आधारित एक परियोजना

कक्षा 12 ग्राफिक डिज़ाइन

क: सिद्धांत	**प्रश्न पत्र एक**	**3 घंटे**	**70 अंक**	**180 कालखण्ड**
इकाई 1 डिज़ाइन की प्रथाएं और प्रक्रियाएं			15 अंक	30 कालखण्ड
इकाई 2 डिज़ाइन के सिद्धांत और तत्व			30 अंक	100 कालखण्ड
इकाई 3 मीडिया और डिजाइन			25 अंक	50 कालखण्ड
ख : प्रायोगिक			**20 अंक**	**60 कालखण्ड**
1. समाज और जुड़ाव			5 अंक	15 कालखण्ड
2. डिज़ाइन आधारित सॉफ्टवेयर का परिचय			5 अंक	15 कालखण्ड
3. डिज़ाइन आधारित सॉफ्टवेयर का अनुप्रयोग			5 अंक	15 कालखण्ड
4. डिज़ाइन सॉफ्टवेयर का उन्नत अनुप्रयोग			5 अंक	15 कालखण्ड
ग : पोर्टफोलियो			**10 अंक**	**सभी वर्ष**

कक्षा 12 : ग्राफ़िक डिज़ाइन

क: सिद्धांत	पत्र एक	3 घंटे	70 अंक
अनुभाग क : रीडर पर आधारित प्रश्न			
अनुभाग ख : डिज़ाइन के अनुप्रयोगों पर आधारित प्रश्न			
इकाई 1 डिज़ाइन की प्रथाएं और प्रक्रियाएं			**15 अंक**
1.1 प्रथाओं में प्रचलित डिज़ाइन / समाज में डिज़ाइन की भूमिका क) डिज़ाइन के कार्य ख) ग्राफिक डिज़ाइन के निहितार्थ और प्रभाव ग) ग्राफिक डिज़ाइनर की भूमिका घ) भारत में समकालीन ग्राफिक डिज़ाइन			
1.2 डिज़ाइन की प्रक्रियाएं क) ग्राफिक डिज़ाइन की विधि			
इकाई 2 डिज़ाइन के सिद्धांत और तत्व			**30 अंक**
2.1 रेखाचित्रण और चित्रकारी क) परिचय : चित्रकारी : दृष्टव्य निरूपण में सहायक ख) चित्रकारी के गुण ग) चित्रकारी के प्रकार • देखकर / पर्यवेक्षण से चित्रकारी • याददाश्त और कल्पना से चित्रकारी • तकनीकी सूचना से चित्रकारी			
2.2 रंग क) रंगों के वैज्ञानिक सिद्धांत ख) कलाकार के सिद्धांत और रंग योजना ग) रंगों का मेलजोल घ) रंग और अभिव्यक्ति ड) रंग की प्रतीकात्मकता			

2.3 दृष्टव्य संयोजन / डिज़ाइन के सिद्धांतों की मूलभूत बातें	
क) परिचय ख) विभिन्न कला रूपों में संगठन ग) प्राथमिक घटक घ) दृष्टव्य संगठन के सिद्धांत	
2.4 टाइपोग्राफी क) टाइप फेस की बनावट ख) अभिव्यक्त टाइपोग्राफी ग) उन्नत अनुप्रयोग	
2.5 रूपरेखा डिज़ाइन के सिद्धांत क) विषय वस्तु और सामग्री ख) रूपरेखा के प्रकार ग) संघटन घ) रंगों की प्रतीकात्मकता ड) कॉपी तथा टाइप / टाइपोग्राफी	
इकाई - 3 मीडिया और डिज़ाइन	**25 अंक**
3.1 विज्ञापन की डिज़ाइन क) मीडिया का परिचय - इलेक्ट्रॉनिक और मुद्रण ख) अभियान की डिज़ाइन ग) समारोह, प्रचार और जन संपर्क	
3.2 डिजिटल इमेजिंग / पेंटिंग और मुद्रण क) डिजिटल चित्र बनाना ख) डिजिटल चित्रों का रूपांतरण ग) विभिन्न प्रकार के चित्रों का परिचय - संपादन सॉफ्टवेयर घ) पर्तों पर कार्य करना और इनके लाभ	

ड) चयन करने की उन्नत विधियां च) टेक्सचर का इस्तेमाल छ) छवि में पाठ डालना ज) डिजिटल मुद्रण और पारंपरिक मुद्रण के बीच अंतर झ) डिजिटल मुद्रण का अनुप्रयोग	
3.3 अंत:क्रियात्मक मीडिया के लिए ग्राफिक डिज़ाइन क) एक वेबसाइट को समझना ख) वेबसाइटों के प्रकार ग) वेब के लिए डिजाइनिंग घ) सूचना / सामग्री डिज़ाइन ड) एक वेबसाइट की योजना च) नेवीगेशन छ) अंत:क्रिया की सुविधा प्रदान करना ज) उपयोग के मुद्दे	
ख : प्रायोगिक परीक्षा 3 घंटे 1. विचारों और संकल्पनाओं को दर्शाने वाले दिए गए विषय पर एक कच्ची रूपरेखा तैयार करना। 2. वांछित सॉफ्टवेयर उपयोग करते हुए डिजिटल फॉर्मेट में उसी रूपरेखा का रूपांतरण	20 अंक 5 अंक 15 अंक
ग : पोर्टफोलियो क) इकाई 2 के प्रत्येक अध्याय के आधार पर एक कार्य ख) क्षेत्र दौरे की रिपोर्ट / प्रलेखन तथा वांछित सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए 5 अलग अलग विज्ञापन मीडिया में क्षेत्र अध्ययन पर विषय वस्तु आधारित डिज़ाइन का सृजन या ग) कम से कम 150 रेखा चित्रों की एक पूरी रेखाचित्र पुस्तिका	 10 अंक

परीक्षा की योजना

I सैद्धांतिक प्रश्न पत्र 3 घंटे 70 अंक

खण्ड क

1. **लघु प्रश्न-** 12 अंक

पाठ्यपुस्तक पर आधारित पाँच में से चार प्रश्न (80-100 शब्दों में)।

(तीन अंकों वाले चार प्रश्न (4X3)

2. **दीर्घ प्रश्न -** 15 अंक

पाठ्यपुस्तक पर आधारित चार में से तीन प्रश्न (100-120 शब्दों में)।

तीन अंकों वाले चार प्रश्न (3X5)

3. **परिभाषाएँ :** 05 अंक

पाठ्यपुस्तक पर आधारित छः में से पाँच परिभाषाएँ तीन से पाँच वाक्यों में दें। एक अंक की पाँच परिभाषाएँ (1X5)

4. **निबंध प्रकार के प्रश्न :** 08 अंक

पाठ्यपुस्तक पर आधारित दो में से एक निबंध प्रकार का प्रश्न (150-200 शब्दों में)

आठ अंक का निबंध के प्रकार का एक प्रश्न।

खंड ख **30 अंक**

5. दिए गए इनपुट के आधार पर एक डिज़ाइन पैटर्न के चित्रण पर पांच लघु प्रश्नों में से चार। 12 अंक

6. एक मोटिफ या पैटर्न की डिजाइनिंग पर तीन में से दो प्रश्न (5+5) 10 अंक

7. निम्नलिखित प्रकारों में से किसी एक पर डिजाइनिंग पर दो में से एक प्रश्न (विवरणिका / लोगो / लैटर हैड / पुस्तक आवरण / पोस्टर / वस्त्र के छापे / आभूषण) 08 अंक

II प्रायोगिक परीक्षा : 3 घंटे **20 अंक**

पाठ्यचर्या में निर्धारित पाठ्यक्रम

III **पोर्टफोलियो :** **10 अंक**

कम से कम 150 रेखाचित्रों वाली एक पुस्तिका 10 अंक

पोर्टफोलियो और परियोजना कार्य

1. पोर्टफोलियो

इकाई - 2 के प्रत्येक अध्याय पर आधारित एक कार्य

- चित्रकारी
- रंग
- डिज़ाइन के सिद्धांत
- टाइपोग्राफी
- रूपरेखा

2. परियोजना कार्य

(क) क्षेत्र अध्ययन और रिपोर्ट लेखन दस्तावेज : संग्रहालय भोजन, त्यौहार आदि।

(ख) डिजिटल कार्य : डिजाइनिंग सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हुए 5 अलग अलग विज्ञापन माध्यमों में क्षेत्र अध्ययन पर विषय वस्तु आधारित डिज़ाइन का सृजन।

3. **रेखा चित्रण :** विभिन्न चित्रकारी माध्यमों में लोगों, स्थान, वास्तुकला, वस्तुओं आदि के 150 रेखाचित्र

परियोजना कार्य :

कार्य अध्ययन : किसी जाने माने / महान डिज़ाइनर (राष्ट्रीय या अंतरराष्ट्रीय) के कार्यों का अध्ययन।

(विद्यार्थी अधिकांशत: अलग अलग अपने कार्य पूरे करेंगे परन्तु उन्हें स्थिति पैदा होने पर समस्या सुलझाने के लिए मिलकर कार्य का अवसर दिया जाएगा। यह अनिवार्य है कि विद्यार्थी को अपनी कक्षा के तय काल खण्डों के दौरान अपनी परियोजनाओं पर कार्य करना होगा। विद्यार्थी से उम्मीद है कि वे मध्यावधि या तिमाही के अंत तक अपने कार्यों की एक निश्चित संख्या पूरी करेंगे ताकि उन्हें ग्रेड / अंक दिए जा सके। विद्यार्थी का मूल्यांकन इसके आधार पर किया जाएगा कि वे रचनात्मकता, शुद्धता, निष्पादन आदि के मानदण्ड कितनी अच्छी तरह पूरे करते हैं।)

टिप्पणी :

वर्ष के दौरान चुने गए कार्य (न्यूनतम सं. 20) का पोर्टफोलियो वार्षिक रूप से जमा किया जाए। ये कार्य सामग्री की खोज और दृष्टव्य प्रभाव के संदर्भ में समृद्ध होने चाहिए।

विद्यार्थी एक ऐसा पोर्टफोलियो विकसित करेंगे जो कलात्मक दृष्टिकोण, अभिव्यक्ति, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समझ, सौंदर्य बोध के मूल्यांकन के मध्यम से उन्नत स्तर वाला होगा और वे अनेक कला संबंधी कैरियर के साथ अपनी कलात्मक कुशलताओं को जोड़ने की क्षमता विकसित करेंगे तथा समस्या को सुलझाने, संचार, समय प्रबंधन और संसाधनों में दक्षताओं का विकास कर सकेंगे। छात्रों से उम्मीद है कि वे शैक्षिक कार्य के अंत में स्वीकार्य कार्य जमा कर सकेंगे। यदि कार्य को स्वीकार करने योग्य नहीं पाया जाता है उसे छात्रों से पूरा करने के लिए कहा जाएगा और दोबारा कार्य जमा कराया जाएगा।

बोर्ड के प्रकाशनों के लिए

बोर्ड द्वारा प्रकाशित की गई पाठ्य पुस्तकों तथा अन्य प्रकाशनों के लिए ऑर्डर निम्नलिखित कार्यालयों में से किसी भी कार्यालय को दिया जा सकता है:

1. मुख्य सहायक (प्रकाशन स्टोर)

   केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,

   पी.एस-1-2, इंस्टीट्यूशनल एरिया.

   पटपड़गंज, दिल्ली-110092

2. क्षेत्रीय अधिकारी,

   केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,

   प्लॉट नं. 1630 ए. 16 मैन रोड़,

   अन्ना नगर, (पश्चिम) चैन्नई-600040

3. क्षेत्रीय अधिकारी,

   केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,

   राजगढ़ तिनाली,

   गुवाहाटी-781003

4. क्षेत्रीय अधिकारी,

   केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,

   टोडरमल मार्ग,

   अजमेर (राजस्थान)-305001

5. क्षेत्रीय अधिकारी,

   केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,

   35-बी, सिविल स्टेशन, एम.जी.मार्ग,

   सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-211001 (उत्तरप्रदेश)

6. क्षेत्रीय अधिकारी,

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,

सेक्टर 5,

पंचकुला।

7. क्षेत्रीय अधिकारी,

अष्टम तल,

बी.एस.एफ.सी. बिल्डिंग

फ्रेज़र मार्ग,

पटना

8. क्षेत्रीय अधिकारी,

छठा तल,

आलोक भारती कॉम्प्लेक्स,

शहीद नगर,

भुवनेश्वर - 751007

अदायगी की पद्धतिः

(i) अदायगियां तत्काल खरीद के लिए या तो नकदी रूप में अथवा सचिव, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, दिल्ली के नाम से बैंक ड्राट/मनीआर्डर के जरिए स्वीकार की जाती हैं। इन्हें ऑर्डर के साथ केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के कार्यालय को भेजा जाना होता है।

(ii) डाक खर्च प्रत्येक प्रकाशन में उल्लेख किए गए मूल्य से अलग होगा।

(iii) पैकिंग प्रभार तीन प्रतिशत की दर से अलग से होगी।

छूट : प्रत्येक प्रकाशन की 10 प्रतियों या इससे अधिक प्रतियों के लिए 15: की दर छूट अनुज्ञेय है। कम प्रतियों के लिए कोई छूट नहीं हैं।